संयुक्त मोर्चा

ज्यॉर्जी दिमित्रोव

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
नयी दिल्ली अहमदाबाद बम्बई

प्रकाशक का वक्तव्य

हमें इस पुस्तक को प्रकाशित करने में बड़ा हर्ष हो रहा है। इसमें संयुक्त मोर्चा कार्यनीति के संबंध में तीन महत्वपूर्ण लेख संग्रहीत है। पहला, ज्यॉर्जी दिमित्रोव द्वारा २ अगस्त १९३५ को कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवी विश्व कांग्रेस में प्रस्तुत रिपोर्ट है। दूसरा, १३ अगस्त १९३५ को सातवी विश्व कांग्रेस में ज्यॉर्जी दिमित्रोव का समापन भाषण है। तीसरा, २० अगस्त १९३५ को ज्यॉर्जी दिमित्रोव की रिपोर्ट पर सातवी विश्व कांग्रेस द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव है।

सूची

फासिस्ट हमला और फासिज्म के विरुद्ध मजदूर वर्ग के संघर्ष में कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के कर्तव्य

२ अगस्त १९३५ को कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं विश्व कांग्रेस में पेश की गयी रिपोर्ट

१. फासिज्म और मजदूर वर्ग

साथियो, कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की छठी कांग्रेस ने ही विश्व सर्वहारा को यह चेतावनी दी थी कि एक नया फासिस्ट हमला होने वाला है, और उसने उसके खिलाफ संघर्ष करने का आह्वान किया था। कांग्रेस ने लक्षित किया था कि "कमोबेश विकसित रूप में फासिस्ट प्रवृत्तियां और फासिस्ट आन्दोलन के कीटाणु हर कहीं पाये जाते हैं।"

अत्यंत गंभीर आर्थिक संकट के पैदा होने के साथ, पूंजीवाद के आम संकट के अत्यंत उग्र हो जाने और मेहनतकश जनता के व्यापक हिस्सों में क्रान्तिकारी चेतना का संचार होने के साथ, फासिज्म ने व्यापक हमला शुरू कर दिया है। शासक पूंजीपति वर्ग मेहनतकशों के खिलाफ लूट-खसोट के असाधारण कदम उठाने, लूट-पाट के साम्राज्यवादी युद्ध की तैयारी करने, सोवियत संघ पर हमला करने, चीन को गुलाम बनाने और उसका बंटवारा करने, तथा इन सारे तरीकों से क्रान्ति को रोकने के उद्देश्य से फासिज्म में अपना मोक्ष ढूंढने का अधिकाधिक प्रयास कर रहा है।

साम्राज्यवादी हलके संकट का सारा बोझ मेहनतकशों के कंधों पर डाल देने की कोशिश कर रहे हैं। इसी कारण उन्हें फासिज्म की जरूरत है।

वे कमजोर राष्ट्रों को गुलाम बना कर, औपनिवेशिक उत्पीड़न उग्र करके तथा युद्ध के जरिये विश्व का दुबारा नये सिरे से बंटवारा करके मंडियों की समस्या हल करने की कोशिश कर रहे हैं। इसी कारण उन्हें फासिज्म की जरूरत है।

वे मजदूरों और किसानों के क्रान्तिकारी आन्दोलन को ध्वस्त करके तथा विश्व सर्वहारा की रक्षापंक्ति—सोवियत संघ—पर सैनिक आक्रमण करके

क्रान्ति की शक्तियों के बढ़ाव को आगे बढ़ कर रोकने की कोशिश कर रहे हैं। इसी कारण उन्हें फासिज्म की जरूरत है।

अनेक देशों में, खास तौर पर जर्मनी में, इसके पहले कि आम जनता क्रान्ति की ओर निर्णायक रूप में मुड़ सके, इन साम्राज्यवादी हलकों ने सर्वहारा को पराजित करने तथा फासिस्ट तानाशाही की स्थापना करने में सफलता पा ली है।

किन्तु फासिज्म की विजय की यह विशेषता है कि यह विजय एक ओर सामाजिक-जनवाद की फूटपरस्त नीति के कारण, पूंजीपति वर्ग के साथ उसके वर्ग सहयोग के कारण, असंगठित और पंगु सर्वहारा की कमजोरी की सूचक है तथा दूसरी ओर मजदूर वर्ग के संयुक्त संघर्ष की कल्पना से भयभीत, क्रान्ति से भयभीत, उस पूंजीपति वर्ग की कमजोरी की भी द्योतक है जो अब पूंजीवादी जनवाद और संसदवाद के पुराने तरीकों से आम जनता पर अपनी तानाशाही बरकरार रखने की स्थिति में नहीं रह गया है।

सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की १७वीं कांग्रेस में कामरेड स्तालिन ने कहा था :

जर्मनी में फासिज्म की विजय को "...मजदूर वर्ग की कमजोरी के लक्षण और उस सामाजिक-जनवाद द्वारा मजदूर वर्ग के साथ की गयी गद्दारी के नतीजे के रूप में ही नहीं देखा जाना चाहिए जिसने फासिज्म का रास्ता साफ किया; उसे पूंजीपति वर्ग की कमजोरी के लक्षण, इस तथ्य के लक्षण के रूप में भी देखा जाना चाहिए कि पूंजीपति वर्ग पहले ही संसदवाद और पूंजीवादी-जनवाद के पुराने तरीकों से शासन करने में असमर्थ हो चुका है, और फलतः वह अपनी घरेलू नीति में प्रशासन के आतंकवादी तरीकों का सहारा लेने को मजबूर हो गया है—इसे इस तथ्य के लक्षण के रूप में देखा जाना चाहिए कि वह शांतिपूर्ण विदेश नीति के आधार पर मौजूदा स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता खोज पाने में असमर्थ हो गया है, और इसके परिणामस्वरूप वह युद्ध की नीति का सहारा लेने को मजबूर हो गया है।"[१]

फासिज्म का वर्ग चरित्र

साथियो, कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की कार्यकारिणी समिति के तेरहवें पूर्णाधिवेशन में सत्तारूढ़ फासिज्म का यह ठीक ही वर्णन किया गया था कि वह वित्त पूंजी के सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी, सबसे अधिक अंधराष्ट्रवादी और सबसे अधिक साम्राज्यवादी तत्वों की एक खुली आतंकवादी तानाशाही है।

१. सोशलिज्म विक्टोरियस, पृ. ११-१२.

फासिज्म का सबसे अधिक प्रतिक्रियावादी रूप जर्मन किस्म का फासिज्म है। यह स्वयं को राष्ट्रीय-समाजवाद पुकारने की जुर्रत करता है, हालांकि समाजवाद के साथ इसकी कोई समानता नहीं। जर्मन फासिज्म न सिर्फ पूंजीवादी राष्ट्रवाद है, बल्कि दानवी अंधराष्ट्रवाद है। यह राजनीतिक लुटेरेपन की एक शासन पद्धति है, मजदूर वर्ग तथा किसानों, निम्न-पूंजीपतियों और बुद्धिजीवियों के क्रान्तिकारी तत्वों के खिलाफ व्यवहार में लायी जाने वाली उत्तेजनात्मक कार्रवाइयों और यातना की पद्धति है। यह मध्य युगीन बर्बरता और पशुता है, यह अन्य राष्ट्रों के मामले में निरंकुश आक्रमण है।

जर्मन फासिज्म अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रान्ति के अगुवा के रूप में, साम्राज्यवादी युद्ध को मुख्य उकसावा देने वाले के रूप में, पूरी दुनिया के मेहनतकशों की महान पितृभूमि, सोवियत संघ के खिलाफ जेहाद को पहल करने वाले के रूप में, काम कर रहा है।

फासिज्म राज्य सत्ता का ऐसा रूप नहीं है जो "सर्वहारा वर्ग और पूंजीपति वर्ग—दोनों वर्गों से ऊपर खड़ा हो," जैसा कि, मसलन ऑटो बॉयर ने दावा किया है। न ही यह "उस निम्न-पूंजीपति वर्ग की बगावत है जिसने राज्य तंत्र पर कब्जा कर लिया है," जैसा कि ब्रिटिश सोशलिस्ट ब्रेल्सफोर्ड घोषित करते हैं। नहीं, फासिज्म ऐसी सत्ता नहीं जो कि वर्ग से ऊपर हो, न ही वित्त पूंजी पर निम्न-पूंजीपति वर्ग या लुम्पन-सर्वहारा की सत्ता है। फासिज्म स्वयं वित्त पूंजी की ही सत्ता है। यह मजदूर वर्ग तथा किसानों और बुद्धिजीवियों के क्रान्तिकारी हिस्से के खिलाफ आतंकवादी प्रतिशोध का संगठन है। विदेश नीति में फासिज्म धक्केशाही का सबसे पाशविक रूप है, जो अन्य राष्ट्रों के प्रति जघन्य घृणा फैलाता है।

इस पर, फासिज्म के सही चरित्र पर, खास तौर पर जोर दिया जाना चाहिए क्योंकि अनेक देशों में, सामाजिक लफ्फाजी के आवरण में, फासिज्म ने आम निम्न-पूंजीपति वर्ग को, जो संकट के कारण अस्तव्यस्त हो गया है, तथा सर्वहारा के भी सबसे पिछड़े हिस्से के कुछ तबकों को, अपना अनुयायी बनाने में सफलता प्राप्त कर ली है। अगर इन सब ने फासिज्म के असली वर्ग चरित्र को और उसके वास्तविक स्वरूप को समझ लिया होता तो उसका कभी समर्थन नहीं करते।

फासिज्म का विकास तथा स्वयं फासिस्ट तानाशाही हर देश विशेष की ऐतिहासिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों और राष्ट्रीय विलक्षणताओं तथा उसकी अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के अनुसार विभिन्न देशों में अलग-अलग रूप धारण करती है। कुछ देशों में, खास तौर पर उनमें जहां फासिज्म के पास व्यापक जन-आधार नहीं है तथा जहां स्वयं फासिस्ट पूंजीपति वर्ग के खेमे के भीतर

विभिन्न समूहों के बीच संघर्ष अधिक उग्र है, फासिज्म फौरन संसद को समाप्त करने का साहस नहीं करता, बल्कि अन्य पूंजीवादी पार्टियों, साथ ही सामाजिक-जनवादी पार्टियों को किंचित वैधता बनाये रखने देता है। अन्य देशों में, जहां शासक पूंजीपति वर्ग को शीघ्र ही क्रान्ति का विस्फोट हो जाने का डर रहता है, फासिज्म या तो फौरन ही या सारी प्रतिद्वंद्वी पार्टियों और समूहों के खिलाफ आतंकशाही और उनका उत्पीड़न तेज करके अपना निरंकुश राजनीतिक एकाधिकार कायम कर लेता है। जब फासिज्म की स्थिति खास तौर पर संगीन होती है, तो अपना आधार विस्तृत करने की कोशिश में, और अपने वर्ग चरित्र को बदले बगैर संसदवाद के भोंड़े दिखावे के साथ खुली आतंकवादी तानाशाही को संयुक्त करने में, यह चीज फासिज्म के आड़े नहीं आती।

फासिज्म का सत्ता में आना एक पूंजीवादी सरकार से दूसरी सरकार का साधारण उत्तराधिकार नहीं, बल्कि पूंजीपति वर्ग के वर्ग प्रभुत्व के एक राजकीय रूप—पूंजीवादी जनवाद—के स्थान पर एक अन्य रूप—खुली आतंकवादी तानाशाही—की स्थापना है। इस अन्तर को नजरअंदाज कर देना बहुत बड़ी गलती होगी, ऐसी गलती जो फासिस्टों द्वारा सत्ता के अपहरण के खतरे के खिलाफ संघर्ष के लिए क्रान्तिकारी सर्वहारा द्वारा नगरों और ग्रामों के मेहनतकशों के व्यापकतम हिस्सों के लामबद किये जाने तथा स्वयं पूंजीपति वर्ग के खेमे में मौजूद अंतर्विरोधों से लाभ उठाये जाने के काम में बाधक बन सकती है। लेकिन फासिस्ट तानाशाही की स्थापना के लिए, पूंजीवादी-जनवादी देशों में इस समय पूंजीपति वर्ग जो अधिकाधिक प्रतिक्रियावादी कदम उठा रहे हैं, उनके महत्व को कम करके आंकना भी उतनी ही गंभीर और खतरनाक गलती होगी। ये ऐसे कदम होते हैं जो मेहनतकश जनता की जनवादी आजादियों का दमन करते हैं, संसद के अधिकारों को झुठलाते और उनमें कटौती करते है तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन के दमन को तीव्र बनाते हैं।

साथियो, फासिज्म के सत्ता में आने की कल्पना ऐसे सरलीकृत और निर्विघ्न रूप में नहीं की जानी चाहिए मानो वित्त पूंजी की किसी एक समिति ने एक खास तारीख को फासिस्ट तानाशाही कायम करने का फैसला कर लिया हो। हकीकत में फासिज्म आम तौर पर पुरानी पूंजीवादी पार्टियों के, या उनके किसी एक निश्चित तबके के, खिलाफ आपसी और कभी-कभी घनघोर संघर्ष के दौरान, स्वयं फासिस्ट खेमे के भीतर के भी संघर्ष के दौरान, सत्ता में आता है—ऐसा संघर्ष जिसके फलस्वरूप कभी-कभी सशस्त्र मुठभेड़ों की भी नौबत आ जाती है, जैसा कि हमने जर्मनी, ऑस्ट्रिया और अन्य देशों के मामले में देखा है। बहरहाल, इस सबके कारण इस तथ्य का महत्व नहीं कम होता:

कि फासिस्ट तानाशाही की स्थापना के पहले पूंजीवादी सरकारें आम तौर पर अनेक आरंभिक दौरों से होकर गुजरती हैं और अनेक ऐसे प्रतिक्रियावादी कदम उठाती हैं, जो फासिज्म के सत्तारूढ़ होने में प्रत्यक्षतः आसानी पैदा करते हैं। इन आरंभिक दौरों में जो कोई पूंजीपति वर्ग के इन प्रतिक्रियावादी कदमों और फासिज्म की वृद्धि से नहीं जूझता, वह फासिज्म की विजय को रोकने की स्थिति में नहीं होता बल्कि उल्टे उस विजय को सुगम बनाता है।

सामाजिक-जनवादी नेताओं ने फासिज्म के असली वर्ग स्वरूप से चश्म-पोशी की और उसे आम जनता से छिपाया तथा पूंजीपति वर्ग के अधिकाधिक प्रतिक्रियावादी कदमों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए उसका अह्वान नहीं किया। उन पर इस बात की भारी ऐतिहासिक जिम्मेदारी है कि फासिस्ट हमले के एक फैसलाकुन क्षण में जर्मनी और अन्य अनेक फासिस्ट देशों के मेहनतकशों का एक बड़ा हिस्सा फासिज्म में छिपे अपने सबसे दुष्ट शत्रु—खून के प्यासे, महालोलुप वित्त पूंजी—को पहचान पाने में असमर्थ रहा तथा ये जन समूह उसका प्रतिरोध करने के लिए तैयार नहीं थे।

आम जनता पर फासिज्म के असर का स्रोत क्या है? फासिज्म आम जनता को आकृष्ट करने में इसलिए सफल होता है, क्योंकि वह उनकी सबसे फौरी जरूरतों और मांगों को लफ्फाजी के साथ पेश करता है। फासिज्म न सिर्फ आम जनता में गहरे पैठे हुए पूर्वग्रहों को प्रज्वलित करता है, बल्कि आम जनता की उदात्त भावनाओं को, उनके न्याय-बोध को, और कभी-कभी तो उनकी क्रान्तिकारी परम्पराओं को भी, उकसाता है। जर्मन फासिस्ट—बड़े पूंजीपतियों के वे पिट्ठू और समाजवाद के जानी दुश्मन—स्वयं को जनता के सामने "समाजवादियों" के रूप में क्यों पेश करते हैं, और अपने सत्तारूढ़ होने का वर्णन "क्रान्ति" के रूप में क्यों करते हैं? इसका कारण यह है कि जर्मनी की मेहनतकश जनता के हृदयों में क्रान्ति के प्रति जो आस्था तथा समाजवाद की जो चाह है, वे उसका इस्तेमाल करने की कोशिश करते हैं।

फासिज्म चरम साम्राज्यवादियों के हितों में काम करता है, मगर वह जनता के सन्मुख स्वयं को अन्याय के शिकार राष्ट्र के हित-रक्षक के बाने में पेश करता है तथा आहत राष्ट्रीय भावनाओं को सहलाता है जैसा कि, मसलन, जर्मन फासिज्म ने उस समय किया जब उसने "वार्साई संधि मुर्दाबाद" के नारे से आम निम्न-पूंजीपतियों का समर्थन प्राप्त किया।

फासिज्म का लक्ष्य होता है आम जनता का अधिक से अधिक निरंकुश शोषण करना, मगर वह अधिक से अधिक धूर्तता भरी पूंजीवाद-विरोधी लफ्फाजी के साथ उनके पास जाता है तथा इसमें वह लुटेरे पूंजीपति वर्ग, बैंकों, ट्रस्टों और वित्तीय कुबेरों के प्रति मेहनतकशों की गहरी नफरत से फायदा

उठाता है और ऐसे नारे बुलन्द करता है जो राजनीतिक दृष्टि से अपरिपक्व जनता के लिए फिलहाल सबसे मोहक होते हैं। जर्मनी में—"जन कल्याण व्यक्ति के कल्याण से बढ़ कर है", इटली में—"हमारा राज्य पूंजीवादी नही बल्कि एक निगमित (कारपोरेट) राज्य है," जापान में—"शोषण-विहीन जापान के लिए," संयुक्त राज्य अमरीका में—"दौलत का बंटवारा करो," आदि नारे इसकी मिसालें हैं।

फासिज्म जनता को सबसे भ्रष्ट और अर्थलोलुप तत्वों की मर्जी के हवाले करता है, मगर उनके सामने ऐसी सरकार की मांग लेकर आता है जो "ईमानदार और कभी भ्रष्ट न होने वाली सरकार" हो। पूंजीवादी-जनवादी सरकारों के प्रति जनता के तमाम भ्रमों के टूटने का लाभ उठाता हुआ फासिज्म मक्कारी के साथ भ्रष्टाचार (मसलन, जर्मनी में बार्मट और स्क्लारेक के मामले, फ्रांस में स्ताविस्की का मामला, और दूसरे बहुत से मामलों) की भर्त्सना करता है।

यह पूंजीपति वर्ग के सबसे प्रतिक्रियावादी हलकों के हितों में ही होता है कि फासिज्म उस हताश आम जनता को बीच में ही रोक लेता है जो पुरानी पूंजीवादी पार्टियों को छोड़ चलती है। परन्तु वह इस आम जनता को पूंजीवादी सरकारों पर अपने जबर्दस्त हमलों तथा पुरानी पूंजीवादी पार्टियों के विरुद्ध अपने अत्यन्त कट्टर रुख के जरिये प्रभावित करता है।

अपने नकचढ़ेपन और ढोंग के मामले में पूजीवादी प्रतिक्रियावाद की दूसरी तमाम किस्मों को मात देते हुए फासिज्म हर देश की राष्ट्रीय विलक्षणताओं के अनुरूप तथा एक ही देश के विभिन्न सामाजिक स्तरों की भी विलक्षणताओं के अनुरूप अपनी लफ्फाजी को ढाल लेता है। और, निम्न-पूंजीपति वर्ग के व्यापक हिस्से और मजदूरों का भी एक तबका, जो अभाव, बेरोजगारी और अपने अस्तित्व की असुरक्षा के कारण हताश हो चुका होता है, फासिज्म की सामाजिक और अंधराष्ट्रवादी लफ्फाजी का शिकार बन जाते हैं।

फासिज्म सर्वहारा के क्रान्तिकारी आन्दोलन पर, उस जन समूह पर जो विक्षोभ की अवस्था में हो, हमला करने वाली पार्टी के रूप में सत्ता में आता है; फिर भी वह "पूरे राष्ट्र" की ओर से तथा राष्ट्र के "मोक्ष" के लिए पूंजीपति वर्ग के खिलाफ "क्रान्तिकारी" आन्दोलन के रूप में सत्ता पर कब्जा करता है। रोम की तरफ मुसोलिनी की "कूच", वारसा की तरफ पिलसुदस्की की "कूच", जर्मनी में हिटलर की राष्ट्रीय-समाजवादी "क्रान्ति", आदि स्मरणीय है।

किन्तु फासिज्म जो भी नकाब ओढ़े, चाहे जिस रूप में स्वय को प्रस्तुत करे, चाहे जिन तरीकों से सत्ता में आये—

फासिज्म मेहनतकश जनता के विशाल समुदाय पर पूंजी का सबसे खूंखार हमला है;

फासिज्म निरंकुश अंधराष्ट्रवाद और दस्युतापूर्ण युद्ध है;

फासिज्म घोर प्रतिक्रियावाद और प्रतिक्रान्ति है;

फासिज्म मजदूर वर्ग का तथा तमाम मेहनतकशों का सबसे क्रूर शत्रु है।

फासिस्ट विजय आम जनता के लिए क्या लाती है ?

फासिज्म ने मजदूरों को "उचित वेतन" का वचन दिया था, किन्तु वस्तुतः वह उनके लिए और भी निम्नतर मुफलिसी का जीवन स्तर लाया। उसने बेरोजगारों के लिए रोजगार का वचन दिया था, किन्तु वस्तुतः वह उनके लिए भुखमरी और गुलामी भरी बेगार की और भी कष्टकर यन्त्रणाएं लाया है। व्यवहार में वह मजदूरों और बेरोजगारों को पूंजीवादी समाज के अधिकार-विहीन अछूतों में बदल देता है, उनकी ट्रेड यूनियनों को नष्ट कर देता है, हड़ताल करने और मजदूर वर्ग का अपना समाचारपत्र निकालने के अधिकार से उन्हें वंचित कर देता है, उन्हें जबर्दस्ती फासिस्ट संगठनों में डाल देता है, उनके सामाजिक बीमा कोषों को लूटता है तथा मिलों और कारखानों को ऐसी बैरकों में बदल देता है जहां पूंजीपतियों के निरंकुश स्वेच्छाचारी शासन का बोलबाला होता है।

फासिज्म ने मेहनतकश नौजवानों को उज्ज्वल भविष्य के प्रशस्त राजपथ का वचन दिया था। किन्तु वस्तुतः वह अपने साथ नौजवान मजदूरों की बड़े पैमाने पर बर्खास्तगियां, श्रम-शिविर तथा दस्युतापूर्ण युद्ध के लिए अटूट फौजी कवायद लाया है।

फासिज्म ने दफ्तर कर्मचारियों, छोटे अफसरों और बुद्धिजीवियों के लिए अस्तित्व की सुरक्षा की गारंटी करने, ट्रस्टों की सर्वशक्तिमत्ता समाप्त करने तथा बैंक पूंजी द्वारा की जाने वाली मुनाफाखोरी बंद करने का वचन दिया था। किन्तु वस्तुतः वह उनके लिए कल के बारे में और अधिक निराशा और अनिश्चितता लाया है; वह उन्हें अपने सबसे चापलूस अनुयायियों से बनी एक नयी नौकरशाही की मातहती में डाल रहा है, वह ट्रस्टों की एक असह्य तानाशाही कायम कर रहा है तथा अभूतपूर्व सीमा तक भ्रष्टाचार और अधःपतन फैला रहा है।

फासिज्म ने तबाह और कंगाल किसानों को कर्ज गुलामी खत्म कर देने, लगान समाप्त कर देने तथा भूमिहीन और तबाह किसानों के हित में बिना मुआवजा जागीरें तक जब्त कर लेने का वचन दिया था। किन्तु वस्तुतः वह मेहनतकश किसानों को ट्रस्टों और फासिस्ट राज्य यंत्र की अभूतपूर्व गुलामी

की अवस्था में डाल रहा है तथा बड़े भूस्वामियों, बैंकों और सूदखोरों द्वारा किसानों के अपार समुदाय के शोषण को चरम सीमा तक पहुंचा रहा है।

"जर्मनी या तो एक कृषक देश होगा या होगा ही नहीं," हिटलर ने बड़ी गम्भीरता से घोषणा की थी। और हिटलर के अधीन जर्मनी के किसानों को क्या मिला ? कर्ज चुकता करने में मोहलत, जो अभी ही मंसूख की जा चुकी है ? या कृषक सम्पत्ति के उत्तराधिकार संबंधी कानून, जिसके चलते किसानों के लाखों बेटे-बेटियां गांवों को त्याग देने पर मजबूर हो रहे हैं और कंगाल बनते जा रहे हैं ? खेतिहर मजदूर अर्धगुलाम बना दिये गये हैं; आजादी से इधर-उधर घूमने के प्राथमिक अधिकार से भी वे वंचित कर दिये गये हैं। मेहनतकश किसान बाजार में अपने खेतों की पैदावार को बेचने के अवसर से भी वंचित कर दिये गये हैं।

और पोलैंड में ?

पोलिश अखबार जास कहता है : "पोलैंड के किसान ऐसे तौर-तरीकों और साधनों का इस्तेमाल करता है जो शायद सिर्फ मध्य युग में ही इस्तेमाल किये जाते थे; वह अपने चूल्हे में आग बचा कर रखता है और अपने पड़ोसियों को उसे उधार के बतौर देता है; वह माचिस की तीलियों को कई हिस्सों में तोड़ कर रखता है; साबुन का गंदा पानी दूसरों को उधार के बतौर देता है; नमकीन पानी प्राप्त करने के लिए वह उन पीपों को उबालता है जिनमें हेरिंग मछलियां रखी जाती हैं। यह कोई दंतकथा नहीं, बल्कि ग्रामांचल की यथार्थ हालत है, जिसकी सचाई की कोई भी जांच कर सकता है।"

और साथियो, यह कोई कम्युनिस्ट नहीं बल्कि पोलैंड का एक प्रतिक्रियावादी अखबार लिख रहा है।

मगर बात सिर्फ इतनी ही नहीं है।

हर रोज फासिस्ट जर्मनी के यातना शिविरों में, गेस्टापो (जर्मन खुफिया पुलिस) के तहखानों में, पोलैंड के यंत्रणा कक्षों में, बुलगारिया और फिनलैंड की खुफिया पुलिस की काल कोठरियों में, बेलग्राद के "ग्लावन्याचा" में, रूमानिया के "सिगुरांजा" में और इटली के द्वीपों पर मजदूर वर्ग के सबसे अच्छे सपूत, क्रान्तिकारी किसान, मानव जाति के उज्ज्वल भविष्य के लिए लड़ने वाले योद्धा ऐसी वीभत्स यंत्रणाओं और अपमान के शिकार बनाये जा रहे हैं कि जिनके सामने जारशाही ओख्रांका की जघन्यतम करतूतें भी फीकी पड़ जाती हैं। लुच्चे जर्मन फासिस्ट पतियों को उनकी पत्नियों के सामने पीटते-पीटते लहू-लुहान कर देते हैं और कत्ल कर दिये गये बेटों की भस्मी उनकी माताओं को भेजते हैं। नसबंदी को राजनीतिक युद्ध का एक तरीका बना लिया गया है। यंत्रणा कक्षों में कैद फासिस्ट-विरोधियों को जहर के इंजेक्शन लगाये

जाते हैं, उनकी बांहें तोड़ दी जाती हैं, उनकी आंखें निकाल ली जाती है; उन्हें बांध कर टांग दिया जाता है और उनके भीतर पानी भरा जाता है; उनके जिंदा मांस पर फासिस्ट स्वस्तिक चिह्न खोद दिया जाता है।

जर्मनी, पोलैंड, इटली, ऑस्ट्रिया, बुलगारिया और यूगोस्लाविया में जितने लोगों को मारा गया, घायल किया गया, गिरफ्तार किया गया, अंग-भंग किया गया और यंत्रणा दे-दे कर मार डाला गया, उनके संबंध में मेरे सामने क्रान्तिकारी योद्धाओं को सहायता देने वाले अन्तर्राष्ट्रीय संगठन 'इन्टरनेशनल रेड एड' द्वारा तैयार किये गये आकड़ों का सारांश मौजूद है। अकेले जर्मनी में ही, राष्ट्रीय-साम्राज्यवादियों के सत्ता में आने के बाद से, ४,२०० से अधिक फासिस्ट-विरोधी मजदूरों, किसानों, कर्मचारियों, बुद्धिजीवियों—कम्युनिस्टों, सामाजिक-जनवादियों और प्रतिपक्षी ईसाई संगठनों के सदस्यों—की हत्या की जा चुकी है, ३,१७,८०० की गिरफ्तारी की जा चुकी है, २,१८,६०० को आहत किया जा चुका और यंत्रणाएं दी जा चुकी है। ऑस्ट्रिया में, पिछले साल की फरवरी की लड़ाई के बाद से "क्रिश्चियन" फासिस्ट सरकार १,६०० क्रान्तिकारी मजदूरों की हत्या कर चुकी, १०,००० को अंग-भंग और आहत कर चुकी और ४०,००० को गिरफ्तार कर चुकी है। और, साथियो, यह साराश भी पूर्ण नहीं है।

इस समय कई फासिस्ट देशों में मेहनतकश लोगों को जिन यातनाओं से गुजरना पड़ रहा है, उनके बारे में सोच कर ही हममें जो आक्रोश पैदा होता है उसका वर्णन मैं शब्दों में नहीं कर सकता। हम जिन तथ्यों और आंकड़ों को उद्धृत कर रहे हैं वे श्वेत आतंक द्वारा किये जा रहे उस शोषण और दी जा रही उन यंत्रणाओं की सही तस्वीर के शतांश को भी प्रतिबिंबित नहीं करते जो कि अनेक पूंजीवादी देशों में मजदूर वर्ग की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गयी हैं। फासिज्म ने मेहनतकश जनता के साथ जो असंख्य नृशंसताएं की हैं, उनकी सच्ची तस्वीर कई-कई ग्रंथों में भी नहीं दी जा सकती।

फासिस्ट कसाइयों के प्रति गहरे क्षोभ और नफरत की भावना के साथ हम जर्मनी के जॉन शीअर, फिएट शुल्ज और लुटगेन्स, ऑस्ट्रिया के कोलोमन वालिश और मुनिखराइटर, हंगेरी के सल्लाइ और फुर्स्ट, बुलगारिया के कोफार्द्जिएव, ल्युतिब्रोद्स्की और वोयकोव की अविस्मरणीय याद में—उन हजारों-हजार कम्युनिस्टों, सामाजिक-जनवादियों, गैर-पार्टी मजदूरों, किसानों तथा प्रगतिशील बुद्धिजीवी वर्ग के प्रतिनिधियों की स्मृति में जिन्होंने फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में अपने प्राणों की आहुति दी है कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल का झंडा झुकाते हैं।

इस मंच से हम जर्मन सर्वहारा के नेता और हमारी कांग्रेस के मानसेवी

अध्यक्ष—कामरेड थेलमान का अभिनन्दन करते हैं। हम कामरेड राकोसी, कामरेड ग्रामस्ची, कामरेड आंतिकाइनेन का अभिनंदन करते हैं। हम स्पेनी समाजवादियों के नेता काबाल्लेरो का जिन्हें प्रतिक्रांतिकारियों ने कैद कर लिया है, टॉम मूनी का जो अठारह वर्षों से जेल में पड़े हैं, तथा पूंजीवाद और फासिज्म के हजारों दूसरे बंदियों का अभिनंदन करते हैं तथा उनसे कहते हैं : "सहयोद्धा बंधुओ, सहसैनिक बंधुओ, हम आपको भूले नहीं हैं। हम आपके साथ हैं। हम फासिज्म की शर्मनाक हुकूमत से आपको मुक्त कराने के लिए, सारे मेहनतकशों को मुक्त कराने के लिए, अपनी जिंदगियों का एक-एक लमहा, अपने खून का एक-एक कतरा, दे डालेंगे।"

साथियो, लेनिन ने हमें यह चेतावनी दी थी कि पूंजीपति वर्ग अपने बर्बर आतंक के जरिये मेहनतकशों पर हावी होने में, क्रान्ति की बढ़ती हुई शक्तियों को रोकने में थोड़े समय के लिए कामयाब हो सकता है, किन्तु फिर भी यह उसे उसके सर्वनाश से नहीं बचा सकेगा।

लेनिन ने लिखा था : "जीवन विजयी होकर रहेगा। पूंजीपति वर्ग को अनाप-शनाप बकने दो, धीरे-धीरे उत्तेजित होकर पागलपन की हद तक पहुंचने दो, हद से गुजरने दो, बेहूदगियां करने दो, पहले से ही बोल्शेविकों से बदला लेने दो और (भारत, हंगेरी, जर्मनी वगैरा में) पिछले कल के और अगले कल के सैकड़ों, हजारों और लाखों बोल्शेविकों का सफाया करने की कोशिश करने दो। ऐसा करके पूंजीपति वर्ग ठीक वैसी ही कारगुजारियां करता है जैसी उन वर्गों ने की हैं, जिन्हें इतिहास विनाश के हवाले कर देता रहा है। कम्युनिस्टों को यह मालूम होना चाहिए कि भविष्य, हर हालत में, उनका होता है; इसलिए हम महान क्रान्तिकारी संघर्ष के प्रति उत्कटतम भावावेश का तथा पूंजीपति वर्ग के पागलपन से भरे प्रलापों के ठंडे से ठंडे दिमाग से किये गये और निहायत संजीदा मूल्यांकन का समन्वय कर सकते हैं और हमें अवश्य करना चाहिए।"

जी हां, अगर हम और पूरी दुनिया के सर्वहारा लेनिन और स्तालिन द्वारा बताये गये रास्ते पर चलें तो पूंजीपति वर्ग अपनी सारी कोशिशों के बावजूद मिट कर रहेगा।

क्या फासिज्म की विजय अवश्यंभावी है ?

फासिज्म क्यों विजय प्राप्त कर सका, और कैसे ?

फासिज्म मजदूर वर्ग और मेहनतकशों का सबसे खतरनाक दुश्मन है। फासिज्म जर्मन जनता के दस में से नौ हिस्सों का, ऑस्ट्रियाई जनता के दस में से नौ हिस्सों का, फासिस्ट देशों में अन्य लोगों के दस में से नौ हिस्सों का दुश्मन है। कैसे, किस तरह, यह खतरनाक दुश्मन विजय प्राप्त कर सका ?

फासिज्म प्रथमतः इस कारण सत्ता में आने में सफल हुआ, क्योंकि सामाजिक-जनवादी नेताओं द्वारा अपनायी गयी पूंजीपतियों के साथ वर्ग सहयोग की नीति के कारण पूंजीपति वर्ग के हमले के समय मजदूर वर्ग विभाजित, राजनीतिक और सांगठनिक दृष्टि से निहत्था साबित हुआ। और दूसरी ओर कम्युनिस्ट पार्टियां इतनी शक्तिशाली नहीं थीं कि सामाजिक-जनवादियों से अलग और उनका विरोध करती हुई जनता को आन्दोलित कर सकती और उसे फासिज्म के खिलाफ निर्णायक संघर्ष में नेतृत्व प्रदान कर सकती।

और निश्चय ही उन लाखों सामाजिक-जनवादी कार्यकर्ताओं को, जो अब अपने कम्युनिस्ट भाइयों के साथ-साथ फासिस्ट बर्बरता की विभीषिका का अनुभव कर रहे हैं, इस बात पर गंभीरता से सोचना चाहिए : अगर १९१८ में जबकि जर्मनी और ऑस्ट्रिया में क्रान्ति फूट पड़ी थी, ऑस्ट्रियाई और जर्मन सर्वहारा ने ऑस्ट्रिया में ओटो बॉयर, फ्रेडरिख एडलर और कार्ल रेनर के तथा जर्मनी में एबर्ट और शीडमान्न के सामाजिक-जनवादी नेतृत्व का अनुसरण न किया होता, बल्कि रूसी बोल्शेविकों के पथ का, लेनिन और स्तालिन के पथ का, अनुसरण किया होता, तो आज ऑस्ट्रिया या जर्मनी में, इटली या हंगेरी में, पोलैंड या बलकान में फासिज्म नहीं होता। बहुत पहले ही योरप में पूंजीपति वर्ग का नहीं, बल्कि मजदूर वर्ग का प्रभुत्व कायम हो गया होता।

उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रियाई सामाजिक-जनवादी पार्टी को लीजिए। १९१८ की क्रान्ति ने इसे अत्यंत ऊंचाई पर पहुंचा दिया। सत्ता इसके हाथ में थी, सेना में और राज्य यंत्र में मजबूत स्थितियां इसके हाथ में थी। इन स्थितियों का सहारा लेकर वह फासिज्म को पनपते ही नष्ट कर दे सकती थी। मगर वह बिना कोई प्रतिरोध किये मजदूर वर्ग की एक के बाद दूसरी स्थिति को उसके हवाले करती गयी। उसने पूंजीपति वर्ग को अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने, संविधान को रद्द कर देने, राज्य यंत्र, सेना और पुलिस दल से सामाजिक-जनवादी कार्यकर्ताओं का सफाया कर देने तथा शस्त्रागार मजदूरों से छीन लेने का मौका दिया। उसने फासिस्ट दस्युओं को बेधड़क सामाजिक-जनवादी मजदूरों की हत्या करने दी और हुटेनवर्ग संधि (तथाकथित मार्क्सवाद-विरोधी मोर्चे की सरकार कायम करने के लिए १९२२ में की गयी संधि—अनु.) की शर्तों को स्वीकार कर लिया जिसने फासिस्ट तत्वों के कारखानों में प्रवेश के लिए दरवाजे खोल दिये। साथ ही सामाजिक-जनवादी नेताओं ने उस लिंज कार्यक्रम (१९२६ में स्वीकृत—अनु.) के जरिये मजदूरों को झांसा दिया जिसमें पूंजीपति वर्ग के खिलाफ शस्त्र शक्ति (फौज) के प्रयोग और सर्वहारा अधिनायकत्व की संभावना शामिल की गयी थी तथा उन्हें यह आश्वासन दिया गया था कि अगर शासक वर्ग मजदूर वर्ग के खिलाफ बल-प्रयोग करता है तो

पार्टी इसके जवाब में आम हड़ताल और सशस्त्र संघर्ष का आह्वान करेगी। ऐसा लगता है मानो मजदूर वर्ग पर फासिस्ट हमले के लिए तैयारी की पूरी नीति संवैधानिक रूपों की नकाब में मजदूर वर्ग के खिलाफ हिंसात्मक कार्रवाइयों की एक शृंखला नहीं थी। फरवरी की लड़ाइयों के ठीक पहले, और उनके दौरान भी, ऑस्ट्रियाई सामाजिक-जनवादी नेताओं ने वीरता के साथ संघर्परत शुट्ज़बंड (*ऑस्ट्रियाई सामाजिक-जनवादी पार्टी का अर्धसैनिक संगठन जिसे डोल्फस सरकार ने १ अप्रैल १६३३ को भंग कर दिया था। —अनु.*) को व्यापक जन समुदाय से अलग-थलग छोड़ दिया, और ऑस्ट्रियाई सर्वहारा को पराजय के हवाले कर दिया।

क्या जर्मनी में फासिज्म की विजय अपरिहार्य थी? नहीं, जर्मनी का मजदूर वर्ग इसे रोक सकता था।

मगर ऐसा करने के लिए यह जरूरी था कि उसने संयुक्त फासिस्ट-विरोधी सर्वहारा मोर्चा बना लिया होता, तथा सामाजिक-जनवादी नेताओं को कम्युनिस्टों के खिलाफ अपनी मुहिम बंद कर देने और कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा फासिज्म के खिलाफ संयुक्त कार्रवाई के लिए बार-बार रखे गये प्रस्तावों को स्वीकार करने को मजबूर कर दिया होता।

जिस समय फासिज्म हमला कर रहा था तथा पूंजीपति वर्ग पूंजीवादी-जनवादी आजादियों को उत्तरोत्तर समाप्त करता जा रहा था, उस समय उसे सामाजिक-जनवादियों के जबानी प्रस्तावों पर संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए था, बल्कि उनके जवाब में ऐसा वास्तविक जन संघर्ष शुरू कर देना चाहिए था जिसने जर्मन पूंजीपति वर्ग की फासिस्ट योजनाओं की सफलता को और कठिन बना दिया होता।

उसे ब्रॉन और सेवरिंग की सरकार को लाल मोर्चा योद्धा लीग (लीग ऑफ रेड फ्रंट फाइटर्स) पर पाबंदी नहीं लगाने देनी चाहिए थी, तथा अपने लगभग दस लाख सदस्यों के साथ लीग और राइख़सबैनर (अर्थात "साम्राजी पताका", जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी का अर्ध-सैनिक जन संगठन—अनु.) के बीच जुझारू संपर्क स्थापित करना चाहिए था तथा ब्रॉन और सेवरिंग को इस बात के लिए मजबूर कर देना चाहिए था कि वे फासिस्ट गिरोहों का प्रतिरोध करने और उन्हें ध्वस्त कर देने के लिए इन संगठनों को हथियारबंद करते।

इसे प्रशियन सरकार का नेतृत्व करने वाले सामाजिक-जनवादी नेताओं को इस बात के लिए मजबूर कर देना चाहिए था कि वे फासिज्म से बचाव के लिए कदम उठायें, फासिस्ट नेताओं को गिरफ्तार करें, उनके अखबारों को बंद कर दें, उनके भौतिक संसाधनों को तथा फासिस्ट आन्दोलन को धन देने

वाले पूंजीपतियों के संसाधनों को जब्त कर लें, फासिस्ट संगठनों को भंग कर दें, उनके हथियार उनसे छीन लें, आदि।

यही नहीं, उसे हर प्रकार की सामाजिक सहायता की पुनर्प्रतिष्ठा और विस्तार करवाना चाहिए था, ऋण-भुगतान स्थगित करवाने चाहिए थे तथा बैंकों और ट्रस्टों पर कर लगा कर और इस प्रकार मेहनतकश किसानों का समर्थन हासिल कर किसानों के लिए—जो संकट के बोझ से पिसे जा रहे थे—संकट-भत्ते लागू करवाने चाहिए थे। यह जर्मनी के सामाजिक-जनवादियों का दोष था कि ऐसा नहीं किया गया, और इसी कारण फासिज्म विजय पा सका।

क्या स्पेन जैसे देश में, जहां सर्वहारा विद्रोह की शक्तियों के साथ किसान युद्ध भी इतने लाभप्रद रूप में जुड़ा हुआ है, पूंजीपति वर्ग और अभिजात वर्ग की विजय अपरिहार्य थी?

क्रान्ति के आरंभ के दिनों से ही स्पेनी सोशलिस्ट सरकार में थे। क्या उन्होंने कम्युनिस्टों और अराजकतावादियों समेत हर राजनीतिक विचारधारा के मजदूर वर्ग संगठनों के बीच जुझारू संपर्क स्थापित किये? क्या उन्होंने मजदूर वर्ग को एक संयुक्त ट्रेड यूनियन संगठन में एकजुट किया? क्या उन्होंने किसानों को क्रान्ति के पक्ष में लाने के लिए उनके हक में जमींदारों, गिरजाघरों और मठों की सारी जमीनें जब्त करने की मांग उठायी? क्या उन्होंने केटेलोनियनों और बास्कों के राष्ट्रीय आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए तथा मोरक्को की मुक्ति के लिए संघर्ष चलाने की कोशिश की? क्या उन्होंने सेना से राजतंत्रवादी और फासिस्ट तत्वों को निकाल बाहर करने और उसे मजदूरों और किसानों के पक्ष में चले आने के लिए तैयार किया? क्या उन्होंने उस नागरिक रक्षक दल (सिविल गार्ड) को भंग किया जिससे जनता इतनी नफरत करती थी और जिसका काम ही जनता के हर आन्दोलन को कुचल देना रहा है? क्या उन्होंने गिल रोब्लेस की फासिस्ट पार्टी पर और कैथोलिक चर्च की शक्ति पर चोट की? नहीं, उन्होंने इनमें से एक भी काम नहीं किया। वे पूंजीवादी-जमींदार प्रतिक्रियावाद और फासिज्म के हमले के खिलाफ संयुक्त-कार्रवाई के लिए कम्युनिस्टों द्वारा बार-बार रखे गये प्रस्तावों को ठुकराते रहे, उन्होंने ऐसे चुनाव कानून पारित किये जिनके चलते प्रतिक्रियावादियों को कोर्टीज (संसद) में बहुमत मिल गया—वे कानून जिनके जरिये लोकप्रिय आन्दोलन कुचले गये, वे कानून जिनके तहत आज अस्टुरियास के बहादुर खदान मजदूरों पर मुकदमे चलाये जा रहे हैं। उन्होंने नागरिक रक्षकों को उन किसानों को, जो जमीन के लिए लड़ रहे थे, गोलियों से भून डालने दिया, आदि-आदि।

इसी तरीके से सामाजिक-जनवादियों ने मजदूर वर्ग की कतारों को

असंगठित और विभाजित कर जर्मनी, ऑस्ट्रिया तथा स्पेन में फासिज्म के सत्तारूढ़ होने के लिए रास्ता साफ किया।

साथियो, फासिज्म इसलिए भी सत्तारूढ़ हुआ क्योंकि सर्वहारा ने अपने को स्वाभाविक मित्रों से अलग-थलग पाया। फासिज्म इसलिए सत्तारूढ़ हुआ, क्योंकि वह किसानों के विशाल समुदाय को अपने पक्ष में लाने में सफल हुआ और इसका कारण यह था कि सामाजिक-जनवादियों ने मजदूर वर्ग के नाम पर ऐसी नीति का अनुसरण किया जो दरअसल किसान-विरोधी थी। किसानों की आखों के सामने कई सामाजिक-जनवादी सरकारें सत्ता में आयी जो उनकी दृष्टि में मजदूर वर्ग की सत्ता का मूर्तिमान रूप थीं; पर उनमें से एक ने भी किसानों की गरीबी का खात्मा नहीं किया, एक ने भी किसानों को भूमि नहीं दी। जर्मनी में, सामाजिक-जनवादियों ने जमींदारों को छुआ तक नहीं; उन्होंने खेत मजदूरों की हड़तालो को कुचला, जिसका नतीजा यह हुआ कि हिटलर के सत्ता में आने से बहुत पहले ही जर्मनी के खेत मजदूर सुधारवादी ट्रेड यूनियनों से दूर हटने लगे थे और उनमें से अधिकांश *स्टालहेल्म (अर्थात इस्पाती टोप, हिटलर के पहले जर्मनी का एक प्रतिक्रान्तिकारी अर्धसैनिक संगठन—अनु.)* के पक्ष में तथा *राष्ट्रीय-समाजवादियों* के पक्ष में जाने लगे थे।

फासिज्म के सत्तारूढ़ होने का यह कारण भी था कि वह नौजवानों की पांतों में घुसने मे सफल हो गया, जबकि सामाजिक-जनवादियों ने मजदूर वर्ग के नौजवानों को वर्ग संघर्ष से विमुख किया तथा क्रान्तिकारी सर्वहारा ने नौजवानों के बीच आवश्यक शिक्षा कार्य नहीं विकसित किया तथा उनके विशेष हितों और मांगों के लिए संघर्ष पर यथेष्ट ध्यान नहीं दिया। फासिज्म ने नौजवानों की जुझारू क्रियाशीलता की उग्र आवश्यकता को भांप लिया तथा नौजवानों के खासे बड़े हिस्से को प्रलोभित कर अपने लड़ाकू दस्तों में खींच लाया। नौजवान नर-नारियों की नयी पीढ़ी युद्ध की विभीषिका से नहीं गुजरी है। उसने आर्थिक संकट, बेरोजगारी तथा पूंजीवादी जनतंत्र के विघटन का पूरा बोझ झेला है। किन्तु भविष्य के लिए आशा की कोई किरण न दिखायी पड़ने के कारण नौजवानों के बड़े हिस्से खास तौर पर उस फासिस्ट लफ्फाजी के प्रभाव में आ गये, जो उनके लिए एक मोहक भविष्य की—बशर्ते कि फासिज्म सफल हो जाये—तस्वीर पेश करती थी।

इस प्रसंग में हम कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा की गयी अनेक गलतियों का जिक्र किये बिना नहीं रह सकते—उन गलतियों का जिन्होंने फासिज्म के खिलाफ हमारे संघर्ष में रुकावट डाली।

हमारी कतारों में फासिस्ट खतरे को अक्षम्य हद तक कम करके आंका जाता था, ऐसी प्रवृत्ति जिसे अभी तक हर जगह दूर नहीं किया जा सका है।

पहले हमारी पार्टियों में जो यह राय व्यक्त की जाती थी कि "जर्मनी इटली नहीं है," इसकी एक मिसाल है, जिसका अर्थ यह था कि फासिज्म इटली में सफल हो गया होगा, मगर जर्मनी में इसके सफल होने का कोई सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि यह मजदूर वर्ग आन्दोलन की चालीस वर्ष की परंपराओं वाला, औद्योगिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक अत्यंत विकसित देश है जिसमें फासिज्म का आना असम्भव है। या आजकल प्रचलित इस आशय की राय लीजिए कि "क्लासिकी" पूंजीवादी-जनवाद के देशों में फासिज्म के लिए जमीन ही नहीं है। इस तरह की रायें फासिस्ट खतरे के प्रति चौकसी में शिथिलता लाने तथा फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में सर्वहारा को लामबंद करने का काम और ज्यादा मुश्किल बना देने में सहायक होती रही हैं और हो सकती है।

ऐसी बहुत-सी मिसालें पेश की जा सकती हैं जहां कम्युनिस्ट बेखबर ही रह गये और फासिस्टों द्वारा सत्ता-अपहरण कर लिया गया। बुलगारिया को याद कीजिए जहां हमारी पार्टी ने ६ जून १६२३ के सत्ता-अपहरण के बारे में "तटस्थ" लेकिन दरअसल अवसरवादी रुख अपनाया; पोलैंड को याद कीजिए, जहां मई १६२६ में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने पोलिश क्रान्ति की प्रेरक शक्तियों का गलत अनुमान लगाते हुए पिल्सुद्स्की द्वारा सत्ताहरण के फासिस्ट स्वरूप को नहीं समझा तथा घटनाओं के पीछे घिसटता रह गया; फिनलैंड को याद कीजिए, जहां हमारी पार्टी ने इस मिथ्या धारणा को अपना आधार बनाया कि फासिज्म धीरे-धीरे और क्रमिक रूप में आता है तथा उस फासिस्ट सत्ता-अपहरण को नजरअदाज किया जिसके लिए पूंजीपति वर्ग का अग्रणी हिस्सा तैयारी कर रहा था और जिसके बारे में पार्टी और मजदूर वर्ग गाफिल थे।

जिस समय राष्ट्रीय-समाजवाद जर्मनी में एक भयावह जन आन्दोलन का रूप ले चुका था, उस समय हेंज न्यूमान की तरह के ऐसे कामरेड भी मौजूद थे जो यह मानते थे कि ब्रूएनिंग सरकार अभी ही फासिस्ट तानाशाही की सरकार बन चुकी है और डींग भरते हुए यह ऐलान करते थे: "अगर हिटलर की थर्ड रीख कभी स्थापित हुई तो वह छह फुट जमीन के नीचे होगी, और उसके ऊपर मजदूरों की विजयी सत्ता होगी।"

जर्मनी में हमारे साथी वार्साई संधि के खिलाफ राष्ट्र की मर्माहत भावनाओं और जन-साधारण के आक्रोश को लंबे अरसे तक पूरी तरह नहीं समझ सके; किसानों और निम्न-पूंजीपति वर्ग के ढुलमुलपन को उन्होंने कोई महत्व नहीं दिया; सामाजिक और राष्ट्रीय मुक्ति का कार्यक्रम तैयार करने में उन्होंने बहुत विलम्ब कर दिया, और जब उन्होंने यह कार्यक्रम प्रस्तुत भी किया तो वे उसे ठोस मांगों और आम जनता के स्तर के अनुकूल ढाल सकने में असमर्थ रहे। वे उसे जन साधारण के बीच व्यापक तौर से लोकप्रिय बनाने में भी असमर्थ रहे।

अनेक देशों में फासिज्म के खिलाफ जहां जन संघर्ष को विकसित करने की जरूरत थी, वहां उसकी जगह फासिज्म के "आम" स्वरूप पर बेमतलब बहसें छेड़ी गयी और पार्टी के तात्कालिक राजनीतिक कर्तव्यों को पेश करने और कार्यान्वित करने के मामले में संकुचित संकीर्णतावादी रुख अपनाया गया।

साथियो, हम महज गड़े मुर्दे उखाड़ने के लिए फासिज्म की विजय के कारणों का जिक्र नहीं कर रहे हैं, मजदूर वर्ग की पराजय के लिए सामाजिक-जनवादियों की ऐतिहासिक जिम्मेदारी की ओर इशारा नहीं कर रहे हैं, तथा फासिज्म के खिलाफ लड़ाई में स्वयं अपनी गलतियों की ओर भी इशारा नहीं कर रहे हैं। हम जीते-जागते यथार्थ से कटे हुए इतिहासकार नहीं हैं; हमारे लिए, मजदूर वर्ग के कर्मठ योद्धाओं के लिए, उस सवाल का जवाब देना अनिवार्य है जो लाखों मजदूरों को आन्दोलित किये है : क्या फासिज्म को विजयी होने से रोका जा सकता है, और कैसे ? और हम इन लाखों मजदूरों को जवाब देते हैं : हां, साथियो, फासिज्म का रास्ता बंद किया जा सकता है। यह बिलकुल संभव है। यह स्वयं हमारे ऊपर—हम मजदूरों, किसानों और सारे मेहनतकशों पर—निर्भर करता है।

फासिज्म को विजयी होने से रोका जा सकता है या नहीं, यह सर्वप्रथम और सर्वोपरि स्वयं मजदूर वर्ग की जुझारू क्रियाशीलता पर निर्भर है, इस बात पर निर्भर है कि उसकी शक्तियां पूंजीवाद और फासिज्म के हमले से गुत्थमगुत्था करने वाली एक ही जंगजू सेना के रूप में एकान्वित हैं या नहीं। सर्वहारा अपनी लड़ाकू एकता कायम करके किसानों, शहरी निम्न-पूंजीपतियों, नौजवानों और बुद्धिजीवियों पर फासिज्म के प्रभाव को विफल कर देगा, तथा उसके एक तबके को तटस्थ बनाने और दूसरे को अपने पक्ष में ले आने में कामयाब होगा।

दूसरे, यह एक ऐसी शक्तिशाली क्रान्तिकारी पार्टी के अस्तित्व पर निर्भर करता है जो फासिज्म के खिलाफ मेहनतकशों के संघर्ष का सही नेतृत्व करे। ऐसी पार्टी जो फासिज्म के मुकाबले मजदूरों को लगातार पीछे हटने को कहती है और फासिस्ट पूंजीपति वर्ग को अपनी स्थितियां मजबूत करने का मौका देती है, मजदूरों को अन्ततः पराजय के गढे में ले जायेगी।

तीसरे, यह किसानों के प्रति और नगरों के निम्न-पूंजीवादी जनसमूह के प्रति मजदूर वर्ग की सही नीति पर निर्भर करता है। इन जन समूहों को उसी रूप में ग्रहण किया जाना चाहिए जिस रूप में वे हैं, न कि जिस रूप में हम उन्हें पाना चाहते हैं। वे संघर्ष की प्रक्रिया में ही अपने संदेहों और ढुलमुलाहटों पर विजय पायेंगे। उनकी अवश्यंभावी ढुलमुलाहट के प्रति धीरज का रुख

अपना कर ही, सर्वहारा की राजनीतिक मदद से ही, वे क्रान्तिकारी चेतना और क्रियाशीलता के उच्चतर स्तर तक उठ सकेंगे।

चौथे, यह क्रान्तिकारी सर्वहारा की चौकसी और यथा समय कार्रवाई पर निर्भर करता है। क्रान्तिकारी सर्वहारा को यह मौका नहीं देना चाहिए कि वह बेखबर रह जाय और फासिज्म आ जाय, उसे पहल फासिज्म के हाथों में नहीं सौंप देनी चाहिए, बल्कि इसके पहले कि वह अपनी शक्तियों को जुटा सके, इसे उस पर निर्णायक प्रहार करने चाहिए, उसे फासिज्म को अपनी स्थिति सुदृढ़ करने का मौका नहीं देना चाहिए, फासिज्म जहां कहीं और जब कभी भी अपना सिर उठाये उसे कुचल देना चाहिए, उसे फासिज्म को नयी स्थितियों पर कब्जा जमाने का मौका नहीं देना चाहिए। ठीक यही फ्रांसीसी सर्वहारा इतनी सफलता से करने की कोशिश कर रहा है।

फासिज्म को बढ़ने और सत्तारूढ़ होने से रोकने की ये ही मुख्य शर्तें हैं।

फासिज्म—एक खौफनाक लेकिन अस्थिर सत्ता

पूंजीपति वर्ग की फासिस्ट तानाशाही एक खौफनाक, लेकिन अस्थिर सत्ता है।

फासिस्ट तानाशाही की अस्थिरता के मुख्य कारण क्या हैं?

फासिज्म पूंजीपति वर्ग के खेमे के भीतर के मतभेदों और विरोधों को दूर करने की कोशिश करता है, मगर वह इन विरोधों को और भी उग्र बना देता है।

फासिज्म अन्य राजनीतिक पार्टियों को जबर्दस्ती विनष्ट कर अपना राजनीतिक एकाधिकार कायम करने की कोशिश करता है। किन्तु पूंजीवादी व्यवस्था का अस्तित्व, विभिन्न वर्गों का अस्तित्व और वर्ग अंतर्विरोधों का तीव्र होना, फासिज्म के राजनीतिक एकाधिकार को खोखला करता है और उसका विस्फोट कर देता है। सोवियत देश में ऐसा नहीं होता, हालांकि वहां सर्वहारा का अधिनायकत्व एक पार्टी के राजनीतिक एकाधिकार के जरिये ही साकार होता है, मगर वहां यह राजनीतिक एकाधिकार लाखों मेहनतकशों के हितों के अनुसार होता है तथा एक वर्गहीन समाज के निर्माण पर उत्तरोत्तर आधारित होता जाता है। एक फासिस्ट देश में, फासिस्टों की पार्टी वर्गों और वर्ग-अंतर्विरोधों का उन्मूलन करने का लक्ष्य अपने सामने नहीं रख सकती। वह पूंजीवादी पार्टियों के कानूनी अस्तित्व का खात्मा कर देता है। पर उनमें से अनेक अपना गैरकानूनी अस्तित्व बरकरार रखती हैं, जबकि कम्युनिस्ट पार्टी अवैधता की परिस्थितियों में भी प्रगति जारी रखती है, पुख्ता और परिपक्व होती जाती है तथा फासिस्ट तानाशाही के खिलाफ सर्वहारा के संघर्ष का

नेतृत्व करती है। इसलिए वर्ग अंतर्विरोधों के प्रहारों के अन्तर्गत फासिज्म के राजनीतिक एकाधिकार का चकनाचूर होना अवश्यंभावी है।

फासिस्ट तानाशाही की अस्थिरता का एक और कारण यह है कि फासिज्म की पूंजीवाद-विरोधी लफ्फाजी तथा सबसे ज्यादा दस्युतापूर्ण ढंग से इजारेदार पूंजीपति वर्ग को मालामाल करने की उसकी नीति के बीच की खाई के कारण फासिज्म के वर्ग स्वरूप को बेनकाब करना ज्यादा आसान हो जाता है तथा इससे उसका जन-आधार डगमगाता और सिकुड़ता जाता है।

यही नहीं, फासिज्म की विजय आम जनता में गहरी घृणा और आक्रोश जगाती है, उनमें क्रान्तिकारी चेतना जगाने में मदद करती है, तथा फासिज्म के खिलाफ सर्वहारा के संयुक्त मोर्चे को शक्तिशाली बढ़ावा देती है।

आर्थिक राष्ट्रवाद (आत्मनिर्भरता तंत्र) की नीति अपनाकर तथा युद्ध की तैयारी के उद्देश्य से राष्ट्रीय आय के अधिकांश भाग को बलपूर्वक छीन कर फासिज्म देश के पूरे आर्थिक जीवन को खोखला कर देता है और पूंजीवादी राज्यों के बीच आर्थिक युद्ध तेज कर देता है। पूंजीपति वर्ग के बीच जो टक्करें पैदा होती हैं, उनको यह जबर्दस्त और कभी-कभी खूनी भिड़ंतों का रूप दे देता है, जिससे जनता की नजरों में फासिस्ट राज्य सत्ता का स्थायित्व गिरता है। ऐसी सरकार जो अपने अनुयायियों की हत्या करती है, जैसा कि पिछले साल ३० जून को जर्मनी में हुआ, ऐसी फासिस्ट सरकार जिसके खिलाफ फासिस्ट पूंजीपति वर्ग का एक अन्य तबका सशस्त्र लड़ाई लड़ रहा हो (ऑस्ट्रिया का राष्ट्रीय समाजवादी विद्रोह और पोलेंड, बुलगारिया, फिनलेंड तथा अन्य देशों की फासिस्ट सरकार पर अलग-अलग फासिस्ट टोलियों के हिंसात्मक हमले)—इस तरह की सरकार निम्न-पूंजीपति वर्ग के व्यापक समुदाय की नजरों में अपनी सत्ता ज्यादा दिनों तक बरकरार नहीं रख सकती।

मजदूर वर्ग को पूंजीवादी खेमे के भीतर के विरोधों और टकरावों से फायदा जरूर उठाना चाहिए, लेकिन उसे यह खामखयाली नहीं पालनी चाहिए कि फासिज्म अपने-आप निःशेष हो जायगा। फासिज्म अपने आप धराशायी नहीं होगा। फासिस्ट तानाशाही को खोखला करने और उसे उखाड़ फेंकने के लिए मजदूर वर्ग की क्रान्तिकारी क्रियाशीलता ही पूंजीवादी खेमे के भीतर लाजिमी तौर पर पैदा होने वाले टकरावों से फायदा उठाने में सहायक हो सकती है।

पूंजीवादी जनतंत्र के अवशेषों को नष्ट कर, सरेआम हिंसात्मकता को शासन प्रणाली के पद पर आसीन कर फासिज्म जनवादी खामखयालियों को झकझोर देता है तथा मेहनतकश जनता की नजरों में कानून की सत्ता को गिराता है। यह बात खास तौर पर ऑस्ट्रिया और स्पेन जैसे देशों में सही है, जहां मजदूरों ने फासिज्म के खिलाफ हथियार उठा लिये हैं। ऑस्ट्रिया में शुट्ज़बंड और

कम्युनिस्टों के वीरतापूर्ण संघर्ष ने, अपनी शिकस्त के बावजूद, आरंभ से ही फासिस्ट तानाशाही के स्थायित्व को डिगा दिया।

स्पेन में पूंजीपति वर्ग मेहनतकशों पर फासिज्म की तोप नहीं तान सका। ऑस्ट्रिया और स्पेन में सशस्त्र संघर्ष के फलस्वरूप मजदूर वर्ग के अधिकाधिक व्यापकतर हिस्सों को क्रान्तिकारी वर्ग संघर्ष की आवश्यकता का अहसास हुआ है।

दूसरे इन्टरनेशनल के सठियाये सिद्धांतकार कार्ल कॉट्स्की जैसे भारी नक्काल, पूंजीपति वर्ग के चाकर ही मजदूरों को इस तरह की झिड़कियां दे सकते हैं कि उन्हें ऑस्ट्रिया और स्पेन में हथियार नहीं उठाने चाहिए थे। अगर ऑस्ट्रिया और स्पेन के मजदूर वर्ग कॉट्स्की जैसों की गद्दारी भरी सलाहों से निर्देशित होते तो इन देशों में आज मजदूर वर्ग आन्दोलन कैसा दीखता? मजदूर वर्ग की कतारों में गहरी पस्ती छायी होती।

लेनिन कहते हैं: "गृहयुद्ध की पाठशाला जनता को प्रभावित किये बिना नहीं छोड़ती। यह एक कठोर पाठशाला है और इसके पूर्ण पाठ्यक्रम में अनिवार्यतः प्रतिक्रान्ति की जीतें, क्रुद्ध प्रतिक्रियावादियों की लंपटताएं, पुरानी सरकारों द्वारा विद्रोहियों को दी गयी बर्बरतापूर्ण सजाएं, आदि शामिल होती हैं। किन्तु इस तथ्य पर कि राष्ट्र इस कष्टकर पाठशाला में भर्ती हो रहे हैं, वे ही आंसू बहायेंगे जो सरासर दभी होंगे और दिमागी तौर पर बेजान पुतले होंगे; यह पाठशाला उत्पीड़ित वर्गों को यह सिखाती है कि गृहयुद्ध कैसे चलाया जाय; यह सिखाती है कि किस तरह विजयी क्रान्ति संपन्न करनी चाहिए; यह आज के गुलामों के समुदाय में इस नफरत को घनीभूत कर देती है जिसे पददलित, निश्चेष्ट, ज्ञानशून्य गुलाम अपने हृदय में हमेशा पाले रहते हैं और जो उन गुलामों से, जो अपनी गुलामी की लानत के बारे में जागरूक हो जाते है, महानतम ऐतिहासिक कारनामे कराती है।" (लेनिन, विश्व राजनीति में ज्वलनशील तत्व, संकलित रचनाएं (अंग्रेजी), खंड ४, पृ. २६८)।

जैसा कि हम जानते हैं, जर्मनी में फासिज्म की विजय के बाद फासिस्ट आक्रमणों की एक नयी लहर आयी, जिसके फलस्वरूप ऑस्ट्रिया में डोलफस ने उत्तेजनात्मक कार्यवाइयां कीं, स्पेन में आम जनता की क्रान्तिकारी जीतों पर प्रतिक्रान्ति के नये हमले हुए, पोलैंड में संविधान में फासिस्ट सुधार किये गये, तथा फ्रांस में इसने फासिस्टों के हथियारबंद दस्तों को फरवरी १९३४ में सत्ता-अपहरण की कोशिश के लिए उकसाया। किन्तु इस विजय तथा फासिस्ट तानाशाही के उन्माद से फासिज्म के खिलाफ अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर संयुक्त सर्वहारा मोर्चे के लिए जवाबी आन्दोलन शुरू हो गया।

जर्मनी के रीखस्टाग (संसद भवन) के जला दिये जाने से, जिसने मजदूर

वर्ग पर फासिज्म के आम हमले के लिए संकेत का काम किया, ट्रेड यूनियनों और अन्य मजदूर वर्ग संगठनों पर कब्जा कर लिये जाने और उनके लूट लिये जाने से, यातना के शिकार बनाये गये फासिस्ट विरोधियों की फासिस्ट बैरकों और यंत्रणा-शिविरों के तहखानों से उठने वाली कराहों से जनता के सामने यह साफ होता जा रहा है कि उन जर्मन सामाजिक-जनवादी नेताओं द्वारा अदा की गयी प्रतिक्रियावादी, ध्वंसकारी भूमिका का क्या नतीजा रहा है जिन्होंने बढ़ते हुए फासिज्म के खिलाफ कम्युनिस्टों द्वारा रखे गये संयुक्त संघर्ष के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। ये चीजें जनता में यह विश्वास भरती जा रही हैं कि फासिज्म को उखाड़ फेंकने के लिए मजदूर वर्ग की सभी शक्तियों को ऐक्यबद्ध करना जरूरी है।

हिटलर की विजय से भी फ्रांस में फासिज्म के खिलाफ मजदूर वर्ग के सयुक्त मोर्चे के निर्माण के लिए निर्णायक प्रोत्साहन मिला। हिटलर की विजय से जर्मन मजदूरों की जो नियति हुई उससे मजदूरों में न सिर्फ भय पैदा हुआ, अपने जर्मन वर्ग बंधुओं के जल्लादों के प्रति न सिर्फ नफरत पैदा हुई, बल्कि उनके भीतर यह संकल्प भी पैदा हुआ कि किसी भी परिस्थिति में अपने देश में वह न होने दें जो जर्मनी में मजदूर वर्ग के साथ हुआ।

सारे पूंजीवादी देशों में संयुक्त मोर्चे के लिए जो प्रबल आकांक्षा पायी जाती है उससे सिद्ध होता है कि पराजय के सबक व्यर्थ नहीं गये हैं। मजदूर वर्ग एक नये ढंग से काम करना शुरू कर रहा है। संयुक्त मोर्चे के संगठन में 'कम्युनिस्ट पार्टियों ने जो पहलकदमी की है और फासिज्म के खिलाफ कम्युनिस्टों, क्रान्तिकारी मजदूरों ने जो महानतम आत्म-बलिदान किये हैं उनसे कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की प्रतिष्ठा में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। साथ ही द्वितीय इन्टरनेशनल गहरे संकट से गुजर रहा है, ऐसे संकट से जो जर्मन सामाजिक-जनवाद के दिवालियेपन के बाद से खास तौर पर देखने में आया है और खास तौर पर तेज हुआ है। सामाजिक-जनवादी कार्यकर्ताओं को यह बात उत्तरोत्तर ज्यादा आसानी से समझ में आती जा रही है कि अपनी समस्त विभीषिका और बर्बरताओं समेत फासिस्ट जर्मनी अन्तिम विश्लेषण में पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की सामाजिक-जनवादी नीति का परिणाम है। इन जन समुदायों को इस बात का उत्तरोत्तर अधिक स्पष्ट अहसास होता जा रहा है कि जर्मन सामाजिक-जनवादी नेता सर्वहारा को जिस रास्ते पर ले गये उस पर दुबारा कदम नही रखा जाना चाहिए। आज द्वितीय इन्टरनेशनल के शिविर में जितना विचारधारात्मक मतभेद है, उतना कभी नहीं रहा। सामाजिक-जनवादी पार्टियों में विभेदीकरण की प्रक्रिया चल रही है। उनकी कतारों के भीतर दो प्रधान शिविर बनते जा रहे हैं: उन प्रतिक्रियावादी तत्वों के मौजूदा

शिविर के साथ ही साथ जो सामाजिक-जनवादियों और पूंजीपति वर्ग के गठबंधन को हर प्रकार से सुरक्षित रखने की कोशिश कर रहे हैं और जो कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त मोर्चे को हठधर्मी के साथ ठुकराते हैं, उन क्रान्तिकारी तत्वों के शिविर के अभ्युदय का आरंभ हो रहा है जिन्हें पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की नीति के सही होने के मामले में संदेह हैं, जो कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाने के पक्ष में हैं, और जो उत्तरोत्तर क्रान्तिकारी वर्ग संघर्ष की स्थिति अपनाते जा रहे हैं।

इस प्रकार फासिज्म, जो कि पूंजीवादी व्यवस्था के ह्रास के फलस्वरूप आविर्भूत हुआ, कालांतर में उसके और अपने विघटन के हेतु के रूप में कार्य करता है। इस प्रकार वही फासिज्म, जिसने मार्क्सवाद को, मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी आन्दोलन को दफना देने का बीड़ा उठाया है, जीवन और वर्ग संघर्ष की द्वंद्वात्मकता के फलस्वरूप स्वयं ही उन शक्तियों के और अधिक विकास में सहायक हो रहा है जिन्हें इसकी कब्र खोदने, पूंजीवाद की कब्र खोदने का काम करना है।

२. फासिज्म के खिलाफ मजदूर वर्ग का संयुक्त मोर्चा

साथियो, पूंजीवादी देशों के लाखों मजदूर और मेहनतकश यह सवाल पूछ रहे हैं: फासिज्म को सत्तारूढ़ होने से कैसे रोका जा सकता है तथा सत्ता प्राप्त कर लेने के बाद फासिज्म को कैसे उखाड़ फेंका जा सकता है? इसके जवाब में कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल कहता है: जो चीज सबसे पहले की जानी चाहिए, जिस चीज के साथ शुरुआत होनी चाहिए, वह यह है कि एक संयुक्त मोर्चा बनाया जाय, हर कारखाने में, हर जिले में, हर इलाके में, हर देश में, संपूर्ण विश्व में मजदूरों की कारंवाई की एकता कायम की जाय। राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर सर्वहारा की कारंवाई की एकता ऐसा शक्तिशाली हथियार है जो मजदूर वर्ग को फासिज्म के खिलाफ, वर्ग शत्रु के खिलाफ, न सिर्फ सफल आत्म रक्षा करने बल्कि सफल जवाबी हमला करने में भी सक्षम बनाती है।

संयुक्त मोर्चे का महत्व

क्या यह स्पष्ट नहीं है कि अगर दोनों इन्टरनेशनलों—कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल और द्वितीय इन्टरनेशनल—की पार्टियां और संगठन, संयुक्त कारंवाई करें तो अवाम के लिए फासिस्ट हमले को पछाड़ देना ज्यादा आसान हो जायगा और मजदूर वर्ग का राजनीतिक महत्व बढ़ जायगा?

बहरहाल, फासिज्म के खिलाफ दोनों इन्टरनेशनलों की पार्टियों की संयुक्त

कार्रवाई अपने परिणाम की दृष्टि से अपने मौजूदा समर्थकों, कम्युनिस्टों और सामाजिक-जनवादियों को प्रभावित करने तक ही सीमित नहीं रहेगी; यह कैथोलिक, अराजकतावादी और असंगठित मजदूरों पर भी, यहां तक कि उन लोगों पर भी जो क्षणिक तौर पर फासिस्ट लफ्फाजी के शिकार बन गये हैं, जबर्दस्त असर डालेगी।

इतना ही नहीं, सर्वहारा का एक शक्तिशाली संयुक्त मोर्चा मेहनतकश जनता के अन्य सभी तबकों पर, किसानों पर, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग पर, बुद्धिजीवी वर्ग पर जबर्दस्त असर डालेगा। संयुक्त मोर्चा ढुलमुल समूहों को भी मजदूर वर्ग की शक्ति के प्रति विश्वास से अनुप्राणित करेगा।

किन्तु इतने से भी इतिश्री नहीं होती। साम्राज्यवादी देशों के सर्वहारा के सम्भावित मित्र न सिर्फ उनके अपने-अपने देशों के मेहनतकश बल्कि उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों की उत्पीड़ित जातियां भी है। जहां तक कि सर्वहारा राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर विभक्त है, जहां तक कि उसका एक हिस्सा पूंजीपति वर्ग के साथ सहयोग की नीति का—खास तौर पर उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों में उसकी उत्पीड़ित व्यवस्था का—समर्थन करता है, वहां तक मजदूर वर्ग तथा उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों के उत्पीड़ित जनगण के बीच दीवार खड़ी हो जाती है, तथा विश्व साम्राज्यवाद-विरोधी मोर्चा कमजोर होता है। औपनिवेशिक जनगण की मुक्ति के लिए संघर्ष के समर्थन की दिशा में कार्रवाई की एकता के पथ पर साम्राज्यवादी देशों के सर्वहारा के हर कदम का अर्थ होता है—उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों को विश्व सर्वहारा के सबसे महत्वपूर्ण आरक्षित दलों (रिजर्व्स) मे रूपांतरित करना।

अन्त में, अगर हम यह ध्यान में रखें कि सर्वहारा की कार्रवाई की अन्तर्राष्ट्रीय एकता सर्वहारा राज्य, समाजवाद के देश, सोवियत संघ, की लगातार बढ़ती हुई शक्ति पर निर्भर करती है, तो हम देखते हैं कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर सर्वहारा की कार्रवाई की एकता के निष्पन्न होने पर कैसी व्यापक सम्भावनाएं उद्घाटित हो जाती हैं।

इसके भी पहले कि मजदूर वर्ग का बहुसंख्यक भाग पूंजीवाद को उखाड़ फेंकने और सर्वहारा क्रान्ति को विजयी बनाने के लिए संघर्ष में ऐक्यबद्ध हो, यह जरूरी है कि मजदूर वर्ग के सभी हिस्सों की, चाहे वे जिस पार्टी या सगठन के हों, कार्रवाई की एकता कायम हो।

क्या अलग-अलग देशों में और सम्पूर्ण विश्व में सर्वहारा की कार्रवाई की इस एकता को कायम कर सकना सम्भव है? हां, यह सम्भव है। यह इसी क्षण सम्भव है। कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल कार्रवाई की एकता के लिए एक के

अलावा और कोई शर्त नहीं रखता और वह भी सभी मजदूरों को स्वीकार्य एक प्रारंभिक शर्त है, अर्थात यह कि कार्रवाई की एकता फासिज्म के खिलाफ, पूंजी के हमले के खिलाफ, युद्ध के खतरे के खिलाफ, वर्ग शत्रु के खिलाफ, निर्दिष्ट हो। यही हमारी शर्त है।

संयुक्त मोर्चे के विरोधियों की मुख्य दलीलें

संयुक्त मोर्चे के विरोधी क्या आपत्तियां कर सकते हैं, और वे क्या आपत्तियां करते हैं?

कुछ कहते हैं: "कम्युनिस्ट संयुक्त मोर्चे के नारे का इस्तेमाल महज चाल के बतौर करते हैं।" किन्तु यदि बात ऐसी है, तो हमारा जवाब है, तो आप संयुक्त मोर्चे में इमानदारी से भाग लेकर "कम्युनिस्ट चाल" का पर्दाफाश क्यों नहीं करते? हम तो साफ-साफ ऐलान करते हैं: हम मजदूर वर्ग की करंवाई की एकता इसलिए चाहते हैं जिससे पूंजीपति वर्ग के खिलाफ सर्वहारा अपने संघर्ष में सबल हो सके, जिससे सर्वहारा अति हमलावर पूंजी से, फासिज्म से, अपने मौजूदा हितों की रक्षा करते हुए कल अपने अन्तिम उद्धार के लिए प्रारंभिक निर्माण करने की स्थिति में पहुंच जाय।

दूसरे कहते हैं: "कम्युनिस्ट तो हम पर हमला करते हैं।" लेकिन सुनिए, हम बार-बार ऐलान कर चुके हैं: हम ऐसे किसी भी व्यक्ति, संगठन या पार्टी पर हमला नहीं करेंगे जो वर्ग शत्रु के खिलाफ मजदूर वर्ग के संयुक्त मोर्चे का हामी हो। किन्तु साथ ही सर्वहारा और उसके लक्ष्य के हितों में उन व्यक्तियों, संगठनों और पार्टियों की आलोचना करना हमारा कर्तव्य है जो मजदूरों की करंवाई की एकता में रुकावटें खड़ी करते हों।

एक तीसरा समूह कहता है: "हम कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त मोर्चा नहीं बना सकते, क्योंकि उनके पास भिन्न कार्यक्रम है।" लेकिन आप खुद कहते हैं कि आपका कार्यक्रम पूंजीवादी पार्टियों के कार्यक्रम से भिन्न है, और फिर भी इसने आपको इन पार्टियों के साथ साझे में शरीक होने से न तो रोका है और न रोकता है।

"पूंजीवादी-जनवादी पार्टियां फासिज्म के खिलाफ कम्युनिस्टों से बेहतर मित्र हैं," यह बात कहते है संयुक्त मोर्चे के विरोधी और पूंजीपति वर्ग के साथ साझे के हिमायती। किन्तु जर्मनी का अनुभव क्या सिखाता है? क्या सामाजिक जनवादियों ने उन "बेहतर" मित्रों के साथ एक गुट नहीं बनाया था? और नतीजे क्या निकले?

"अगर हम कम्युनिस्टों के साथ एक संयुक्त [illegible] तो निम्न-पूंजीपति वर्ग के लोग 'लाल' खतरे से सहम जायेंगे [illegible] के मित्रों के…

साथ चले जायेंगे," ऐसा कहा जाता हम अक्सर ही सुनते हैं। लेकिन क्या संयुक्त मोर्चा किसानों, छोटे व्यापारियों, कारीगरों, मेहनतकश बुद्धिजीवियों के लिए खतरे का सूचक है ? नहीं, संयुक्त मोर्चा बड़े पूंजीपतियों, धनकुबेरों, सामंतों और अन्य शोषकों के लिए खतरा है, जिनकी हुकूमत इन तबकों को एकदम तहस-नहस कर देती है।

कुछ सामाजिक-जनवादी नेता कहते हैं : "सामाजिक-जनवाद जनतंत्र का समर्थक है, कम्युनिस्ट अधिनायकत्व के समर्थक हैं; इसलिए हम कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त मोर्चा नहीं बना सकते।" लेकिन क्या हम इस समय आपके सामने सर्वहारा के अधिनायकत्व की उद्घोषणा करने के उद्देश्य से संयुक्त मोर्चे की पेशकश कर रहे हैं ? इस समय हम कोई ऐसा प्रस्ताव नहीं रख रहे हैं।

"पहले कम्युनिस्ट जनवाद को स्वीकार करलें, इसके समर्थन में आगे आयें, तब हम संयुक्त मोर्चे के लिए तत्पर होंगे।" इसके जवाब में हम कहते हैं : हम सोवियत जनवाद के, मेहनतकश जनता के जनतंत्र के हिमायती हैं, जो संसार का सबसे सुसंगत जनवाद है। लेकिन पूंजीवादी देशों में हम उन पूंजीवादी-जनवादी आजादियों की एक-एक इंच रक्षा करते हैं और रक्षा करते रहेंगे, जिन पर फासिज्म और पूंजीवादी प्रतिक्रियावाद द्वारा हमला किया जा रहा है, क्योंकि सर्वहारा के वर्ग संघर्ष के हितों का यही आदेश है।

ग्रेट ब्रिटेन के लेबर नेता, मसलन, यह कहते हैं : "लेकिन क्या लेबर पार्टी द्वारा बनाये गये संयुक्त मोर्चे में शरीक होकर छोटी-छोटी कम्युनिस्ट पार्टियां कोई योगदान कर सकती हैं ?" याद कीजिए कि किस तरह ऑस्ट्रियाई सामाजिक-जनवादी नेता यही बात छोटी-सी ऑस्ट्रियाई कम्युनिस्ट पार्टी के बारे में कहते थे। और घटनाओं ने क्या दिखाया ? ऑस्ट्रियाई सामाजिक-जनवादी पार्टी सही नहीं सिद्ध हुई जिसका नेतृत्व ओटो बॉयर और रेनर कर रहे थे, बल्कि छोटी-सी ऑस्ट्रियाई कम्युनिस्ट पार्टी सही सिद्ध हुई जिसने सही समय पर ऑस्ट्रिया में फासिस्ट खतरे की चेतावनी दी थी और मजदूरों का आह्वान किया था कि वे उसके खिलाफ संघर्ष करें। मजदूर आन्दोलन के समूचे अनुभव ने सिद्ध कर दिया है कि अपनी अपेक्षाकृत अल्प सख्या के बावजूद कम्युनिस्ट सर्वहारा की जुझारू गतिविधि की प्रेरक शक्ति होते हैं। साथ ही यह नहीं भूलना होगा कि ऑस्ट्रिया या ग्रेट ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टियां महज वह दसियों हजार मजदूर नहीं हैं जो पार्टी के अनुयायी हैं बल्कि वे विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के हिस्से हैं, उस कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के अंग हैं, जिसकी अग्रणी पार्टी उस सर्वहारा की पार्टी है जो पहले ही विजय प्राप्त कर चुका है और भूमंडल के छठे भाग पर शासन कर रहा है।

"लेकिन संयुक्त मोर्चे ने साअर में फासिज्म को विजयी होने से नहीं रोका," यह संयुक्त मोर्चे के विरोधियों द्वारा पेश की जाने वाली एक अन्य आपत्ति है। इन महानुभावों का तर्क बड़ा अजीबोगरीब है। पहले तो ये फासिज्म की विजय सुनिश्चत बना देने में कोई कोर-कसर नहीं रखते और फिर इस लिए दुर्भावना भरी खुशी से फूले नहीं समाते कि वे जिस संयुक्त मोर्चे में आखिरी क्षण दाखिल हुए थे, वह मजदूरों को विजय की मंजिल तक नहीं ले जा सका।

विभिन्न देशों में मंत्रिमंडलीय पदों पर आसीन सामाजिक-जनवादी नेता कहते हैं: "अगर हमें कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाना हो तो हमें साझे से अलग होना पड़ेगा, और प्रतिक्रियावादी तथा फासिस्ट पार्टियां सरकार में दाखिल हो जायेंगी।" बहुत अच्छा। तो क्या जर्मन सामाजिक-जनवादी पार्टी साझा सरकार में शामिल नहीं थी? वह शामिल थी। क्या ऑस्ट्रियाई सामाजिक-जनवादी पार्टी पदारूढ़ नहीं थी? क्या स्पेनी सोशलिस्ट उसी सरकार में नहीं थे, जिसमें पूंजीपति शामिल थे? वे भी शामिल थे। क्या इन देशों में पूंजीवादी साझा सरकारों में सामाजिक-जनवादी पार्टियों की शिरकत ने फासिज्म को सर्वहारा पर हमला करने से रोका? नहीं रोका। फलतः, यह दिन की रोशनी की तरह साफ है कि पूंजीवादी सरकारों में सामाजिक-जनवादी मंत्रियों की शिरकत फासिज्म के रास्ते में दीवार नहीं है।

"कम्युनिस्ट तानाशाहों की तरह काम करते हैं, वे हमें हर चीज की हिदायत और निर्देश देना चाहते हैं।" नहीं। हम कोई हिदायत नहीं देते, हम कोई निर्देश नहीं देते। हम सिर्फ अपने प्रस्ताव सामने रखते हैं क्योंकि हमें विश्वास होता है कि अगर ये पूरे कर लिये गये तो उनसे मेहनतकश जनता के हित सिद्ध होंगे। उन सभी लोगों का, जो मजदूरों के नाम पर काम कर रहे हों, यह न सिर्फ अधिकार बल्कि कर्तव्य भी है। आप कम्युनिस्टों की "तानाशाही" से डरते हैं? तो आइए, हम मिल कर सारे प्रस्ताव, आप के और हमारे प्रस्ताव, मजदूरों के सामने पेश कर दें, उन पर मजदूरों के साथ-साथ मिल कर बहस करें, और उन प्रस्तावों को चुनें जो मजदूर वर्ग के ध्येय के लिए सबसे ज्यादा फायदेमंद हों।

इस तरह संयुक्त मोर्चे के खिलाफ दी जाने वाली ये सम्पूर्ण दलीलें हल्की से हल्की आलोचना के सामने नहीं टिक पातीं। ये तो दरअसल सामाजिक-जनवाद के उन प्रतिक्रियावादी नेताओं के खोखले बहाने हैं, जो सर्वहारा के संयुक्त मोर्चे के मुकाबले पूंजीपति वर्ग के साथ अपने संयुक्त मोर्चे को पसंद करते हैं।

नहीं। ये दलीलें कसौटी पर खरी नहीं उतरेंगी। अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा मजदूर वर्ग में फूट से उत्पन्न पीड़ा को भुगत चुका है और इस बात मे उसका

विश्वास अधिकाधिक दृढ़ होता जाता है कि संयुक्त मोर्चा, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर सर्वहारा की कार्रवाई की एकता, आवश्यक भी है और सर्वथा सम्भव भी है।

संयुक्त मोर्चे की अन्तर्वस्तु और उसके रूप

मौजूदा मंजिल में संयुक्त मोर्चे की क्या बुनियादी अन्तर्वस्तु है और होनी चाहिए? मजदूर वर्ग के फौरी आर्थिक और राजनीतिक हितों की रक्षा करना, फासिज्म के खिलाफ मजदूर वर्ग की रक्षा करना ही सारे पूंजीवादी देशों में संयुक्त मोर्चे का आरंभ बिंदु और मुख्य अन्तर्वस्तु होनी चाहिए।

हमें महज सर्वहारा के अधिनायकत्व के लिए अपीलों तक ही अपने को सीमित नहीं कर लेना चाहिए। जनता के जीवंत हितों से, विकास के वर्तमान चरण में उनकी लड़ने की क्षमता के स्तर से, उत्पन्न होने वाले संघर्ष के नारों और रूपों को खोजना और प्रस्तुत करना चाहिए।

हमें अवाम को यह बताना चाहिए कि उन्हें पूंजीवादी लूट-खसोट और फासिस्ट बर्बरता से अपनी रक्षा करने के लिए आज क्या करना चाहिए।

हमें श्रमरत जनगण के जीवंत हितों की रक्षार्थ मजदूरों के विभिन्न प्रवृत्तियों वाले संगठनों की संयुक्त कार्रवाई की मदद से व्यापकतम संयुक्त मोर्चे कायम करने का प्रयास करना चाहिए। इसका अर्थ है:

एक, संकट के कुपरिणामों का भार वास्तव में शासक वर्गों के कंधों पर, पूंजीपतियों और भूस्वामियों के कंधों पर—एक शब्द में, धनिकों के कंधों पर—डालने के लिए संयुक्त संघर्ष।

दूसरे, फासिस्ट हमले के खिलाफ, मेहनतकशों की जीतों और अधिकारों की रक्षार्थ, पूंजीवादी-जनवादी आजादियों की समाप्ति के खिलाफ संयुक्त संघर्ष।

तीसरे, साम्राज्यवादी युद्ध के बढ़ते हुए खतरे के खिलाफ संयुक्त संघर्ष, ऐसा संघर्ष जो इस प्रकार के युद्ध की तैयारी कर सकना अधिक कठिन बना दे।

हमें स्थिति में तब्दीली आने पर संघर्ष के रूपों और तरीकों में तेजी से तब्दीली लाने के लिए मजदूर वर्ग को अथक रूप में तैयार करना चाहिए। जैसे-जैसे आन्दोलन बढ़ता है और मजदूर वर्ग की एकता सुदृढ़ होती है, वैसे-वैसे हमें आगे बढ़ते जाना चाहिए तथा पूंजी के खिलाफ रक्षात्मक से आक्रामक स्थिति में संक्रमण की तैयारी करनी चाहिए और सामूहिक राजनीतिक हड़ताल संगठित करने की ओर बढ़ना चाहिए। ऐसी हड़ताल की सबसे बड़ी

शर्त यह होनी चाहिए कि वह अपने देश की मुख्य ट्रेड यूनियनों को मैदान मे उतारे।

कम्युनिस्ट निस्संदेह जन समुदाय की कम्युनिस्ट शिक्षा, संगठन और लामबंदी का अपना स्वतंत्र कार्य एक पल के लिए भी नहीं छोड़ सकते और न छोड़ना चाहिए। बहरहाल, इस बात की सुनिश्चित व्यवस्था करने के लिए कि मजदूर कार्रवाई की एकता का रास्ता पा सकें, यह आवश्यक है कि अल्पकालीन और दीर्घकालीन दोनों तरह के समझौतों के प्रयास किये जायें, जिससे सर्वहारा के वर्ग शत्रुओं के विरुद्ध सामाजिक-जनवादी पार्टियों, सुधारवादी ट्रेड यूनियनों और मेहनतकशों के अन्य संगठनों के साथ संयुक्त कार्रवाई की व्यवस्था हो सके। इस सब में मुख्यतः स्थानीय तौर पर ऐसी जन कार्रवाई विकसित करने पर जोर दिया जाना चाहिए जिसे स्थानीय समझौतों के आधार पर स्थानीय संगठनों के जरिये चलाया जाय। उनके साथ किये गये सारे समझौतों की शर्तों को तो हम वफादारी के साथ निभायेंगे, लेकिन संयुक्त मोर्चे में शरीक होने वाले व्यक्तियों और संगठनों द्वारा किये जाने वाले संयुक्त कार्रवाई के भीतरघात का बेरहमी के साथ पर्दाफाश करेंगे। अगर समझौतों को तोड़ने की कोई कोशिश की गयी—और सम्भव है, ऐसी कोशिशें की जायें—तो हम उसके जवाब में टूटी हुई कार्रवाई की एकता की बहाली के लिए अथक संघर्ष जारी रखते हुए आम जनता से अपील करेंगे।

यह कहना जरूरी नही कि संयुक्त मोर्चे के व्यावहारिक स्वरूप विभिन्न देशों में भिन्न-भिन्न रूपों में सामने आयेंगे और वे मजदूरों के संगठनों की अवस्था और चरित्र तथा उनकी राजनीतिक चेतना, देश विशेष की ठोस स्थिति, अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन में आ रही तब्दीलियों, आदि पर निर्भर होंगे।

इन रूपों में, मसलन, ये बातें शामिल हो सकती हैं : निश्चित मौकों पर, अलग-अलग मांगों पर या आम मंच के आधार पर मजदूरों की समन्वित संयुक्त कार्रवाई, जिसके बारे में हर मामले में अलग-अलग फैसले किये जायें; अलग-अलग उद्यमों में या पूरे के पूरे उद्योगों द्वारा समन्वित कार्रवाइयां; स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर समन्वित कार्रवाइयां; मजदूरों के आर्थिक संघर्ष के संगठन के लिए, जन राजनीतिक कार्रवाइयां संपन्न करने के लिए, फासिस्ट हमलों के खिलाफ संयुक्त आत्मरक्षा संगठित करने के लिए, समन्वित कार्रवाइयां; राजनीतिक बंदियों और उनके परिवारों को इमदाद के मामले में, सामाजिक प्रतिक्रियावाद के खिलाफ संघर्ष के क्षेत्र में सम[illegible] कार्रवाइयां; नौजवानों और महिलाओं के हितों की रक्षार्थ, सहकारी आन्[illegible], सांस्कृतिक कार्यकलाप, खेलकूद, आदि के क्षेत्र में संयुक्त कार्रवाइयां।

संयुक्त कार्रवाई संबंधी समझौता करके तथा संयुक्त मोर्चे में [illegible]

वाली पार्टियों और संगठनों से बनी संपर्क समितियां गठित करके, जैसी कि मसलन हमने फ्रांस में गठित की हैं, संतोष कर लेना हमारे लिए नाकाफी होगा। यह तो महज पहला कदम है। समझौता तो संयुक्त कार्रवाई को अमली रूप देने का एक सहायक साधन मात्र है, स्वतः वह संयुक्त मोर्चा नहीं है। कम्युनिस्ट और समाजवादी पार्टियों के नेताओं के बीच एक संपर्क आयोग संयुक्त कार्रवाई में आसानी पैदा करने के लिए जरूरी है, स्वतः यह संयुक्त मोर्चे के वास्तविक विकास के लिए, फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में विशालतम आम जनता को खींच कर लाने के लिए, कतई नाकाफी है।

कम्युनिस्ट और सभी क्रान्तिकारी मजदूरों को कारखानों में, बेरोजगारों के बीच, मजदूर वर्ग-प्रधान जिलों में, छोटे नगरवासियों के बीच तथा गांवों में संयुक्त मोर्चे के गैर-पार्टी वर्ग निकायों के गठन के लिए प्रयास करना चाहिए जो निर्वाचन पर आधारित हों (तथा फासिस्ट तानाशाही के देशों में—संयुक्त मोर्चा आन्दोलन में भाग लेने वाले सबसे अधिकारिक लोगों के बीच से चुने हुए हों)। ऐसे निकाय ही संयुक्त मोर्चा आन्दोलन में गैर-संगठित मेहनतकशों के भी विशाल हिस्सों को समाविष्ट कर सकेंगे, पूंजी के हमले के खिलाफ, फासिज्म और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ संघर्ष में जन समुदाय की पहल को विकसित करने में सहायक हो सकेंगे, और इस आधार पर संयुक्त मोर्चे के लिए जरूरी व्यापक सक्रिय कतारें खड़ी कर सकेंगे तथा पूंजीवादी देशों में सैकड़ों और हजारों गैर-पार्टी बोल्शेविकों को प्रशिक्षित कर सकेंगे।

संगठित मजदूरों की संयुक्त कार्रवाई, आधारशिला की शुरूआत है। मगर हमें इस बात को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए कि मजदूरों का विशाल बहुमत गैर-संगठित समुदाय का है। जैसे, फ्रांस मे संगठित मजदूरों—कम्युनिस्टों, समाजवादियों, विभिन्न रुझानों के ट्रेड यूनियन सदस्यों—की संख्या कुल मिला कर लगभग दस लाख है, जबकि मजदूरों की कुल संख्या एक करोड़ दस लाख है। ग्रेट ब्रिटेन में विभिन्न रुझानों की ट्रेड यूनियनों और पार्टियों के लगभग पचास लाख सदस्य हैं। साथ ही मजदूरों की कुल संख्या एक करोड़ चालीस लाख है। संयुक्त राज्य अमरीका में लगभग पचास लाख मजदूर संगठित हैं जबकि देश में कुल तीन करोड़ अस्सी लाख मजदूर हैं। कई अन्य देशों में लगभग यही अनुपात है। "सामान्य" समय में मुख्यतः यह समुदाय राजनीतिक जीवन मे भाग नहीं लेता। मगर अब यह विराट समुदाय अधिकाधिक गतिशील हो रहा है, राजनीतिक जीवन में उतारा जा रहा है, राजनीति के अखाड़े में आ रहा है।

गैर-पक्षधर वर्ग निकायों का गठन करना व्यापकतम समुदाय की कतारों के बीच संयुक्त मोर्चे को संगठित, विस्तृत और सुदृढ़ करने का सर्वोत्तम रूप

है। इसी प्रकार ये निकाय संयुक्त मोर्चे के विरोधियों द्वारा मजदूर वर्ग की बढ़ती हुई अमली एकता को तोड़ने की हर कोशिश के खिलाफ सर्वोत्तम दुर्ग का काम करेंगे।

फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चा

फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में मेहनतकश जनता के विशाल समुदाय को लामबंद करने में, **सर्वहारा संयुक्त मोर्चे के आधार पर व्यापक फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे** का गठन करना खास तौर से महत्वपूर्ण कर्तव्य है। सर्वहारा के पूरे संघर्ष की सफलता एक ओर सर्वहारा दूसरी ओर मेहनतकश किसानों और शहरी निम्न-पूंजीपतियों के बुनियादी समुदाय के बीच—जिनका औद्योगिक दृष्टि से विकसित देशों की आबादी में भी बहुमत है—जुझारू मैत्री की स्थापना से घनिष्ठ रूप से जुड़ी है।

इन समुदायों को अपने पक्ष में लाने के लिए लालायित फासिज्म अपने प्रचार के दौरान शहरों और गांवों की मेहनतकश जनता को क्रान्तिकारी सर्वहारा के विरुद्ध करने की कोशिश करता है और निम्न-पूंजीपति वर्ग को "लाल खतरे" के होवे से डराता है। **हमें यह हथियार उन्हीं के खिलाफ मोड़ देना चाहिए जो इसे चलाते हैं** और मेहनतकश किसानों, कारीगरों तथा बुद्धि-जीवियों को यह बताना चाहिए कि असली खतरा किधर से है। हमें इस बात को ठोस तौर पर दिखाना चाहिए कि वह कौन है जो किसान पर टैक्सों और महसूलों का बोझ लादता है और उससे सूदखोरी के ढंग से ब्याज वसूलता है; वह कौन है जो सबसे अच्छी जमीन और हर प्रकार के धन-धान्य का मालिक बन बैठता है और किसान और उसके परिवार को उसकी जोत से वंचित करता है और उसे बेरोजगारी और कंगाली का शिकार बनाता है। हमें इस बात को ठोस तौर पर, धीरज और लगन के साथ समझाना चाहिए कि वह कौन है जो कारीगरों और दस्तकारों को ऐसे टैक्सों, महसूलों, ऊंचे भाड़ों और होड़ के जरिये तबाह करता है जिन्हें झेल सकना उनके लिए नामुमकिन है; वह कौन है जो मेहनतकश बुद्धिजीवियों के विशाल समुदाय को सड़क पर ला खड़ा करता है और उनको रोजगार से वंचित कर देता है। लेकिन यही पर्याप्त नहीं है।

फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चा कायम करने में आधारभूत, सबसे निर्णायक, चीज यह है कि जनता के इन तबकों, खास तौर पर मेहनतकश किसान समुदाय की मांगों की रक्षार्थ—ऐसी मांगों की रक्षार्थ जो सर्वहारा के बुनियादी हितों से मेल खाती हैं—**क्रान्तिकारी सर्वहारा दृढ़संकल्प होकर कार्रवाई करे** तथा संघर्ष के दौर में मजदूर वर्ग की मांगों को इन मांगों के साथ संयुक्त किया जाय।

फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे के गठन में उन संगठनों और पार्टियों के प्रति सही दृष्टिकोण का अत्यधिक महत्व है, जिनकी सदस्यता में मेहनतकश किसानों की खासी बड़ी संख्या और शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग का व्यापक हिस्सा शामिल है।

पूंजीवादी देशों में राजनीतिक और आर्थिक दोनों ही प्रकार की इन पार्टियों और संगठनों का अधिकांश अभी भी पूंजीपति वर्ग के प्रभाव में है और उसके पीछे चलता है। इन पार्टियों और संगठनों का सामाजिक गठन विषम है। उनमें धनी किसानों के साथ-साथ भूमिहीन किसान, बड़े व्यापारियों के साथ-साथ छोटे दुकानदार शामिल हैं; मगर नियंत्रण धनी किसानों और बड़े व्यापारियों के हाथों में होता है, जो कि बड़ी पूंजी के दलाल हैं। इसलिए हमारे लिए यह जरूरी है कि हम यह याद रखते हुए कि सदस्यों का बड़ा हिस्सा अक्सर अपने नेतृत्व के वास्तविक राजनीतिक चरित्र को नजरअंदाज कर देता है, अलग-अलग संगठनों के पास अलग-अलग तरीकों से पहुंचें। कुछ खास परिस्थितियों में हम *इन पार्टियों और संगठनों को, या उनके कुछ खास तबकों को, उनके पूंजीवादी नेतृत्व के बावजूद फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे के* पक्ष में खींच लाने का प्रयास कर सकते हैं और हमें करना चाहिए। मसलन फ्रांस में रैडिकल पार्टी के साथ, संयुक्त राज्य अमरीका में विविध कृषक संगठनों के साथ, पोलेंड में 'स्त्रोनिक्त्वो लुदोवे" (अर्थात जनता पार्टी; कृषक प्रधान जनवादी पार्टी जिसने अगस्त १६३७ में किसानों की आम हड़ताल का नेतृत्व किया—अनु.) के साथ, यूगोस्लावाकिया में क्रोशियन कृषक पार्टी के साथ, बुलगारिया में खेतिहर यूनियन के साथ, ग्रीस में कृषकवादियों आदि के साथ यही स्थिति है। मगर इस बात पर ध्यान दिये बिना कि *इन पार्टियों और संगठनों को पूरा का पूरा जन मोर्चे की ओर आकृष्ट कर सकने की कोई सम्भावना है या नहीं, सभी परिस्थितियों में हमारी कार्यनीति उनके सदस्यों में* पाये जाने वाले छोटे किसानों, कारीगरों, दस्तकारों आदि को फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे में खींच लाने की ही होनी चाहिए।

इसलिए आप देखते हैं कि इस क्षेत्र में हमें उस बात को आदि से अन्त तक समाप्त कर देना चाहिए जो हमारे काम में अक्सर ही घटित होती रही है—किसानों, कारीगरों तथा शहरों के निम्न-पूंजीवादी समुदाय के विविध संगठनों और पार्टियों की उपेक्षा या तिरस्कार।

अलग-अलग देशों में संयुक्त मोर्चे से संबंधित मूल प्रश्न

हर देश में कुछ ऐसे मूल प्रश्न हैं जो मौजूदा मंजिल में आबादी के विशाल बहुमत को आन्दोलित कर रहे हैं और जिनके गिर्द संयुक्त मोर्चे की स्थापना के

संघर्ष को विकसित किया जाना चाहिए। अगर इन मूल मुद्दों या मूल प्रश्नों को ठीक-ठीक ग्रहण कर लिया जाता है, तो इससे संयुक्त मोर्चे की स्थापना सुनिश्चित होगी और उसकी गति में तेजी आयेगी।

संयुक्त राज्य अमरीका

मसलन, आइए हम पूंजीवादी जगत के संयुक्त राज्य अमरीका जैसे महत्वपूर्ण देश को लें। वहां संकट के कारण लाखों लोग गतिशील हो गये हैं। पूंजीवाद की बहाली का कार्यक्रम धूल में मिल गया है। विशाल जन समुदाय पूंजीवादी पार्टियों का परित्याग करने लगे हैं और इस समय चौराहे पर खड़े हैं।

भ्रूणावस्था का अमरीकी फासिज्म इस जन समुदाय के मोहभंग और असंतोष को प्रतिक्रियावादी फासिस्ट दिशाओं में मोड़ने के लिए प्रयत्नशील है। अमरीकी फासिज्म के विकास की यह विलक्षणता है कि मौजूदा दौर में यह प्रधानतः फासिज्म के विरोध के वेश में सामने आ रहा है और यह उस पर यह आरोप लगा रहा है कि वह विदेश से आयात की गयी "गैर-अमरीकी" प्रवृत्ति है। जर्मन फासिज्म के विपरीत, जो संविधान-विरोधी नारों के तहत कार्य करता है, अमरीकी फासिज्म स्वयं को संविधान और "अमरीकी जनवाद" के रक्षक के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश करता है। यह अभी तक प्रत्यक्षतः खतरा पैदा करने वाली शक्ति नहीं है। लेकिन अगर यह उन व्यापक जनसमुदायों में घुस पाने में सफल हो जाता है जिनका पुरानी पूंजीवादी पार्टियों से मोहभंग हो गया है, तो वह अत्यन्त निकट भविष्य में एक गंभीर खतरा बन सकता है।

और संयुक्त राज्य अमरीका में फासिज्म की विजय का क्या अर्थ होगा? मेहनतकश जन समुदाय के लिए निश्चय ही इसका अर्थ होगा शोषण की सत्ता का अभूतपूर्व शक्ति प्राप्त कर लेना तथा मजदूर वर्ग आन्दोलन का नष्ट कर दिया जाना। और फासिज्म की इस विजय का अन्तर्राष्ट्रीय महत्व क्या होगा? जैसा कि हम जानते हैं, संयुक्त राज्य अमरीका न तो हंगेरी है, न फिनलैंड, न बुलगारिया और न लैटविया। संयुक्त राज्य अमरीका में फासिज्म की विजय समूची अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति को बहुत अधिक बदल देगी।

ऐसी परिस्थितियों में क्या अमरीकी सर्वहारा महज अपने उस वर्ग चेतन हिरावल को संगठित करके संतोष कर ले सकता है, जो क्रान्तिकारी पथ पर चलने को तैयार है? नहीं।

यह सर्वथा स्पष्ट है कि अमरीकी सर्वहारा के हितों का यह तकाजा है कि उसकी सारी शक्तियां अविलम्ब पूंजीवादी पार्टियों से अपना नाता तोड़ लें। उसे विशाल असंतुष्ट मेहनतकश जन समुदाय पर फासिज्म की विजय को

रोकने के लिए समय रहते तरीकों और उपयुक्त रूपों की खोज कर लेनी चाहिए। और यहां यह अवश्य कह दिया जाना चाहिए कि अमरीकी परिस्थितियों में मेहनतकश जनता की एक जन पार्टी, एक मजदूर और किसान पार्टी का निर्माण इस प्रकार का उपयुक्त रूप सिद्ध हो सकता है। ऐसी पार्टी अमरीका में सामूहिक जन मोर्चे का एक विशिष्ट रूप होगी तथा उसे ट्रस्टों और बैंकों के, तथा इसी प्रकार बढ़ते हुए फासिज्म के, विरोध में खड़ा किया जाना चाहिए। निस्संदेह ऐसी पार्टी न तो समाजवादी होगी और न कम्युनिस्ट। मगर उसे अवश्य ही फासिस्ट-विरोधी पार्टी होना चाहिए तथा कम्युनिस्ट-विरोधी पार्टी कतई नहीं होना चाहिए। इस पार्टी का कार्यक्रम बैंकों, ट्रस्टों और इजारेदारियों के खिलाफ लक्षित होना चाहिए, जो जनता की मुसीबतों के साथ जुआ खेल रहे हैं। ऐसी पार्टी अपने नाम का औचित्य तभी सिद्ध करेगी जबकि वह मजदूर वर्ग की फौरी मांगों की रक्षा करे; जबकि वह सच्चे सामाजिक कानूनों के लिए, बेरोजगारी के बीमे के लिए, लड़े; जबकि वह गोरे और काले बंटाइदारों को भूमि दिलाने तथा कर्जों के बोझ से उन्हें मुक्त कराने के लिए लड़े; जबकि वह किसानों की कर्जदारी खत्म कराने के लिए लड़े; जबकि वह नीग्रो लोगों को बराबरी का दर्जा दिलाने के लिए लड़े; जबकि वह युद्ध-वीरों की मांगों तथा गैर-तकनीकी पेशों के सदस्यों, छोटे व्यापारियों और कारीगरों के हितों की रक्षा करे। इत्यादि-इत्यादि।

यह कहना जरूरी नहीं कि ऐसी पार्टी स्थानीय शासन में, राज्य विधान सभाओं में, हाउस ऑफ रिप्रजेंटेटिव्स और सीनेट में स्वयं अपने प्रतिनिधियों के चुने जाने के लिए लड़ेगी।

संयुक्त राज्य अमरीका के हमारे साथियों ने ऐसी पार्टी की स्थापना में पहल करके सही कदम उठाया है। मगर उन्हें अभी भी ऐसी पार्टी के निर्माण कार्य को स्वयं सर्वसाधारण का लक्ष्य बनाने के लिए कारगर उपाय करने बाकी हैं। मजदूरों और किसानों की पार्टी के निर्माण के सवाल और उसके कार्यक्रम पर जनता की सामूहिक सभाओं मे विचार-विमर्श किया जाना चाहिए। ऐसी पार्टी के गठन के लिए हमें व्यापकतम आन्दोलन विकसित करना चाहिए और इस कार्य में अगुवाई करनी चाहिए। किसी भी देश में इस पार्टी को संगठित करने की पहल उन तत्वो के हाथ में नहीं जाने देनी चाहिए जो ऐसे लाखों लोगों के असंतोष का इस्तेमाल करने को तैयार हैं जिनका अमरीका की डेमोक्रेटिव और रिपब्लिकन, दोनों पूंजीवादी पार्टियों, से मोहभंग हो गया है; ये लोग संयुक्त राज्य अमरीका में एक कम्युनिस्ट-विरोधी पार्टी, क्रान्तिकारी आन्दोलन के खिलाफ लक्षित पार्टी, के रूप में एक "तीसरी पार्टी" का निर्माण करना चाहते हैं।

ग्रेट ब्रिटेन

ग्रेट ब्रिटेन में ब्रिटिश मजदूरों की जन कार्रवाई के फलस्वरूप मोस्ले का फासिस्ट संगठन फिलहाल पृष्ठभूमि में धकेल दिया गया है। मगर हमें इस तथ्य से आंखें नहीं मूंद लेनी चाहिए कि तथाकथित "राष्ट्रीय सरकार" ऐसे अनेक प्रतिक्रियावादी कानून बना रही है जो मजदूर वर्ग के खिलाफ लक्षित हैं और जिनके फलस्वरूप ग्रेट ब्रिटेन में भी ऐसी परिस्थितियां निर्मित हो रही है जिनके कारण यदि आवश्यक हुआ तो पूंजीपति वर्ग के लिए फासिस्ट राज में संक्रमण कर लेना ज्यादा आसान होगा।

मौजूदा दौर में ग्रेट ब्रिटेन में फासिज्म के खतरे से लड़ने का अर्थ है प्रथमत: "राष्ट्रीय सरकार" और उसके प्रतिक्रियावादी कदमों से लड़ना, पूंजी के हमले से लड़ना, बेरोजगारों की मांगों के लिए लड़ना, वेतन कटौतियों के खिलाफ तथा उन कानूनों की मंसूखी के लिए लड़ना जिनकी मदद से ब्रिटिश पूंजीपति वर्ग आम जनता के रहन-सहन के स्तर को नीचे गिरा रहा है।

किन्तु "राष्ट्रीय सरकार" के प्रति मजदूर वर्ग की बढ़ती हुई घृणा के कारण अधिकाधिक संख्या में लोग ग्रेट ब्रिटेन में एक नयी लेबर सरकार के निर्माण के नारे के तहत ऐक्यबद्ध हो रहे हैं। क्या कम्युनिस्ट उन जन साधारण की मनोदशा को नजरअंदाज कर सकते हैं जिनके भीतर अभी भी लेबर सरकार के प्रति आस्था बनी हुई है? नहीं, साथियो। हमें इन जन समुदायों तक पहुंचने का रास्ता खोजना होगा। हम उनसे खुले आम कह दें, जैसा कि ब्रिटिश कम्युनिस्ट पार्टी की तेरहवी कांग्रेस ने किया है, कि हम कम्युनिस्ट पूंजी के जुए से मजदूरों को त्राण दिलाने की क्षमता रखने वाले शासन के एकमात्र स्वरूप, अर्थात सोवियत स्वरूप, के पक्ष में हैं। लेकिन, आप लेबर सरकार चाहते हैं? ठीक है। हम 'राष्ट्रीय सरकार" को शिकस्त देने के लिए आपके कंधे से कंधा मिला कर लड़ते रहे हैं और लड़ रहे हैं। हम एक नयी लेबर सरकार के निर्माण के लिए आपकी लड़ाई का समर्थन करने को तैयार है, बावजूद इस तथ्य के कि पहले की दोनो लेबर सरकारें मजदूर वर्ग से किये गये लेबर पार्टी के वायदों को पूरा करने में असफल रही है। हम यह आशा नहीं करते कि यह सरकार समाजवादी कदम उठायेगी। मगर लाखों मजदूरों के नाम पर उसके सामने हम यह मांग अवश्य रखेंगे कि वह मजदूर वर्ग और समस्त मेहनतकशों के सर्वाधिक आवश्यक आर्थिक और राजनीतिक हितों की रक्षा करे। आइए, हम मिल कर ऐसी मांगों के एक सामान्य कार्यक्रम पर विचार-विमर्श करें, और आइए, "राष्ट्रीय सरकार" के प्रतिक्रियावादी हमले को, पूंजी और फासिज्म के हमले को और नये युद्ध की तैयारियों को पछाड़ने के लिए सर्वहारा को कार्रवाई की जिस एकता की जरूरत है, उसे कायम करें। ब्रिटिश साथी

आगामी संसदीय चुनाव में इस आधार पर "राष्ट्रीय सरकार" के खिलाफ, तथा लॉयड जॉर्ज के भी खिलाफ—जो ब्रिटिश पूंजीपति वर्ग के हित में अपने ही तरीके से जनता को मजदूर वर्ग के लक्ष्य के विरुद्ध अपने पीछे लाने के लिए सचेष्ट है—लेबर पार्टी की शाखाओं के साथ सहयोग करने को तैयार है।

ब्रिटिश कम्युनिस्टों का रुख दुरुस्त है। यह उनके लिए ब्रिटिश ट्रेड यूनियनों और लेबर पार्टी के लाखों सदस्यों के साथ एक जंगजू संयुक्त मोर्चा कायम करने में सहायक होगा। कम्युनिस्टों को सदा जुझारू सर्वहारा की अगली कतारों में रहना चाहिए तथा जनता को एकमात्र सही रास्ता—पूंजीपति वर्ग के शासन को उखाड़ फेंकने के क्रान्तिकारी कर्तव्य और सोवियत शासन की स्थापना के लिए संघर्ष का रास्ता—दिखाना चाहिए, तथा साथ साथ अपने फौरी राजनीतिक लक्ष्यों को निर्धारित करते समय जन आन्दोलन के उन आवश्यक चरणों को लाघ जाने की कोशिश कतई नही करनी चाहिए जिनके दौरान मजदूर वर्ग स्वयं अपने अनुभव से अपने भ्रमों पर पार पाता है और कम्युनिज्म की ओर बढ़ता है।

फ्रांस

जैसा कि हम जानते हैं, फ्रांस एक ऐसा देश है जहां मजदूर वर्ग संपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा के सामने इस बात की मिसाल पेश कर रहा है कि फासिज्म से कैसे लड़ा जाय। फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के सभी हिस्सों के सामने इस बात की मिसाल पेश कर रही है कि संयुक्त मोर्चे की कार्यनीति को किस तरह लागू किया जाना चाहिए; समाजवादी मजदूर इस बात की मिसाल पेश कर रहे हैं कि फासिज्म के खिलाफ लड़ाई में इस समय अन्य पूंजीवादी देशों के सामाजिक-जनवादी मजदूरों को क्या करना चाहिए।

इस वर्ष १४ जुलाई को पेरिस में हुए फासिज्म-विरोधी प्रदर्शन का, जिसमें पांच लाख लोगों ने भाग लिया, तथा अन्य फ्रांसीसी शहरों में हुए अनगिनत प्रदर्शनों का अपार महत्व है।

यह मजदूरों का संयुक्त मोर्चा आन्दोलन मात्र नही है; यह फ्रांस में फासिज्म के खिलाफ एक विराट आम जन मोर्चे की शुरुआत है। इस संयुक्त मोर्चा आन्दोलन से मजदूर वर्ग में स्वयं अपनी शक्तियों के प्रति विश्वास बढ़ता है; वह किसानों, शहरी निम्न-पूंजीपतियों और बुद्धिजीवियों के संदर्भ में जो नेतृत्वकारी भूमिका अदा कर रहा है उसके प्रति उसकी चेतना को बल मिलता है, आम मजदूर वर्ग के बीच कम्युनिस्ट पार्टी का प्रभाव विस्तृत होता है और इस कारण फासिज्म के खिलाफ लड़ाई में सर्वहारा वर्ग अधिक मजबूत होता

है। यह, समय रहते, फासिज्म के खतरे के प्रति आम जनता को चौकस कर रहा है। और, यह अन्य पूंजीवादी देशों मे फासिज्म-विरोधी संघर्ष के विकास के लिए एक संक्रामक मिसाल का काम करेगा तथा फासिस्ट तानाशाही द्वारा उत्पीड़ित जर्मनी के सर्वहारा जनों पर उत्साहवर्धक प्रभाव डालेगा।

यह कहना जरूरी नही कि यह एक बड़ी जीत है; फिर भी इसी से फासिज्म-विरोधी संघर्ष के मसले का फैसला नही हो जाता। इसमें संदेह नहीं कि फ्रांसीसी जनता का अत्यन्त विशाल बहुमत फासिज्म के विरुद्ध है। मगर पूंजीपति वर्ग सशस्त्र शक्ति के बल पर जन इच्छा का उल्लंघन करने में सफल होता है। फासिस्ट आन्दोलन पूर्ण स्वतन्त्रता के साथ, इजारेदार पूंजी, पूंजीपति वर्ग के राज्य यंत्र, फ्रांसीसी सेना के जनरल स्टाफ तथा सारी प्रतिक्रिया के दुर्ग—कैथोलिक चर्च—के प्रतिक्रियावादी नेताओं के सक्रिय समर्थन से विकसित हो रहा है। सबसे शक्तिशाली फासिस्ट संगठन क्रोई दे फ्यू की कमान में इस समय ३,००,००० हथियारबंद लोग हैं जिसका मेरुदंड सुरक्षित दल के ६०,००० अफसर हैं। पुलिस, सशस्त्र पुलिस, स्थल सेना, वायु सेना और सारे सरकारी कार्यालयों में शक्तिशाली स्थितियां उसके हाथ में हैं। हाल के नगरपालिका चुनाव ने यह दिखा दिया है कि फ्रांस में क्रान्तिकारी शक्तियां ही नहीं, बल्कि फासिज्म की शक्तियां भी बढ़ रही हैं। अगर फासिज्म किसान समुदाय में व्यापक तौर पर घुसने और स्थल सेना के एक तबके का समर्थन पाने में सफल हो जाता है जब कि सेना का दूसरा तबका तटस्थ बना रहता है, तो फ्रांस की मेहनतकश जनता फासिस्टों को सत्ता में आने से रोक नही सकेगी। साथियो, फ्रांस के श्रमिक आन्दोलन की संगठनात्मक कमजोरी को न भूलिए जो फासिस्ट हमले को सुगम बनाती है। फ्रांस के मजदूर वर्ग और सभी फासिस्ट-विरोधियों के पास अब तक हासिल किये गये नतीजों पर संतुष्ट होने के लिए कोई आधार नही है।

फ्रांस के मजदूर वर्ग के सामने कौन-से कर्तव्य उपस्थित है?

पहला, संयुक्त मोर्चा—न सिर्फ राजनीतिक क्षेत्र में बल्कि आर्थिक क्षेत्र में भी—कायम करना, ताकि पूंजीवादी हमले के खिलाफ संघर्ष संगठित किया जा सके और उसके दबाव से सुधारवादी कान्फेडरेशन ऑफ लेबर के नेताओं द्वारा किये जा रहे संयुक्त मोर्चे के प्रतिरोध को तोड़ा जा सके।

दूसरा, फ्रांस में ट्रेड यूनियन एकता—वर्ग संघर्ष पर आधारित संयुक्त ट्रेड यूनियन कायम करना।

तीसरा, किसानों के व्यापक हिस्से और निम्न-पूंजीपति वर्ग को फासिस्ट-विरोधी आन्दोलन में लाना, और इसके लिए फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे के कार्यक्रम में उनकी फौरी मांगों पर विशेष ध्यान देना।

चौथा, *फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे के गैर-पक्षपर निर्वाचित निकायों का* व्यापक निर्माण करके फासिस्ट-विरोधी आन्दोलन को, जो पहले ही विकसित हो चुका है, संगठनात्मक दृष्टि से सुदृढ़ करना तथा अधिक विस्तृत करना। इस मोर्चे का प्रभाव फ्रांस की मेहनतकश जनता की मौजूदा पार्टियों और संगठनों में जो जन समुदाय आ जाते हैं, उनसे भी ज्यादा व्यापक जन समुदाय *में फैल जायेगा।*

पांचवां, फासिस्ट संगठनों को गणराज्य के खिलाफ साजिश करने वालों तथा फ्रांस में हिटलर के दलालों का संगठन करार दिया जाय और उनको भंग और निरस्त्र किया जाना अवश्यम्भावी कर दिया जाय।

छठा, यह सुनिश्चित कर लेना कि राज्य यंत्र, सेना और पुलिस से उन *षड्यंत्रकारियों का सफाया कर दिया जायगा जो फासिस्ट सत्ता अपहरण की* तैयारी कर रहे हैं।

सातवां, उस कैथोलिक चर्च के प्रतिक्रियावादी गुटों के नेताओं के खिलाफ संघर्ष विकसित करना जो कि फ्रांसीसी फासिज्म के सबसे महत्वपूर्ण दुर्गों में से एक है।

आठवां, सेना को फासिस्ट-विरोधी आन्दोलन से संबद्ध किया जाय और इसके लिए गणराज्य तथा संविधान की रक्षा के लिए सेना की कतारों में समितियां बनायी जायें जो उन लोगों के खिलाफ निर्दिष्ट हों, जो संविधान-विरोधी सत्ता-अपहरण के लिए सेना का इस्तेमाल करना चाहते हैं; फ्रांस की प्रतिक्रियावादी शक्तियों को फ्रांस-सोवियत संधि को भंग करने से रोकना, जो जर्मन *फासिज्म के हमले से शांति के ध्येय की रक्षा करती है।*

और अगर फ्रांस मे फासिस्ट-विरोधी आन्दोलन से ऐसी सरकार निर्मित होती है जो फ्रांसीसी फासिज्म के खिलाफ वास्तविक संघर्ष चलाने को तैयार हो—कथनी में नही बल्कि करनी में—तथा जो फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे की मांगों के कार्यक्रम को क्रार्यान्वित करने को तैयार हो, तो कम्युनिस्ट, हर *पूंजीवादी सरकार के कट्टर दुश्मन और सोवियत सरकार के हामी बने* रहते हुए भी, फासिज्म के बढ़ते हुए खतरे के कारण ऐसी सरकार का समर्थन करने को तैयार होंगे।

संयुक्त मोर्चा और फासिस्ट जन संगठन

साथियो, उन देशों में जहां फासिस्ट सत्ता में है, संयुक्त मोर्चे की स्थापना के लिए लड़ना शायद हमारे सामने सबसे महत्वपूर्ण समस्या है। निस्संदेह, ऐसे देशों में लड़ाई उन देशों की अपेक्षा कही ज्यादा कठिन परिस्थितियों में चलायी जाती है जहां वैध रूप से मजदूर आन्दोलन मौजूद है। फिर भी फासिस्ट

तानाशाही के खिलाफ संघर्ष में वास्तविक फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे के विकास के लिए फासिस्ट देशों में सारी परिस्थितियां मौजूद हैं क्योंकि, मसलन जर्मनी में, सामाजिक-जनवादी, कैथोलिक और दूसरे मजदूर, फासिस्ट तानाशाही के खिलाफ कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त संघर्ष की आवश्यकता को अपेक्षाकृत ज्यादा प्रत्यक्ष रूप में अनुभव कर पाते हैं। निम्न-पूंजीपति वर्ग और कृषक समुदाय के व्यापक तबकों में फासिस्ट हुकूमत के कड़वे फल को पहले ही चख चुकने के बाद अधिकाधिक असंतोष और मोहभंग फैलता जा रहा है, जिससे उन्हें फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे में लाना ज्यादा आसान हो जाता है।

फासिस्ट देशों में, खास तौर पर जर्मनी और इटली में, जहां फासिज्म ने कोशिश कर के जन-आधार प्राप्त कर लिया है तथा मजदूरों और अन्य मेहनतकशों को अपने सगठनों में जबर्दस्ती फांस लिया है, प्रधान कर्तव्य यह है कि फासिस्ट तानाशाही के खिलाफ बाहर से संघर्ष को, उसको भीतर से—यानी फासिस्ट जन संगठनों और निकायों को भीतर से—खोखला करने के संघर्ष से कुशलता के साथ समन्वित किया जाय। इन देशों में पायी जाने वाली परिस्थितियों के अनुकूल विशिष्ट तौर-तरीकों और साधनों को सीखा जाना चाहिए, उनमें दक्षता हासिल की जानी चाहिए और उनका प्रयोग किया जाना चाहिए, ताकि फासिज्म के जन-आधार के तेजी के साथ विघटन में आसानी हो और फासिस्ट तानाशाही को उखाड़ फेंकने के लिए रास्ता तैयार हो। हमें इसे सीखना चाहिए, इसमें दक्षता हासिल करनी चाहिए और इसका प्रयोग करना चाहिए—न कि सिर्फ "हिटलर मुर्दाबाद" और "मुसोलिनी मुर्दाबाद" के नारे लगाने चाहिए। जी हां, सीखिए, दक्षता हासिल कीजिए और प्रयोग कीजिए।

यह मुश्किल और पेचीदा काम है। यह इस कारण और भी मुश्किल है क्योंकि फासिस्ट तानाशाही से सफलता के साथ लड़ने का हमारा अनुभव अत्यन्त सीमित है। मसलन, हमारे इटालवी साथी पहले से ही लगभग तेरह वर्षों से फासिस्ट तानाशाही की परिस्थितियों में लड़ते आ रहे हैं। फिर भी वे फासिज्म के खिलाफ एक वास्तविक जन संघर्ष विकसित करने में अभी तक सफल नहीं हो सके हैं, और इस कारण बदकिस्मती से वे इस मामले में अपने ठोस अनुभव से अन्य फासिस्ट देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों को कोई सहायता नही दे पाये हैं।

जर्मन और इटालवी कम्युनिस्टों ने, अन्य फासिस्ट देशों के कम्युनिस्टों ने, साथ ही कम्युनिस्ट नौजवानों ने, अद्भुत दिलेरी दिखायी है; उन्होंने अपार कुर्बानियां की हैं और प्रति दिन कर रहे हैं। हम सब ऐसी वीरता और कुर्बानियों के सम्मान में अपने सिर झुकाते हैं। लेकिन मात्र वीरता नाकाफी है। वीरता का जनता के बीच दिन-प्रति-दिन कार्य के साथ, फासिज्म के खिलाफ

ठोस संघर्ष के साथ समन्वय किया जाना चाहिए, ताकि इस क्षेत्र में सर्वाधिक ठोस नतीजे हासिल किये जा सकें। फासिस्ट तानाशाही के खिलाफ हमारे संघर्ष में इच्छा और तथ्य के बीच घालमेल करना खास तौर पर खतरनाक है। हमें अपने को तथ्यों को वास्तविक ठोस स्थिति पर आधारित करना चाहिए।

जर्मनी में, मिसाल के लिए, अब वास्तविक स्थिति क्या है?

आम जनता फासिस्ट तानाशाही की नीति से अधिकाधिक व्यग्र होती जा रही है और उसका अधिकाधिक मोहभंग हो रहा है, और यह आंशिक हड़तालों और अन्य कार्रवाइयों का भी रूप ले लेता है। अपनी सारी कोशिशों के बावजूद फासिज्म मजदूरों के बुनियादी समुदायों को राजनीतिक दृष्टि से अपने पक्ष में लाने में असफल रहा है; वह अपने पहले के समर्थकों तक से हाथ धोता जा रहा है, *और भविष्य मे अधिकाधिक हाथ धोता जायगा।* फिर भी हमे *यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि वे मजदूर अभी भी अल्पमत में है, जिन्हें* फासिस्ट तानाशाही के उखाड़ फेंके जाने की सम्भावना के बारे में पूर्ण विश्वास है तथा जो इसके लिए सक्रिय रूप मे लड़ने को अभी ही तैयार हैं—इनमें हैं हम, यानी कम्युनिस्ट तथा सामाजिक-जनवादी मजदूरों के क्रान्तिकारी तबके। मगर अधिकांश मेहनतकश इस तानाशाही के उखाड फेंके जाने की वास्तविक, *ठोस सम्भावनाओ और तरीकों के प्रति सचेत नहीं हैं, और अब भी इंतजारी* का रुख अख्तियार किये हैं। हमें *इस बात को उस समय अवश्य ध्यान में* रखना चाहिए जब हम जर्मनी मे फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में अपने कर्तव्य निर्धारित कर रहे हों और जब हम जर्मनी में फासिस्ट तानाशाही को खोखला करने और उखाड फेंकने के विशेष तौर-तरीकों की तलाश, अध्ययन और प्रयोग कर रहे हों।

फासिस्ट तानाशाही पर करारा प्रहार करने में सफल होने के लिए हमे पहले *इस बात का पता लगाना चाहिए कि उसके किस बिंदु पर सबसे ज्यादा* आसानी से वार किया जा सकता है। फासिस्ट तानाशाही का मर्मस्थल क्या है? उसका सामाजिक आधार। यह निहायत विषमतापूर्ण है। यह समाज के कई तबकों से बना है। फासिज्म ने स्वयं को निर्माता और मजदूर, लखपति और बेरोजगार, सामंत और छोटे किसान, बड़े व्यापारी और कारीगर, *आबादी के सभी वर्गों और तबकों का एक मात्र प्रतिनिधि घोषित किया है।* *वह इन सभी तबकों के हितों की, राष्ट्र के हितों की, रक्षा करने का स्वांग* भरता है। पर चूंकि फासिज्म बड़े पूंजीपति वर्ग की तानाशाही है, इसलिए इसका अपने सामूहिक सामाजिक आधार से टकराना लाजिमी है—इस वजह से खास तौर से कि फासिस्ट तानाशाही मे धन्ना सेठों की मंडली और जनता के विशाल बहुमत के वर्ग अन्तर्विरोध सबसे ज्यादा उभर कर सामने आते हैं।

जो मजदूर फासिस्ट संगठनों में जबर्दस्ती शामिल कर लिये गये हैं या अज्ञानवश उनमें शामिल हो गये हैं, उन्हें उनके आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक हितों की रक्षा के लिए चलाये जाने वाले सबसे आरंभिक आन्दोलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित करके ही जन समुदाय को फासिस्ट तानाशाही को उखाड़ फेंकने के निर्णायक संघर्ष में लाया जा सकता है। इसी कारण कम्युनिस्टों को दिन-प्रति-दिन के हितों के, मजदूरों के समुदाय के सर्वोत्तम समर्थकों के रूप में इन संगठनों में काम करना चाहिए और यह याद रखते हुए काम करना चाहिए कि जैसे-जैसे इन संगठनों के मजदूर अपने अधिकारों की मांग बार-बार उठाने और अपने हितों की रक्षा करने लगते हैं, वैसे-वैसे फासिस्ट तानाशाही से अनिवार्यतः टकराते हैं।

नगरों और देहातों की मेहनतकश जनता के फौरी और पहले-पहल सबसे आरंभिक हितों की रक्षा करते समय यह अपेक्षाकृत ज्यादा आसान है कि न सिर्फ सचेत फासिस्ट-विरोधियों के साथ बल्कि उन मेहनतकशों के साथ भी समान आधार खोज लिया जाय, जो अभी भी फासिज्म के समर्थक हैं मगर उसकी नीति से उनकी आंखें खुल चुकी हैं और उनमें असंतोष घर कर गया है, तथा वे शिकवा-शिकायत करने लगे हैं और अपने असंतोष को व्यक्त करने का मौका तलाश रहे हैं। सामान्यतः, हमें यह अवश्य समझ लेना चाहिए कि फासिस्ट तानाशाही वाले देशों में हमारी सारी कार्यनीति इस प्रकार की होनी चाहिए जो फासिज्म के साधारण समर्थकों को दूर न ठेल दे, उन्हें फिर से फासिज्म की बाहों में न धकेल दे, बल्कि फासिस्ट नेताओं के, तथा समाज के मेहनतकश हिस्सों से आये फासिज्म के मोह से मुक्त, साधारण अनुयायियों के समुदाय के, बीच खाई और गहरी हो।

साथियो, अगर इन दिन-प्रति-दिन के हितों के गिर्द लामबंद जनता स्वयं को राजनीति के प्रति उदासीन या फासिज्म का अनुयायी भी मानती हो, तो हमें संत्रस्त नहीं होना चाहिए। हमारे लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि उसे आन्दोलन में लाया जाय। हालांकि सम्भव है कि आरंभ में यह कार्य खुले आम फासिज्म के खिलाफ संघर्ष के नारे के तहत न आगे बढ़े, फिर भी वह वस्तुगत दृष्टि से फासिस्ट-विरोधी आन्दोलन ही होगा और इन जन समुदायों को फासिस्ट तानाशाही के विरोध में लायेगा।

अनुभव हमे सिखाता है कि यह विचार खतरनाक और गलत है कि फासिस्ट तानाशाही वाले देशों में वैध या अवैध रूप में सामने आना आम तौर पर असम्भव है। इस दृष्टिकोण का आग्रह करने का अर्थ है निश्चेष्टता का शिकार हो जाना तथा वास्तविक जन कार्य को कतई तिलांजलि दे देना। यह सच है कि फासिस्ट तानाशाही की परिस्थितियों में वैध या अर्ध-वैध कार्रवाई के

रूपों और तरीकों को तलाशना एक मुश्किल और पेचीदा मसला है। पर जैसा कि दूसरे अनेक सवालों में होता है, इसके रास्ते या संकेत खुद जिंदगी से ही तथा स्वयं जनता की पहल से ही मिलता है जिनसे हमें पहले ही कई दृष्टांत मिल चुके हैं जिनका सामान्यीकरण करना तथा संगठित और कारगर तरीके से प्रयोग करना आवश्यक है।

हमें फासिस्ट जन संगठनों में कार्य का मूल्य कम कर के आकने की प्रवृत्ति अत्यन्त दृढ़ता के साथ समाप्त कर देनी चाहिए। इटली मे, जर्मनी में और अन्य अनेक फासिस्ट देशों में हमारे साथियों ने कारखानों में किये जाने वाले कार्य को फासिस्ट जन संगठनों में किये जाने वाले कार्य के विरोध में पेश करके, अपनी निष्क्रियता को, अक्सर फासिस्ट जन संगठनों में काम करने से सीधे इनकार को, छिपाने की कोशिश की। किन्तु वास्तविकता में इस यांत्रिक विभेद का यह नतीजा है कि फासिस्ट जन संगठनो और कारखानों, दोनों में ही, बहुत धीरे-धीरे काम किया गया या कभी-कभी तो कतई किया ही नही गया।

फिर भी यह खास तौर पर महत्वपूर्ण है कि फासिस्ट देशों में जहा भी जन समुदाय हो, वहां कम्युनिस्ट अवश्य पहुंचें। फासिज्म ने मजदूरों को स्वयं उनके वैध संगठनों से उन्हें वंचित कर दिया है। इसने उन पर फासिस्ट संगठन थोप दिये हैं, और यहां पर ही जन समुदाय है—मजबूरी से, या कुछ हद तक स्वेच्छा से। इन जन फासिस्ट संगठनो को हमारा ऐसा वैध या अर्ध-वैध कार्य-क्षेत्र बनाया जा सकता है, और अवश्य बनाया जाना चाहिए, जहां हम जन साधारण से मिल सकें। इन्हें जन साधारण के दिन-प्रति-दिन के हितों की रक्षार्थ हमारे वैध या अर्ध-वैध कार्य का आरम्भ-बिंदु बनाया जा सकता है, और अवश्य बनाया जाना चाहिए। इन सम्भावनाओं का इस्तेमाल करने के लिए कम्युनिस्टों को जन साधारण से सम्पर्क के लिए फासिस्ट जन सगठनों में निर्वाचित पदों पर पहुंचना चाहिए तथा इस पूर्वग्रह से सदा-सदा के लिए स्वयं को मुक्त कर लेना चाहिए कि इस प्रकार का कार्यकलाप अशोभनीय तथा एक क्रान्तिकारी कार्यकर्ता के लिए अनुपयुक्त है।

मसलन जर्मनी मे तथाकथित "कारखाना गुमाश्तो" की एक व्यवस्था है। पर यह कहां कहा गया है कि हमें फासिस्टों के हाथ में इन संगठनों का एकाधिकार छोड़ देना चाहिए? क्या हम कारखानों मे कम्युनिस्ट, सामाजिक-जनवादी, कैथोलिक और अन्य फासिस्ट-विरोधी मजदूरों को एकजुट करने की कोशिश नही कर सकते, जिससे जब "कारखाना गुमाश्तों" की सूची पर मतदान हो तो मालिकों के जाने-माने दलालों के नाम कट जायें और उनकी जगह उन दूसरे उम्मीदवारों के नाम चढ जायें जिन्हें मजदूरों का विश्वास प्राप्त हो? व्यवहार से यह पहले ही साबित हो चुका है कि यह सम्भव है।

और क्या व्यवहार से यह भी नहीं साबित होता है कि सामाजिक-जनवादी और दूसरे असंतुष्ट मजदूरों के साथ मिल कर यह मांग कर सकना सम्भव है कि "कारखाना गुमाश्ते" मजदूरों के हितों की वास्तव में रक्षा करें ?

जर्मनी के मजदूर मोर्चे या इटली की फासिस्ट ट्रेड यूनियनों को लीजिए। क्या यह माग कर सकना सम्भव नही कि मजदूर मोर्चे के अहलकारों का चुनाव किया जाय, न कि उन्हें नियुक्त किया जाय; क्या यह आग्रह कर सकना सम्भव नही कि स्थानीय टोलियों के नेतृत्वकारी निकाय संगठनों के सदस्यों की बैठकों में रिपोर्ट दें, क्या टोली के फैसले के बाद इन मांगों को मालिक तक, "मजदूरों के संरक्षक" तक, मजदूर मोर्चे के उच्चतर निकायों तक, पहुंचाना सम्भव नही ? यह सम्भव है, बशर्ते क्रान्तिकारी मजदूर, मजदूर मोर्चे के भीतर वास्तव में काम करें और उसमें पदों को प्राप्त करने की कोशिश करें।

अन्य जन फासिस्ट संगठनों में भी—हिटलर की नौजवान लीगों में, खेल-कूद के संगठनों में, क्राफ्ट डुर्ख फ्रोउड सगठनों (क्राफ्ट डुर्ख फ्रोउड यानी खुशी के जरिये शक्ति, जर्मनी में सगठित अवकाश का फासिस्ट संगठन।—अनु) में, इटली के दोपो लावोरो (दोपो लावोरो, काम के बाद, यानी मेहनतकशों को फासिस्ट दीक्षा और फौजी प्रशिक्षण देने का इतालवी फासिस्ट संगठन।—अनु.) में, सहकारों आदि में—इसी प्रकार की कार्य-विधियां सम्भव और आवश्यक है।

साथियो, आपको ट्रॉय की विजय की प्राचीन कथा स्मरण होगी। ट्रॉय अपने अभेद्य प्राचीरों के कारण उस पर आक्रमण करने वाली सेनाओं की पहुंच के बाहर था। और, हमलावर सेना बहुत-सी कुर्बानिया देने के बाद तब तक विजय पाने में असमर्थ रही जब तक कि वह सुप्रसिद्ध 'ट्रोजन होर्स' (ट्रॉय के घोड़े) की सहायता से दुश्मन के शिविर के बिलकुल मध्य तक घुस जाने में सफल नही हो गयी।

मुझे ऐसा लगता है कि हम क्रान्तिकारी मजदूरों को अपने उस फासिस्ट दुश्मन के मामले में इसी कार्यनीति का इस्तेमाल करने में शर्म नही महसूस करनी चाहिए। यह दुश्मन, जल्लादों की जिंदा दीवाल खड़ी करके जनता से अपना बचाव कर रहा है।

फासिज्म के मामले में ऐसी कार्यनीति का इस्तेमाल करने की आवश्यकता को समझने में जो असफल रहता है, जो ऐसे दृष्टिकोण को "अपमानजनक" मानता है, वह निहायत अच्छा साथी हो सकता है, मगर यदि आप मुझे कहने की अनुमति दें तो वह शेखीबाज है, क्रान्तिकारी नही और वह फासिस्ट ताना-शाही को उखाड़ फेंकने की मंजिल तक जनता को ले जाने में असमर्थ होगा।

संयुक्त मोर्चे के लिए जन आन्दोलन सबसे आरंभिक आवश्यकताओं की रक्षा के साथ शुरू होता है और जैसे-जैसे मोर्चा विस्तृत होता और बढ़ता

चलता है वैसे-वैसे संघर्ष के अपने रूपों और नारों को बदलता चलता है और इस प्रकार वह जर्मनी, इटली तथा उन अन्य देशों में जहां फासिज्म के पास जन आधार है, फासिस्ट संगठनों के भीतर और बाहर बढ़ रहा है। आज तानाशाही का जो गढ़ बहुतों को अभेद्य मालूम पड़ता है, उसे चकनाचूर करने वाली प्रहारक शक्ति से ही तोड़ा जा सकता है।

उन देशों में संयुक्त मोर्चा जहां सामाजिक-जनवादी पदारूढ़ हैं

संयुक्त मोर्चे की स्थापना के लिए संघर्ष एक और अत्यन्त महत्वपूर्ण समस्या उठा देता है—उन देशों में संयुक्त मोर्चे की समस्या जहां सामाजिक-जनवादी सरकारें, या ऐसी साझा सरकारें सत्ता में है जिनमें सोशलिस्ट शरीक हैं, जैसे मसलन् डेनमार्क, नार्वे, स्वेडन, चेकोस्लोवाकिया और बेल्जियम।

सामाजिक-जनवादी सरकारों के प्रति, जो कि पूंजीपति वर्ग के साथ समझौते की सरकारें है, पूर्ण विरोध का हमारा नजरिया सुविदित है। किन्तु इसके बावजूद, हम सामाजिक-जनवादी सरकार या पूंजीवादी पार्टियों के साथ साझा सरकार के अस्तित्व को सुनिश्चित मुद्दों पर सामाजिक-जनवादियों के साथ संयुक्त मोर्चा कायम करने के मार्ग में एक अलंघ्य बाधा नही मानते।

हम यह विश्वास करते हैं कि ऐसी स्थिति में भी मेहनतकशों के मूलभूत हितों की रक्षार्थ तथा फासिज्म के खिलाफ संघर्ष मे संयुक्त मोर्चा सर्वथा सम्भव और आवश्यक है। यह समझ मे आने वाली बात है कि उन देशों में जहां सामाजिक-जनवादी पार्टियां सरकार में शामिल होती हैं, सामाजिक-जनवादी नेतृत्व सर्वहारा संयुक्त मोर्चे का प्रबलतम प्रतिरोध करता है। यह सर्वथा समझ में आने वाली बात है। आखिरकार वे पूंजीपति वर्ग को यह दिखाना चाहते हैं कि वे और किसी से भी बेहतर और ज्यादा कुशल तरीके से असंतुष्ट मेहनतकश समुदाय को अंकुश में रख सकते है तथा कम्युनिज्म से प्रभावित होने से उन्हें रोक सकते हैं।

यह सच है कि सामाजिक-जनवादी मंत्री सर्वहारा संयुक्त मोर्चे के विरुद्ध हैं, किन्तु इससे किसी भी हालत में ऐसी स्थिति का औचित्य नही सिद्ध होता कि कम्युनिस्ट सर्वहारा का संयुक्त मोर्चा कायम करने के लिए कुछ भी न करें।

स्कंडिनेवियाई देशों के हमारे साथी अक्सर कम से कम प्रतिरोध करने की नीति अपनाते हैं और स्वयं को सामाजिक-जनवादी सरकारों का पर्दाफाश करने वाले प्रचारक तक सीमित रखते हैं। यह एक गलती है। मसलन डेनमार्क मे सामाजिक-जनवादी नेता पिछले दस वर्षों से शासन में रहते आये हैं और दस वर्षों से दिन-प्रति-दिन कम्युनिस्ट यह रटते आये हैं कि यह पूंजीपतियों की पूंजी-

वादी सरकार है। हमें यह मान लेना चाहिए कि डेनिश मजदूर इस प्रचार से परिचित हैं। तथ्य यह है कि इसके बावजूद उनका खासा बड़ा बहुमत सामाजिक-जनवादी शासक पार्टी को मत देता है। इससे यही सिद्ध होता है कि प्रचार के जरिये सरकार को बेनकाब करने का कम्युनिस्टों का प्रयास नाकाफी है। बहरहाल, इससे यह नहीं साबित होता कि ये सैकड़ों हजारों मजदूर सामाजिक-जनवादी मंत्रियो के सारे सरकारी कदमों से संतुष्ट हैं। नहीं, वे इस बात से संतुष्ट नहीं हैं कि अपने तथाकथित संकटकालीन "समझौते" से सामाजिक-जनवादी सरकार बड़े पूंजीपतियों और भूस्वामियों की मदद करती है और न कि मजदूरों और गरीब किसानों की। वे जनवरी १९३३ में सरकार द्वारा जारी किये गये उस फरमान से संतुष्ट नही हैं जिसने मजदूरों को हड़ताल करने के अधिकार से वंचित कर दिया। वे खतरनाक जनवाद-विरोधी चुनाव सुधार संबंधी सामाजिक-जनवादी नेतृत्व की योजना मे संतुष्ट नही है (जिससे प्रतिनिधियों की संख्या काफी घट जायगी)। साथियो, मेरी बात मुश्किल से ही गलत हो सकती है अगर मैं यह कहूं कि ९९ प्रति शत डेनिश मजदूर सामाजिक-जनवादी नेताओं और मंत्रियों द्वारा उठाये गये इन राजनीतिक कदमों का अनुमोदन नहीं करते हैं।

क्या कम्युनिस्टों के लिए यह सम्भव नही है कि वे इनमें से कुछ ज्वलंत समस्याओं पर विचार-विमर्श करने के लिए, उन पर अपनी राय का इजहार करने तथा मजदूरों की मागों को पूरा कराने के उद्देश्य से एक सर्वहारा सयुक्त मोर्चे के हेतु संयुक्त रूप से आगे आने के लिए, डेनमार्क की ट्रेड यूनियनों और सामाजिक-जनवादी संगठनो का आह्वान करें? पिछले साल अक्तूबर मे जब हमारे डेनिश साथियों ने ट्रेड यूनियनों से बेरोजगारी-राहत में कटौती के खिलाफ तथा ट्रड यूनियनों के जनवादी अधिकारो के लिए कार्रवाई करने की अपील की, तो लगभग १०० स्थानीय ट्रेड यूनियन संगठन संयुक्त मोर्चे में शरीक हुए।

स्वेडन में सामाजिक-जनवादी सरकार तीसरी बार सत्ता में है, लेकिन स्वेडन के कम्युनिस्ट लंबे अरसे से अमल में संयुक्त मोर्चा कार्यनीति का प्रयोग करने से बचते रहे हैं। क्यों? क्या इसलिए कि वे सयुक्त मोर्चे के खिलाफ थे? बेशक नही; वे सिद्धान्ततः संयुक्त मोर्चे के हक में थे, आम तौर से संयुक्त मोर्चे के हक मे थे, मगर वे यह समझने में असमर्थ थे कि किन परिस्थितियों में, किन प्रश्नों पर, किन मांगों की रक्षा के लिए सर्वहारा संयुक्त मोर्चा सफलतापूर्वक स्थापित किया जा सकता था, कहां और कैसे "बांह मे बांह डाली जाय।" सामाजिक-जनवादी सरकार के गठन से चंद महीने पहले सामाजिक-जनवादी पार्टी ने चुनाव के दौरान एक ऐलान जारी किया जिसमें कई मांगें शामिल थी

जिन्हें सर्वहारा संयुक्त मोर्चे के ऐलान में शामिल किया जा सकता था। मसलन, "चुंगी के खिलाफ", "सैन्यीकरण के खिलाफ", "बेरोजगारी बीमे के सवाल पर हीला-हवाला की नीति खत्म करो," "पर्याप्त मात्रा में बुढ़ापा पेंशन दो," "'म्यूनिल' दल (एक फासिस्ट संगठन) जैसे संगठनों को अवैध घोषित करो," "पूंजीवादी पार्टियों द्वारा मांगे गये यूनियनों के खिलाफ वर्ग कानून मुर्दाबाद।"

१६३२ में स्वेडन में दस लाख से ज्यादा मेहनतकशों ने सामाजिक-जनवादियों द्वारा रखी गयी इन मांगों के लिए वोट दिये और १६३३ में इस आशा में सामाजिक-जनवादी सरकार के गठन का स्वागत किया कि अब ये मांगें पूरी हो जायेंगी। ऐसी स्थिति में इससे ज्यादा स्वाभाविक क्या हुआ होता और मजदूर समुदाय के लिए इससे ज्यादा अनुकूल और क्या हुआ होता कि कम्युनिस्ट पार्टी सारे सामाजिक-जनवादी और ट्रेड यूनियन संगठनों से सामाजिक-जनवादी पार्टी द्वारा रखी गयी मांगों को पूरा कराने के लिए संयुक्त कार्रवाई करने की अपील करती ?

अगर हम स्वयं सामाजिक-जनवादियों की इन मांगों को पूरा कराने के लिए व्यापक जन समूह को सचमुच लामबंद करने और सामाजिक-जनवादी तथा कम्युनिस्ट मजदूर संगठनों को एक संयुक्त मोर्चे में बांधने में सफल हुए होते, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि उससे स्वेडन के मजदूर वर्ग को लाभ हुआ होता। यह सच है कि स्वेडन के सामाजिक-जनवादी मंत्री इस पर बहुत खुश नहीं हुए होते, क्योंकि उस हालत में सरकार इन मांगों में से कम से कम कुछ को पूरा करने को मजबूर हो गयी होती। जो भी हो, अब जो हुआ है—यानी जब सरकार ने कुछ चुंगियों को हटाने के बजाय बढ़ा दिया है, सैन्यवाद पर पाबंदी लगाने के बजाय सैनिक बजट बढ़ा दिया है, और ट्रेड यूनियनों के खिलाफ निर्दिष्ट सभी कानूनों को रद्द करने के बजाय स्वयं ऐसा विधेयक संसद में पेश किया है—वह न हुआ होता। यह सच है कि आखिरी सवाल पर स्वेडन की कम्युनिस्ट पार्टी ने सर्वहारा संयुक्त मोर्चे की भावना के अनुरूप एक अच्छा जन अभियान चलाया, जिसका नतीजा यह हुआ कि सामाजिक-जनवादी संसदीय दल भी आखीर में सरकारी विधेयक के खिलाफ वोट देने को मजबूर हो गया और फिलहाल वह अस्वीकृत हो गया है।

नार्वे के कम्युनिस्टों ने संयुक्त मई दिवस प्रदर्शन संगठित करने के लिए लेबर पार्टी के संगठनों का आह्वान करके तथा ऐसी बहुत-सी मांगें उठा कर जो मुख्यतः नार्वेजियन लेबर पार्टी के चुनाव घोषणापत्र में शामिल मांगों से समानता रखती हैं, ठीक काम किया। हालांकि संयुक्त मोर्चे के पक्ष में उठाये गये इस कदम की तैयारी अच्छी तरह नहीं की गयी थी और नार्वेजियन लेबर

पार्टी के नेतृत्व ने इसका विरोध किया, फिर भी तीस मुहल्लों में संयुक्त मोर्चा प्रदर्शन हुए।

पहले बहुत से कम्युनिस्ट इस बात से डरा करते थे कि अगर वे सामाजिक-जनवादियों की हर आंशिक मांग के विरोध में स्वयं अपनी ऐसी मांगें नहीं रखते जो उनसे दुगुनी उग्र हों, तो यह उनकी अवसरवादिता होगी। यह ना-समझी से भरी गलती थी। मसलन, अगर सामाजिक-जनवादी यह मांग करते कि फासिस्ट संगठन भंग कर दिये जायें तो इस बात की कोई वजह नहीं कि हम यह मांग जोड दें : "और राज्य पुलिस विघटित कर दी जाय" (यह एक ऐसी माग है जो भिन्न परिस्थितियों मे वाछनीय हो सकती है)। बल्कि हमें सामाजिक-जनवादी मजदूरों से यह कहना चाहिए : हम आपकी पार्टी की इन मांगों को सर्वहारा सयुक्त मोर्चे की मांगों के रूप में स्वीकार करने को तैयार हैं तथा उन्हें पूरा करने के लिए अन्त तक जूझने को तत्पर है। आइए, हम एक साथ यह संघर्ष चलायें।

चेकोस्लोवाकिया में भी चेक और जर्मन सामाजिक-जनवादियों द्वारा और सुधारवादी ट्रेड यूनियनो द्वारा रखी गयी कुछ मांगों को मजदूर वर्ग का संयुक्त मोर्चा स्थापित करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है और किया जाना चाहिए। मसलन, जब सामाजिक-जनवादी बेरोजगारों के लिए रोजगार या नगरपालिका स्वशासन पर पाबंदी लगाने वाले कानूनों की समाप्ति की मांग करते है, जैसा कि १९२७ से ही करते आये है, तो इन मांगों को हर मुहल्ले, हर जिले मे ठोस रूप मे रखा जाना चाहिए तथा उन्हें वस्तुत: प्राप्त करने के लिए सामाजिक-जनवादी संगठनों के साथ मिल कर लड़ाई चलायी जानी चाहिए। अथवा, जब सामाजिक-जनवादी पार्टिया राज्य यंत्र में मौजूद फासिज्म के एजेंटों के खिलाफ "आम तौर पर" गर्जना करती हैं, तो उस समय यह करना उचित है कि हर विशिष्ट जिले मे विशिष्ट स्थानीय फासिस्ट प्रवक्ता को खींच कर सामने लाया जाय, और सामाजिक-जनवादी मजदूरों के साथ मिल कर उसे सरकारी नौकरी से हटाने की माग उठायी जाय।

बेल्जियम मे सामाजिक-जनवादी पार्टी के नेतागण, जिनके प्रधान एमिल वांदरवेल्द हैं, साझा सरकार में शामिल हुए हैं। उनकी इस "सफलता" का श्रेय दो मांगों के लिए उनके सुदीर्घ और विस्तृत अभियानों को है। ये मांगें हैं : (१) संकटकालीन फरमानों को समाप्त किया जाय, तथा (२) डे मान योजना को पूरा किया जाय। पहला सवाल बहुत ही महत्वपूर्ण है। पूर्ववर्ती सरकार ने १५० प्रतिक्रियावादी संकटकालीन फरमान जारी कर दिये थे, जो मेहनतकश जनता पर बहुत ही बड़ा भार हैं। उम्मीद की जाती थी कि उन्हें फौरन मंसूख किया जायगा। यह थी सोशलिस्ट पार्टी की मांग। मगर नयी

सरकार ने इन संकटकालीन फरमानों में से कितने फरमानों को मंसूख किया है ? एक को भी नहीं। इसने कुछेक संकटकालीन फरमानों को थोड़ा-बहुत नरम बना दिया है जिससे बेल्जियम के सोशलिस्ट नेताओं के उदारतापूर्ण वायदों को निपटाने के लिए एक प्रकार का "सांकेतिक भुगतान" कर दिया जाय (उस "सांकेतिक डालर" की तरह जिसकी पेशकश कुछ योरपीय शक्तियों ने युद्ध ऋण के रूप में देय लाखों के भुगतान के रूप में अमरीका को की थी)।

जहां तक बहु विज्ञापित डे मान योजना के पूरा किये जाने का सवाल है, मामले ने एक ऐसा मोड़ ले लिया है जिसकी सामाजिक-जनवादी अवाम ने कतई उम्मीद नहीं की थी। सोशलिस्ट मंत्रियों ने ऐलान कर दिया कि पहले आर्थिक संकट पर विजय पायी जानी चाहिए तथा डे मान योजना के उन्हीं प्रावधानों को अमल में लाया जाना चाहिए जिनसे औद्योगिक पूंजीपतियों और बैंकों की स्थिति सुधरे; मजदूरों के हालात सुधारने के लिए कदम उठा सकना इसके बाद ही संभव होगा। मगर डे मान योजना में "लाभों" में जिस हिस्से के लिए मजदूरों से वायदे किये गये हैं, उनके लिए वे कब तक इंतजार करें ? बेल्जियम के बैंकरों के लिए तो पहले ही सोने की वर्षा हो चुकी है। बेल्जियन फ्रांक का २८ प्रति शत अवमूल्यन कर दिया गया है; और इस हेरफेर से बैंकरों ने, वेतनभोगियों की कीमत पर और छोटे जमाकर्ताओं की बचत की कीमत पर, अपने लूट के माल के बतौर ४५० करोड़ फ्रांक अपनी जेब के हवाले कर लिये। लेकिन, डे मान योजना की अन्तर्वस्तु से इसका कैसे मेल बैठता है ? क्योंकि अगर हम योजना के शब्दों को मान कर चलते है, तो वह "इजारेदारों के दुराचरों और सट्टेबाजी के हेरफेर के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने" का वायदा करती है।

डे मान योजना के आधार पर सरकार ने बैंकों की देखरेख करने के लिए एक आयोग नियुक्त किया है। मगर आयोग उन्हीं बैंकरों से बना है जो अब हंसी-खुशी के साथ और हलके मन से खुद अपनी देखरेख कर सकते हैं।

डे मान योजना में और भी कई अच्छी बातों के वायदे किये गये है, जैसे "कार्य दिवस का छोटा किया जाना", "वेतन का मानकीकरण", "एक न्यूनतम वेतन", "सामाजिक बीमे की एक सब कुछ समेट लेने वाली व्यवस्था का संगठन", "नये गृह-निर्माण के जरिये रहन-सहन के हालात में और अधिक सुविधाएं", आदि। ये सभी ऐसी मांगें हैं जिनका समर्थन हम कम्युनिस्ट कर सकते हैं। हमें बेल्जियम के मजदूर संगठनों के पास जाना चाहिए और उनसे कहना चाहिए: पूंजीपतियों को पहले ही काफी, और जरूरत से ज्यादा, मिल चुका है। आइए, हम मांग करें कि सामाजिक-जनवादी

मंत्री अब मजदूरों से किये गये वायदों को पूरा करें। आइए, हम अपने हितों की सफलतापूर्वक रक्षा करने के लिए एक संयुक्त मोर्चे में शामिल हों। मंत्री वांदरवेल्द महोदय, हम मजदूरों की ओर से आपके ऐलान में शामिल मांगों का समर्थन करते हैं; मगर हम आप से साफ-साफ कह देना चाहते हैं कि हम इन मांगों को गंभीरता से लेते हैं, हम कार्रवाई चाहते हैं न कि थोथे शब्द, और इसलिए इन मांगों के लिए संघर्ष करने को सैकड़ों-हजारों मजदूरों को ऐक्यबद्ध कर रहे हैं।

इस प्रकार उन देशों में, जहां सामाजिक-जनवादी सरकारें सत्ता में हैं, कम्युनिस्ट लोग सामाजिक-जनवादी पार्टियों और संगठनों के साथ संयुक्त कार्रवाई के आरंभ बिंदु के रूप में सामाजिक-जनवादी मंत्रियों की घोषणाओं से ही चुनी गयी अलग-अलग उपयुक्त मांगों का इस्तेमाल करके बाद में ज्यादा आसानी से पूंजीवादी हमले के खिलाफ, फासिज्म और युद्ध के खतरे के खिलाफ, संघर्ष में अन्य जन मांगों के आधार पर संयुक्त मोर्चा कायम करने के लिए अभियान विकसित कर सकते हैं।

यह बात अवश्य स्मरण रखनी चाहिए कि आम तौर पर सामाजिक-जनवादी पार्टियों और संगठनों के साथ संयुक्त कार्रवाई के लिए यह जरूरी है कि कम्युनिस्ट लोग पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की विचारधारा और व्यवहार के रूप में सामाजिक-जनवाद की गंभीर और तर्कसम्मत आलोचना करें तथा सामाजिक-जनवादी मजदूरों को अथक, बिरादराना रूप में कम्युनिज्म के कार्यक्रम और नारों को समझायें। सामाजिक-जनवादी सरकारों वाले देशों में संयुक्त मोर्चे के लिए संघर्ष में इस कार्य का विशिष्ट महत्व है।

ट्रेड यूनियन एकता के लिए संघर्ष

साथियो, संयुक्त मोर्चे को सुदृढ़ बनाने में सबसे महत्वपूर्ण मंजिल होनी चाहिए—राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन एकता की स्थापना।

जैसा कि आप जानते हैं, सुधारवादी नेताओं की फूटवादी चालें सबसे ज्यादा खतरनाक रूप में ट्रेड यूनियनों में प्रयुक्त की गयीं। इसकी वजह साफ है। यहां पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की उनकी नीति सीधे कारखानों में अपने अमली चरमोत्कर्ष पर पहुंचती थी और मजदूर वर्ग के मूलभूत हितों को सीधे-सीधे नुकसान पहुंचाती थी। कम्युनिस्टों के नेतृत्व में चलने वाले क्रान्तिकारी मजदूरों की ओर से निश्चय ही इसकी कटु आलोचना हुई और इसका प्रतिरोध किया गया। इसी कारण कम्युनिज्म और सुधारवाद के बीच संघर्ष सबसे उग्र रूप में ट्रेड यूनियनों में चला।

पूंजीवाद के लिए स्थिति जितनी ही कठिन और पेचीदा होती गयी,

ऐम्सटर्डम की ट्रेड यूनियनों (ऐम्सटर्डम ट्रेड यूनियन इन्टरनेशनल से संबद्ध यूनियनें; यह संगठन १९१९ में स्थापित किया गया था और सुधारवादी ट्रेड यूनियनों का प्रतिक्रियावादी केन्द्र था; १९४५ में इसे भंग कर दिया गया था। —अनु.) के नेताओं की नीति उतनी ही ज्यादा प्रतिक्रियावादी, तथा ट्रेड यूनियनों में सभी विरोधी तत्वों के खिलाफ उनके कदम उतने ही ज्यादा आक्रामक, होते गये। यहा तक कि जर्मनी में फासिस्ट तानाशाही की स्थापना और सारे पूंजीवादी देशों में तेजतर पूंजीवादी आक्रमण भी उनकी आक्रामकता को कम कर सकने में असफल रहे। क्या यह एक लाक्षणिक तथ्य नही है कि अकेले १९३३ में ही ग्रेट ब्रिटेन, हालैंड, बेल्जियम और स्वेडन में सरासर शर्मनाक गश्ती चिट्ठियां जारी की गयी थी, जिनमें ट्रेड यूनियनों से कम्युनिस्टों और क्रान्तिकारी मजदूरों को निकाल बाहर करने का अनुरोध किया गया था? १९३३ में ग्रेट ब्रिटेन मे एक गश्ती चिट्ठी जारी की गयी थी, जिसमें ट्रेड यूनियनों की स्थानीय शाखाओं से कहा गया था कि वे युद्ध-विरोधी या दूसरे क्रान्तिकारी संगठनों में शामिल न हों। यह ट्रेड यूनियन कांग्रेस जनरल कौंसिल की उस बदनाम "काली गश्ती चिट्ठी" की पूर्वपीठिका थी, जिसके जरिये उन ट्रेड कौंसिलों को बहिष्कृत किया गया था, जो "कम्युनिस्ट संगठनो से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबधित" प्रतिनिधियों को शामिल करेंगी। जर्मन ट्रेड यूनियनो के नेताओं के बारे में तो कहा ही क्या जाय, जिन्होने ट्रेड यूनियनों में मौजूद क्रान्तिकारी तत्वों के खिलाफ अभूतपूर्व दमनकारी कदम उठाये।

फिर भी हमें अपनी कार्यनीतियो का आधार एम्सटर्डम ट्रेड यूनियनों के अलग अलग नेताओं के व्यवहार को नही, चाहे उनके व्यवहार से वर्ग संघर्ष को जो भी दिक्कतें पेश आयें, बल्कि प्रथमत. इस सवाल को बनाना चाहिए कि आम मजदूर कहां पाये जाते हैं। और, यहा हमें खुले आम ऐलान कर देना चाहिए कि ट्रेड यूनियनो मे काम करना सभी कम्युनिस्ट पार्टियों के काम में सबसे महत्वपूर्ण सवाल है। हमे ट्रेड यूनियन कार्य मे बेहतरी की दिशा में वास्तविक तब्दीली लानी चाहिए तथा ट्रेड यूनियन एकता के लिए संघर्ष के सवाल को केंद्रीय मुद्दा बनाना चाहिए।

दस वर्ष पूर्व कामरेड स्तालिन ने पूछा: "पश्चिम में सामाजिक-जनवाद की शक्ति का क्या कारण है?" इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होने कहा:

"यह तथ्य कि उसे ट्रेड यूनियनो मे समर्थन प्राप्त है।

"पश्चिम मे हमारी कम्युनिस्ट पार्टियों की कमजोरी का क्या कारण है?

"यह तथ्य कि वे अभी भी ट्रेड यूनियनों से नहीं जुड़ी हैं तथा कम्युनिस्ट पार्टियों के भीतर के कुछ तत्व यह नही चाहते कि उनसे जुडा जाय।

"इसलिए, आज पश्चिम में कम्युनिस्ट पार्टियों का मुख्य कर्तव्य यह है कि

वे ट्रेड यूनियन आन्दोलन में एकता के लिए अभियान विकसित करें और इसे पूर्णता तक पहुंचायें; इस बात का ध्यान रखें कि सारे कम्युनिस्ट बिना किसी अपवाद के ट्रेड यूनियनों में शरीक हों और वहां पूंजी के खिलाफ लड़ाई में मजदूर वर्ग की एकजुटता को व्यवस्थित ढंग से और धीरज के साथ मजबूत बनायें, और इस प्रकार ऐसी परिस्थितियां लायें जिनमें कम्युनिस्ट पार्टियां ट्रेड यूनियनों पर निर्भर कर सकें।" (स्तालिन, "आर. सी. पी. के १४वें सम्मेलन के कार्य के नतीजे", लेनिनवाद (अंग्रेजी), खंड १, पृष्ठ १६०)।

क्या कामरेड स्तालिन के इस आदेश का पालन किया गया? नहीं, साथियो, नहीं किया गया।

ट्रेड यूनियनों में शरीक होने की मजदूरों की आकांक्षा को नजरअंदाज करते हुए तथा ऐम्सटर्डम ट्रेड यूनियनों के भीतर काम करने में पेश आने वाली मुश्किलों से सामना पड़ जाने पर हमारे बहुत से साथियों ने इस जटिल दायित्व से कतरा जाने का फैसला कर लिया। वे अनन्यतः यह चर्चा करते रहे कि ऐम्सटर्डम यूनियनों में संगठनात्मक संकट पैदा हो गया है, मजदूर यूनियनों को छोड़ कर भाग रहे हैं, मगर वे इस बात पर गौर करने में असफल रहे कि विश्वव्यापी आर्थिक संकट के आरम्भ में कुछ ह्रास के बाद, ये यूनियनें फिर बढ़ने लगीं। ट्रेड यूनियन आन्दोलन की एक विलक्षणता ठीक यह तथ्य रही है कि जब पूंजीपति वर्ग ने ट्रेड यूनियनों पर हमले किये, जब अनेक देशों में ट्रेड यूनियनों को "समन्वित करने" की कोशिशें की गयीं (पोलैंड, हंगेरी आदि), जब सामाजिक बीमे में और वेतनों में कटौती हुई, तब सुधारवादी ट्रेड यूनियन नेताओं की ओर से प्रतिरोध के अभाव के बावजूद, मजदूर इन यूनियनों के गिर्द और ज्यादा घनिष्ठ रूप में गोलबंद होने को मजबूर हुए, क्योंकि मजदूर यह देखना चाहते थे, और आज भी देखना चाहते हैं, कि ट्रेड यूनियनें उनके मूलभूत वर्ग हितों की जुझारू समर्थक बनें। इसी से इस बात का कारण स्पष्ट हो जाता है कि क्यों पिछले चंद वर्षों में फ्रांस, चेकोस्लोवाकिया, बेल्जियम, हालैंड, स्विट्जरलैंड, स्वेडन आदि में अधिकांश ऐम्सटर्डम यूनियनों की सदस्य संख्या में वृद्धि हुई है। अमरीकी मजदूर फेडरेशन (दि अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर) की सदस्यता में भी पिछले दो वर्षों में खासी वृद्धि हुई है।

अगर जर्मन साथियों ने ट्रेड यूनियन कार्य की समस्या को और बेहतर तरीके से समझा होता, जिसके बारे में कामरेड थेलमान ने कई मौकों पर चर्चा की, तो जिस समय फासिस्ट तानाशाही की स्थापना हुई उस समय की स्थिति से ट्रेड यूनियनों में निस्संदेह बेहतर स्थिति रही होती। १९३२ के अन्त में केवल लगभग दस प्रति शत पार्टी सदस्य स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों में थे। और यह स्थिति इस तथ्य के बावजूद थी कि कॉमिन्टर्न की छठी कांग्रेस के बाद

कम्युनिस्टों ने बहुत-सी हड़तालों में अगुवाई की। हमारे साथी अखबारों में तो लिखा करते थे कि हमारी ९० प्रति शत शक्तियों को ट्रेड यूनियनों में काम पर लगाया जाना चाहिए, पर दरअसल गतिविधियां एकांतिक रूप से क्रान्तिकारी ट्रेड यूनियन प्रतिपक्ष के गिर्द केन्द्रित रही, जो वस्तुतः ट्रेड यूनियनों का स्थान ले लेने की कोशिश में लगा था। और हिटलर द्वारा सत्ता हड़प लिये जाने के बाद क्या स्थिति रही ? दो वर्षों तक हमारे बहुत-से साथी स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों की फिर से स्थापना के लिए जूझने के सही नारे का अड़ियलपन से और लगातार विरोध करते रहे।

मैं लगभग हर अन्य पूंजीवादी देश के बारे में ऐसी ही मिसालें दे सकता हूं।

पर योरपीय देशों में ट्रेड यूनियन एकता के लिए संघर्ष में हम पहली गंभीर उपलब्धियां भी हासिल कर चुके हैं। मेरा इशारा उस छोटे से ऑस्ट्रिया की तरफ है जहां कम्युनिस्ट पार्टी की पहलकदमी पर गैर-कानूनी ट्रेड यूनियन आन्दोलन के लिए एक आधार तैयार कर लिया गया है। फरवरी के संग्रामों के बाद औटो बॉयर के नेतृत्व में सामाजिक-जनवादियों ने यह सिद्धांत-सूत्र जारी किया : "स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों की फिर से स्थापना फासिज्म के पतन के बाद ही हो सकती है।" कम्युनिस्टों ने ट्रेड यूनियनों की फिर से स्थापना करने के कर्तव्य को हाथ में लिया। उस कार्य का हर पहलू ऑस्ट्रियाई सर्वहारा के जीते-जागते संयुक्त मोर्चे का एक खंड था। भूमिगत परिस्थितियों में स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों की सफलतापूर्वक फिर से स्थापना से फासिज्म को गहरा धक्का लगा। सामाजिक-जनवादी अनिश्चय की स्थिति में थे। उनमें से कुछ ने सरकार से समझौते की बातें करने की कोशिश की। दूसरों ने हमारी सफलताओं को देख खुद अपनी समानान्तर गैर-कानूनी ट्रेड यूनियनें कायम की। मगर रास्ता एक ही हो सकता था : या तो फासिज्म के सामने आत्मसमर्पण या फासिज्म के खिलाफ संयुक्त संघर्ष के जरिये ट्रेड यूनियनों की एकता। जन दबाव के अन्तर्गत भूतपूर्व ट्रेड यूनियन नेताओं द्वारा बनायी गयी समानान्तर यूनियनों के ढुलमुल नेताओं ने विलयन के लिए राजी होने का फैसला किया। इस विलयन का आधार है पूंजीवाद और फासिज्म के हमले के खिलाफ निर्मम संघर्ष तथा ट्रेड यूनियन जनवाद की गारंटी। हम ट्रेड यूनियनों के विलयन के इस तथ्य का स्वागत करते हैं जो कि युद्ध के बाद ट्रेड यूनियनों के बाजाब्ता विभाजन के बाद की इस तरह की पहली घटना है और इस वजह से अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की है।

फ्रांस में संयुक्त मोर्चे ने निर्विवाद रूप में ट्रेड यूनियन एकता हासिल करने में शक्तिशाली प्रेरक का काम किया है। मजदूर महासंघ (जनरल कॉन्फेडेरेशन ऑफ लेबर) के नेता कम महत्व के और गौण या रस्मी किस्म के मसले

उठा कर ट्रेड यूनियनों की वर्ग नीति के मुख्य मसले का विरोध करते रहे हैं और इस प्रकार एकता की स्थापना में हर तरह से बाधा डालते रहे हैं और अभी भी डाल रहे हैं। ट्रेड यूनियन एकता के लिए संघर्ष की एक निर्विवाद सफलता रही है स्थानीय पैमाने पर एक ही यूनियन की स्थापना, जिसमें, मसलन रेल मार्ग के मजदूरों के मामले में, दोनों ट्रेड यूनियनों के लगभग तीन-चौथाई सदस्य आ जाते हैं।

हम निश्चय ही हर देश में और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर ट्रेड यूनियन एकता फिर से कायम करने के पक्ष में हैं।

हम हर उद्योग में एक यूनियन के पक्ष में हैं। हम हर देश में ट्रेड यूनियनों के एक महासंघ (फेडरेशन) के पक्ष में हैं।

हम उद्योगों के आधार पर संगठित ट्रेड यूनियनों के एक-एक अन्तर्राष्ट्रीय महासंघों (फेडरेशनों) के पक्ष में हैं।

हम वर्ग संघर्ष पर आधारित ट्रेड यूनियनों के एक इन्टरनेशनल (अन्तर्राष्ट्रीय संगठन) के समर्थक हैं।

हम पूंजी और फासिज्म के हमले के खिलाफ मजदूर वर्ग के एक प्रमुख दुर्ग के रूप में संयुक्त वर्ग ट्रेड यूनियनों के पक्ष में हैं। ट्रेड यूनियनों को संयुक्त करने के मामले में हमारी एक ही शर्त है: पूंजी के खिलाफ, फासिज्म के खिलाफ तथा भीतरी ट्रेड यूनियन जनवाद के लिए संघर्ष।

वक्त इंतजार नहीं करता। हमारे लिए राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर ट्रेड यूनियन एकता का सवाल वर्ग शत्रु के खिलाफ हमारे वर्ग को शक्तिवान, एक एक ट्रेड यूनियन संगठनों में ऐक्यबद्ध, करने के महान कार्य का सवाल है। हम इस तथ्य का स्वागत करते हैं कि इस वर्ष मई दिवस से ठीक पहले मजदूर यूनियनों के लाल इन्टरनेशनल (रेड इन्टरनेशनल ऑफ लेबर यूनियन्स) ने ऐम्सटर्डम इन्टरनेशनल के सामने विश्व ट्रेड यूनियन आन्दोलन को ऐक्यबद्ध करने की शर्तों, विधियों और रूपों के प्रश्न पर संयुक्त रूप से विचार करने का प्रस्ताव रखा। ऐम्सटर्डम इन्टरनेशनल के नेताओं ने इस घिसे-पिटे बहाने का इस्तेमाल करते हुए प्रस्ताव को ठुकरा दिया कि ट्रेड यूनियन आन्दोलन की एकता ऐम्सटर्डम इन्टरनेशनल के भीतर ही संभव है। इस ऐम्सटर्डम इन्टरनेशनल में, प्रसंगवश यह बता दिया जाय, महज कुछेक योरपीय देशों की ट्रेड यूनियनें ही शामिल हैं।

किन्तु ट्रेड यूनियनों में काम करने वाले कम्युनिस्टों को ट्रेड यूनियन आन्दोलन की एकता के लिए अथक रूप से संघर्ष जारी रखना चाहिए। लाल ट्रेड यूनियनों और प्रोफिंटर्न का कर्तव्य यह है कि वे—ऐम्सटर्डम इन्टरनेशनल के प्रतिक्रियावादी नेताओं के अड़ियल प्रतिरोध के बावजूद—पूंजी और फासिज्म के

हमले के खिलाफ, शीघ्र से शीघ्र सारी ट्रेड यूनियनों को संयुक्त संघर्ष में लाने के लिए, तथा ट्रेड यूनियन आन्दोलन में एकता स्थापित करने के लिए अपनी शक्ति भर कुछ भी उठा न रखें। लाल ट्रेड यूनियनों और प्रोफिटर्न को इस काम में हमारा पूर्ण समर्थन मिलना चाहिए।

जिन देशों में छोटी-छोटी लाल ट्रेड यूनियनें मौजूद हैं, वहां के लिए हमारी यह सिफारिश है कि वे बड़ी सुधारवादी यूनियनों में अपने शामिल कर लिये जाने के लिए प्रयास करें, मगर अपने विचारों की रक्षा करने के अधिकार और निष्कासित सदस्यों की बहाली की मांग जारी रखें। मगर जिन देशों में विशाल सुधारवादी ट्रेड यूनियनों के समानान्तर लाल ट्रेड यूनियनें अस्तित्व में हों, वहां हमें पूंजीवादी हमले के खिलाफ संघर्ष तथा ट्रेड यूनियन जनवाद की गारंटी के मंच के आधार पर एकता कांग्रेसें बुलाने के लिए कार्य करना चाहिए।

यह बात दो टूक कह दी जानी चाहिए कि अगर कोई कम्युनिस्ट मजदूर, कोई क्रान्तिकारी, अपने उद्योग की जन ट्रेड यूनियन का सदस्य नहीं है, जो सुधारवादी ट्रेड यूनियन को सच्चे वर्ग ट्रेड यूनियन संगठन में बदलने के लिए संघर्ष नही करता, जो वर्ग संघर्ष के आधार पर ट्रेड यूनियन एकता के लिए संघर्ष नहीं करता, ऐसा कम्युनिस्ट मजदूर, ऐसा क्रान्तिकारी मजदूर, अपना प्रारंभिक सर्वहारा कर्तव्य नहीं निभाता।

संयुक्त मोर्चा और नौजवान

साथियो, मैं पहले ही लक्षित कर चुका हूं कि फासिस्ट संगठनों में नौजवानों के भर्ती किये जाने की फासिस्ट विजय में क्या भूमिका रही है। नौजवानों की चर्चा करते समय हमें ईमानदारी से कहना चाहिए कि हमने पूंजी के हमले के खिलाफ, फासिज्म के खिलाफ और युद्ध के खतरे के खिलाफ संघर्ष में मेहनतकश नौजवानों के विराट हिस्सों को लाने के अपने कर्तव्य की उपेक्षा की है; हमने अनेक देशों में इस कर्तव्य की उपेक्षा की है। हमने फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में नौजवानों के अपार महत्व को घटा कर आंका है। हमने नौजवानों के विशेष आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक हितों को हमेशा ध्यान में नहीं रखा है। इसी प्रकार हमने नौजवानों को क्रान्तिकारी शिक्षा देने पर उचित ध्यान नहीं दिया है।

फासिज्म ने इन सभी का बहुत ही चालाकी से इस्तेमाल किया है और कुछ देशों में, खास तौर पर जर्मनी में, नौजवानों के बड़े हिस्सों को लुभा कर सर्वहारा-विरोधी पथ पर ले गया है। इस बात को स्मरण रखना चाहिए कि फासिज्म, नौजवानों को महज सैन्यवाद की चमक-दमक से ही आकृष्ट नहीं करता है। वह इनमें से कुछ को अपने दस्तों में खाना-कपड़ा देता है, दूसरों

को काम देता है, तथा नौजवानों के लिए तथाकथित सांस्कृतिक संस्थाएं भी कायम करता है, और इस प्रकार उनमें यह विचार भरने की कोशिश करता है कि वह दरअसल आम मेहनतकश नौजवानों को अन्न, वस्त्र, शिक्षा और काम दे सकता है और देना चाहता है।

अनेक पूंजीवादी देशों में हमारी युवा कम्युनिस्ट लीगें अभी भी मुख्यतः अवाम से कटी हुई संकीर्णतावादी संगठन हैं। उनकी बुनियादी कमजोरी यह है कि वे अब भी कम्युनिस्ट पार्टियों का अनुकरण करने, उनके कार्य-रूपों और विधियों का अनुकरण करने की कोशिश करती हैं और यह भूल जाती हैं कि युवा कम्युनिस्ट लीग नौजवानों की कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है। वे इस बात पर पर्याप्त ध्यान नही देतीं कि यह एक ऐसा संगठन है जिसके अपने विशिष्ट कर्तव्य हैं। इसके कार्य, शिक्षा और संघर्ष की विधियों और रूपों को नौजवानों के विशिष्ट स्तर और आवश्यकताओं के अनुरूप ढाला जाना चाहिए।

हमारे युवा कम्युनिस्टों ने फासिस्ट हिंसा और पूंजीवादी प्रतिक्रिया के खिलाफ लड़ाई में वीरता की स्मरणीय मिसालें पेश की हैं। किन्तु अब भी उनमें अडिग, ठोस काम के बूते पर आम नौजवानों को विरोधी प्रभावों से बाहर खींच लाने की क्षमता का अभाव है। इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि वे अभी भी फासिस्ट जन संगठनों में काम के विरोध की अपनी धारणा पर विजय नहीं पा सके हैं तथा समाजवादी नौजवानों और अन्य गैर-कम्युनिस्ट नौजवानों के प्रति उनका दृष्टिकोण हमेशा सही नही रहता।

इस सबकी अधिकांश जिम्मेदारी बेशक कम्युनिस्ट पार्टियों को भी लेनी होगी। कारण यह कि युवा कम्युनिस्ट लीग के कार्य में उन्हें उसका नेतृत्व और समर्थन करना चाहिए। कारण यह कि नौजवानों की समस्या महज युवा कम्युनिस्ट लीग की समस्या नही है। यह सम्पूर्ण कम्युनिस्ट आन्दोलन की समस्या है। नौजवानों के लिए संघर्ष में कम्युनिस्ट पार्टियों और युवा कम्युनिस्ट लीग संगठनों को अवश्य ही वास्तविक निर्णायक तब्दीली लानी चाहिए। पूंजीवादी देशों में कम्युनिस्ट युवक आन्दोलन का मुख्य कर्तव्य है मेहनतकशों की युवा पीढ़ी को संगठित और ऐक्यबद्ध करते हुए संयुक्त मोर्चा निर्मित करने की दिशा में निर्भीक होकर बढ़ना। इस दिशा में उठाये गये आरंभिक कदमों का भी नौजवानों के क्रान्तिकारी आन्दोलन पर जो अपार प्रभाव पड़ता है, वह पिछले दिनों में फ्रांस और संयुक्त राज्य अमरीका के उदाहरणों से स्पष्ट है। संयुक्त मोर्चे का प्रयोग आरंभ कर देना ही इन देशों में तत्काल काफी सफलताएं हासिल कर लेने के लिए पर्याप्त था। इस प्रसंग में अन्तर्राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे के क्षेत्र में समस्त गैर-फासिस्ट नौजवान संगठनों के बीच अन्त-

राष्ट्रीय सहयोग स्थापित करने के लिए पेरिस में युद्ध और फासिज्म-विरोधी समिति की सफल पहलकदमी उल्लेखनीय है।

संयुक्त मोर्चा आन्दोलन के क्षेत्र में नौजवानों द्वारा हाल में उठाये गये इन सफल कदमों से यह भी पता चलता है कि नौजवानों के संयुक्त मोर्चों को जो रूप अपनाने चाहिए, उन्हें घिसे-पिटे ढंग के नहीं होना चाहिए और न अनिवार्यतः ऐसे होना चाहिए जैसे कम्युनिस्ट पार्टियों के अमल में देखने में आते हैं। युवा कम्युनिस्ट लीगों को नौजवानों के समस्त गैर-फासिस्ट जन संगठनों की शक्तियों को हर प्रकार ऐक्यबद्ध करने की कोशिश करनी चाहिए। इसमें फासिज्म के खिलाफ, नौजवानों को हर अधिकार से जिस अभूतपूर्व तरीके से वंचित किया जा रहा है उसके खिलाफ, नौजवानों के सैन्यीकरण के खिलाफ तथा नौजवान पीढ़ी के आर्थिक और सांस्कृतिक अधिकारों के लिए संघर्ष के निमित्त विविध प्रकार के समान संगठनों का निर्माण भी शामिल है, ताकि नौजवान मजदूरों को, वे जहां कहीं भी हों—कारखानों में या जबरी श्रम शिविरों में, श्रम कार्यालयों में, फौजी बैरकों और जहाजी बेड़ों में, स्कूलों में, या विविध खेलकूद, सांस्कृतिक या अन्य संगठनों में हों—फासिज्म-विरोधी मोर्चे के पक्ष में ले आया जाय।

युवा कम्युनिस्ट लीग को विकसित और मजबूत करते समय युवा कम्युनिस्ट लीग के हमारे सदस्यों को वर्ग संघर्ष के मंच पर कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट यूथ लीगों (समाजवादी युवजन सभाओं) के फासिस्ट-विरोधी संघ निर्मित करने के लिए कार्य करना चाहिए।

संयुक्त मोर्चा और महिलाएं

साथियो, मेहनतकश महिलाओं के बीच—मजदूरनियों, बेरोजगार महिलाओं, किसान महिलाओं और गृहिणियों के बीच—कार्य का महत्व भी उसी तरह कम करके आंका गया है, जैसे नौजवानों के बीच कार्य का महत्व। फासिज्म जहां नौजवानों से सबसे ज्यादा मशक्कत कराता है, वहीं महिलाओं को वह खास निर्ममता और सनकीपन के साथ गुलाम बनाता है और इसके लिए वह उस मां, गृहिणी, हर अकेली मेहनतकश स्त्री की अन्तर्तम भावनाओं के साथ खिलवाड़ करता है जिसका भविष्य अनिश्चित होता है। फासिज्म परोपकारी होने का स्वांग रच कर भूखों मर रहे परिवार के सामने भीख के चंद टुकड़े फेंक देता है और इस तरह फासिज्म द्वारा उन पर थोपी गयी अभूतपूर्व गुलामी से खास तौर पर मेहनतकश महिलाओं में उत्पन्न कटुता को दफना देने की कोशिश करता है। यह मेहनतकश स्त्रियों को उद्योग से बाहर निकाल फेंकता है, जरूरतमंद लड़कियों को जबरन गांवों में भेज देता है और

उन्हें धनी किसानों और जमींदारों के बे-मजूरी चाकरों की दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में धकेल देता है। वह स्त्रियों से सुखी घर और पारिवारिक जीवन का वायदा करता है, मगर वह महिलाओं को वेश्यावृत्ति अपनाने को अन्य किसी भी पूंजीवादी हुकूमत से ज्यादा मजबूर करता है।

कम्युनिस्टों को, और सबसे बढ़ कर हमारी महिला कम्युनिस्टों को, यह अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि तब तक फासिज्म और युद्ध के खिलाफ सफल लड़ाई नहीं लड़ी जा सकती, जब तक कि महिलाओं के व्यापक हिस्से संघर्ष में नहीं उतारे जाते। मात्र अभियान से यह कार्य संपन्न नहीं होगा। हर मामले की ठोस स्थिति को ध्यान में रखते हुए हमें महिलाओं के मूलभूत हितों और मांगों के गिर्द—ऊंची कीमतों के खिलाफ उनकी मांगों के लिए, समान कार्य के लिए समान वेतन के सिद्धान्तों के आधार पर उच्चतर वेतनों के लिए, सामूहिक बर्खास्तगियों के खिलाफ, महिलाओं के दर्जे में असमानता की हर अभिव्यक्ति के खिलाफ तथा फासिस्ट गुलामी के खिलाफ लड़ाई में—आम महिलाओं को लामबंद करने का रास्ता खोज निकालना होगा।

श्रमजीवी महिलाओं को क्रान्तिकारी आन्दोलन में खींच कर लाने की कोशिश करते समय जहां कहीं जरूरी हो वहां इस कार्य के लिए महिलाओं के अलग संगठन बनाने से हमें नहीं डरना चाहिए। पहले से बनी बनायी इस धारणा से कि मजदूर आन्दोलन में "महिलाओं के पृथकतावाद" के खिलाफ संघर्ष के अंग के रूप में पूंजीवादी देशों में कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के महिला संगठनों को भंग कर दिया जाना चाहिए, अक्सर बहुत नुकसान पहुंचा है।

क्रान्तिकारी, सामाजिक-जनवादी और प्रगतिशील युद्ध-विरोधी और फासिस्ट-विरोधी महिला संगठनों के बीच संपर्क स्थापित करने और संयुक्त संघर्ष चलाने के लिए सरलतम और सबसे लचीले रूपों को खोजना चाहिए। हमें इस बात का ध्यान रखने में कोई कोर-कसर नहीं रखनी चाहिए कि महिला मजदूर और आम तौर पर मेहनतकश स्त्रियां संयुक्त मजदूर वर्ग मोर्चे और फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे की कतारों में अपने वर्ग भाइयों के कंधे से कंधा मिला कर लड़ें।

साम्राज्यवाद-विरोधी संयुक्त मोर्चा

बदली हुई अन्तर्राष्ट्रीय और आन्तरिक परिस्थिति सारे औपनिवेशिक और अर्ध-औपनिवेशिक देशों में **साम्राज्यवाद-विरोधी संयुक्त मोर्चे** के सवाल को असाधारण महत्व का बना देती है।

उपनिवेशों और अर्ध-उपनिवेशों में संघर्ष का व्यापक साम्राज्यवाद-विरोधी संयुक्त मोर्चा बनाते समय सबसे बढ़ कर यह जरूरी है कि उन नाना परि-

स्थितियों को जिनमें आम जनता का साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष आगे बढ़ रहा है, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की परिपक्वता की विभिन्न मात्राओं को, उसके भीतर सर्वहारा की भूमिका को तथा आम जनता पर कम्युनिस्ट पार्टी के प्रभाव को पहचाना जाय।

ब्राजील में समस्या भारत, चीन तथा अन्य देशों से भिन्न है।

ब्राजील में राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा स्थापित करके संयुक्त साम्राज्यवाद-विरोधी मोर्चा विकसित करने के लिए सही आधार तैयार कर लेने के बाद कम्युनिस्ट पार्टी को इस मोर्चे का और अधिक विस्तार करने के लिए हर प्रयास करना होगा और इस कार्य के लिए उसे सर्वप्रथम लाखों किसानों को उसके भीतर लाना है जिससे क्रान्ति के प्रति पूरी तरह समर्पित जन क्रान्तिकारी सेना की इकाइयां निर्मित हो सकें और राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे की हुकूमत कायम की जा सके।

भारत में कम्युनिस्टों को सभी साम्राज्यवाद-विरोधी जन गतिविधियों का, जिनमें वे गतिविधियां भी शामिल हैं जो राष्ट्रीय सुधारवादी नेतृत्व में चल रही है, समर्थन करना चाहिए, विस्तार करना चाहिए और उनमें भाग लेना चाहिए। अपनी राजनीतिक और संगठनात्मक स्वतंत्रता की रक्षा करते हुए उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लेने वाले संगठनों के भीतर भी सक्रिय कार्य करना चाहिए जिससे ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ भारतीय जनगण के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन को और अधिक विकसित करने के लिए उनके बीच एक राष्ट्रीय क्रान्तिकारी पक्ष के स्पष्ट रूप में उभर कर सामने आने में आसानी हो।

चीन में, जहां जन आन्दोलन के फलस्वरूप अभी ही देश के काफी बड़े भू-भाग में सोवियत जिले निर्मित हो चुके हैं और शक्तिशाली लाल सेना गठित हो चुकी है, जापानी साम्राज्यवाद के दस्युतापूर्ण हमले और नानकिंग सरकार की गद्दारी से महान चीनी जनता का राष्ट्रीय अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। चीनी सोवियतें चीन के गुलाम बनाये जाने और विभाजित किये जाने के खिलाफ संघर्ष में एकता कायम करने वाले केंद्र का काम कर सकती हैं—ऐसे केंद्र का जो चीनी जनता की राष्ट्रीय प्रतिरक्षा के लिए सारी साम्राज्यवाद-विरोधी शक्तियों को गोलबंद करे।

इसलिए जापानी साम्राज्यवाद और उसके दलालों के खिलाफ व्यापकतम साम्राज्यवाद-विरोधी संयुक्त मोर्चा गठित करने में चीन के भू-भाग पर मौजूद उन सारी संगठित शक्तियों के साथ मिलजुल कर, जो अपने देश और अपनी जनता की मुक्ति के लिए वास्तविक संघर्ष चलाने के लिए तत्पर हैं, हमारी

बहादुर बिरादराना चीन की पार्टी ने जो पहलकदमी की है, हम उसका अनुमोदन करते हैं।

मुझे विश्वास है कि अगर मैं यह कहता हूं कि हम संपूर्ण विश्व के क्रान्तिकारी सर्वहारा की ओर से चीन की सारी सोवियतों को, चीनी क्रान्तिकारी जनता को, अपनी हार्दिकतम बिरादराना बधाइयां भेजते हैं, तो मैं अपनी पूरी कांग्रेस की भावनाओं और विचारों को अभिव्यक्त करता हूं। हम चीन की वीर लाल सेना को अपनी हार्दिक बिरादराना बधाइयां भेजते हैं, जो हजारों संग्रामों की अग्नि परीक्षा में तप कर निकली है। और, हम चीनी जनता को सारे साम्राज्यवादी लुटेरों और उनके चीनी पिट्ठुओं से पूर्ण मुक्ति के लिए उनके संघर्ष को समर्थन देने के अपने दृढ़ संकल्प का आश्वासन देते हैं।

संयुक्त मोर्चे की सरकार

साथियो, हमने मजदूर वर्ग के संयुक्त मोर्चे की दिशा में निर्भीक और दृढ़तापूर्ण रास्ता अपनाया है तथा इसे पूरी तरह सुसंगत रूप से अमल में लाने को तैयार हैं।

अगर हम कम्युनिस्टों से पूछा जाता है कि क्या हम केवल आंशिक मांगों के लिए संघर्ष में ही संयुक्त मोर्चे की हिमायत करते हैं, या क्या हम उस समय भी जिम्मेदारी में साझीदार बनने को तैयार हैं जबकि संयुक्त मोर्चे के आधार पर सरकार बनाने का सवाल उठे, तो हम अपनी जिम्मेदारी के पूरे बोध के साथ कहते हैं : जी हां, हम स्वीकार करते हैं कि ऐसी परिस्थिति पैदा हो सकती है जिसमें सर्वहारा संयुक्त मोर्चे की या फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे की सरकार का गठन न सिर्फ संभव बल्कि सर्वहारा के हितों में आवश्यक हो जाय। और, उस हालत में बिना लेशमात्र हिचक के हम ऐसी सरकार के गठन के पक्ष में अपनी राय देंगे।

मैं ऐसी सरकार की बात नहीं कर रहा हूं जो सर्वहारा क्रान्ति की विजय के बाद बने। निस्संदेह, यह असंभव नहीं कि किसी देश में पूंजीपति वर्ग के क्रान्तिकारी ढंग से उखाड़ फेंके जाने के तत्काल बाद क्रान्ति में भाग लेने वाली एक खास पार्टी (या उसके वामपक्ष) के साथ बने कम्युनिस्ट पार्टी के शासन-दल (गवर्नमेन्ट ब्लाक) के आधार पर सोवियत सरकार गठित हो जाय। जैसा कि हम जानते हैं, अक्तूबर क्रान्ति के बाद रूसी बोल्शेविकों की विजयी पार्टी ने सोवियत सरकार में वामपंथी समाजवादी-क्रान्तिकारियों के प्रतिनिधियों को भी शामिल किया था। अक्तूबर क्रान्ति की विजय के बाद प्रथम सोवियत सरकार की यह खास विशेषता थी।

मैं इस तरह के किसी मामले का जिक्र नहीं कर रहा हूं, बल्कि सोवियत

क्रान्ति की विजय की पूर्ववेला में और क्रान्ति से पहले संयुक्त मोर्चा सरकार के गठन की सम्भावना का जिक्र कर रहा हूं।

यह किस प्रकार की सरकार है? और किस स्थिति में ऐसी सरकार का कतई कोई सवाल उठ सकता है?

यह प्रथमतः फासिज्म और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ संघर्ष की सरकार है। इसे निश्चित रूप में संयुक्त मोर्चा आन्दोलन के फलस्वरूप आविर्भूत सरकार होना चाहिए और कम्युनिस्ट पार्टी तथा मजदूर वर्ग के जन संगठनों पर किसी तरह पाबंदी नहीं लगानी चाहिए, बल्कि इसके विपरीत, प्रतिक्रान्तिकारी वित्तीय धनकुबेरों और उनके फासिस्ट दलालों के खिलाफ दृढ़तापूर्वक कदम उठाने चाहिए।

उपयुक्त क्षण में, बढ़ते हुए संयुक्त मोर्चा आन्दोलन पर भरोसा करते हुए, देश विशेष की कम्युनिस्ट पार्टी एक सुनिश्चित फासिस्ट-विरोधी मंच के आधार पर ऐसी सरकार के गठन की हिमायत करेगी।

किन वस्तुगत परिस्थितियों में ऐसी सरकार को गठित करना संभव होगा? सामान्यतम रूप में, इस सवाल का हमारा जवाब निम्नलिखित होगा: राजनीतिक संकट की परिस्थितियों में, जिस समय शासक वर्ग फासिस्ट-विरोधी जन आन्दोलन के प्रबल उभार का सामना करने की स्थिति में नहीं रहेंगे। मगर यह सामान्य संदर्श मात्र है, जिसके बिना अमल में किसी संयुक्त मोर्चा सरकार का गठन कर सकना विरले ही सम्भव होगा। कुछ सुनिश्चित और विशिष्ट पूर्वापेक्षाओं के मौजूद होने पर ही राजनीतिक दृष्टि से एक आवश्यक कर्तव्य के रूप में ऐसी सरकार के गठन का सवाल सामने आ सकता है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस संदर्भ में निम्नलिखित पूर्वापेक्षाएं सबसे ज्यादा ध्यान देने योग्य हैं:

एक तो, पूंजीपति वर्ग के राज्य यंत्र को पहले ही काफी असंगठित और पंगु हो चुका होना चाहिए, जिससे पूंजीपति वर्ग प्रतिक्रियावाद और फासिज्म के खिलाफ संघर्ष की सरकार के गठन को रोक न सके।

दूसरे, मेहनतकशों के व्यापक समुदायों, खास तौर पर जन ट्रेड यूनियनों, को फासिज्म और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ उग्र बगावत की अवस्था में होना चाहिए, गोकि यह विद्रोह करने के लिए, सोवियत सत्ता की स्थापना के लिए कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में लड़ने के लिए तैयार न हो।

तीसरे, सामाजिक-जनवाद और संयुक्त मोर्चे में शरीक होने वाली अन्य पार्टियों की कतारों में विभेदों के उभरने और वाम पक्ष की ओर बढ़ने की प्रक्रिया को पहले ही उस बिंदु तक पहुंच चुका होना चाहिए, जहां उनका खासा बड़ा हिस्सा फासिस्टों और अन्य प्रतिक्रियावादियों के खिलाफ निर्मम कदम

उठाये जाने की मांग करे, और कम्युनिस्टों के साथ मिल कर फासिज्म के खिलाफ लड़े तथा खुद अपनी पार्टी के उस प्रतिक्रियावादी तबके का खुल कर विरोध करे जो कम्युनिज्म के प्रति शत्रुता रखता है।

यह बात पहले से कह सकना असंभव है कि कब और किन देशों में वस्तुतः ऐसी स्थिति पैदा होगी जिसमें ये पूर्वापेक्षाएं पर्याप्त मात्रा में मौजूद रहेंगी। किन्तु, चूंकि ऐसा नहीं है कि किसी भी पूंजीवादी देश में ऐसी संभावना न उत्पन्न हो, इसलिए हमें इस पर अवश्य ध्यान देना चाहिए, और इसके अनुरूप न सिर्फ स्वयं को दिशा देनी और तैयार करना चाहिए, बल्कि मजदूर वर्ग को भी दिशा देनी चाहिए।

आज इस सवाल को बहस के लिए हम इस वजह से उठा रहे हैं कि यह वर्तमान स्थिति से तात्कालिक संभावनाओं के हमारे आकलन से, तथा पिछले दिनों हाल में अनेक देशों में संयुक्त मोर्चा आन्दोलन की वास्तविक बढ़ोतरी से, संबद्ध है। दस साल से ज्यादा समय तक पूजीवादी देशों में स्थिति ऐसी रही है कि कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के लिए इस प्रकार के सवाल पर विचार-विमर्श करना जरूरी नहीं था।

साथियो, आपको याद होगा कि १९२२ में चौथी कांग्रेस में और फिर १९२४ में पांचवीं कांग्रेस में मजदूरों की या मजदूरों और किसानों की सरकार के सवाल पर विचार-विमर्श हुआ था। मूलतः यह मुद्दा तत्वतः ऐसे सवाल की ओर मुड़ गया जिसकी तुलना लगभग उस सवाल से की जा सकती है, जिस पर हम आज बहस कर रहे हैं। इस सवाल को लेकर कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल में उस समय जो बहसें हुईं और खास तौर पर इस संदर्भ में जो राजनीतिक गलतियां की गयीं, उनका इस सवाल पर बोल्शेविक लाइन से दक्षिणपंथ या "वामपंथ" की ओर भटकाव के खतरे के खिलाफ हमारी चौकसी तेज करने की दृष्टि से आज भी महत्व बरकरार है। इसलिए मैं इनमें से चंद गलतियों की ओर थोड़े शब्दों में इशारा करूंगा, ताकि हमारी पार्टियों की मौजूदा नीति के लिए जरूरी सबक निकाले जा सकें।

गलतियों की पहली श्रृंखला का जन्म इस तथ्य से हुआ कि मजदूरों की सरकार के सवाल को राजनीतिक संकट के अस्तित्व से साफ-साफ और दृढ़ता के साथ नहीं जोड़ा गया था। इस कारण, दक्षिणपंथी अवसरवादी इस मामले की ऐसी व्याख्या कर सके कि जैसे हमें किसी भी, अर्थात "सामान्य" स्थिति में भी, कम्युनिस्ट पार्टी समर्थित मजदूरों की सरकार गठित करने की कोशिश करनी चाहिए। दूसरी ओर, अति-वामपंथी पूंजीपति वर्ग के उखाड़ फेंके जाने के बाद सशस्त्र विप्लव के जरिये स्थापित मजदूरों की सरकार को ही स्वीकार करते थे। दोनों ही दृष्टिकोण गलत थे। इसलिए ऐसी गलतियों के दुहराये

जाने से बचने के लिए अब हम राजनीतिक संकट और जन आन्दोलन के उभार की उन विशिष्ट ठोस परिस्थितियों पर ठीक-ठीक विचार करने पर बहुत ज्यादा जोर देते हैं, जिनमें संयुक्त मोर्चा सरकार की स्थापना सम्भव और राजनीतिक दृष्टि से आवश्यक सिद्ध हो सकती है।

गलतियों की दूसरी श्रृंखला का जन्म इस तथ्य से हुआ कि मजदूरों की सरकार के सवाल को सर्वहारा के जुझारू जन संयुक्त मोर्चा आन्दोलन के विकास से संबद्ध नहीं किया गया था। इससे दक्षिणपंथी अवसरवादी इस सवाल को तोड़ने-मरोड़ने और इसे शुद्ध संसदीय जोड़-तोड़ के आधार पर सामाजिक-जनवादी पार्टियों के साथ 'ब्लाक' बनाने की सिद्धान्तहीन कार्यनीतियों तक सीमित कर देने में सफल हो सके।

दूसरी ओर, अति-वामपंथियों ने सारे सामाजिक-जनवादियों को अनिवार्यतः प्रतिक्रान्तिकारी मान कर चीखना शुरू किया : "प्रतिक्रान्तिकारी सामाजिक-जनवाद के साथ कोई साझा नहीं।"

दोनों ही गलत थे, और हम अब एक ओर इस बात पर जोर देते हैं कि हम ऐसी "मजदूर सरकार" के लिए जरा भी उत्सुक नहीं, जो एक विस्तारित सामाजिक-जनवादी सरकार से अधिक और कुछ नहीं होगी। हम "मजदूर सरकार" शब्दों का इस्तेमाल न करना भी बेहतर समझते हैं, और ऐसी संयुक्त मोर्चा सरकार की चर्चा करते हैं जो राजनीतिक चरित्र की दृष्टि से उन सभी सामाजिक-जनवादी सरकारों से भिन्न है, सिद्धान्त रूप में भिन्न है, जो अक्सर स्वयं को "मजदूर (या लेबर) सरकार" कहती हैं। जहां सामाजिक-जनवादी सरकार पूंजीवादी व्यवस्था को बरकरार रखने के हितों में पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग का साधन है, वहीं संयुक्त मोर्चा सरकार संपूर्ण मेहनतकश आबादी के हित में अन्य फासिस्ट-विरोधी पार्टियों के साथ सर्वहारा के क्रान्तिकारी हिरावल के सहयोग का साधन है, फासिज्म और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ संघर्ष की सरकार है। जाहिर है कि दोनों चीजों के बीच एक मूलगामी अन्तर है।

दूसरी ओर, हम सामाजिक-जनवाद के दो भिन्न-भिन्न खेमों के बीच अन्तर पर ध्यान देने की आवश्यकता पर जोर देते हैं। जैसा कि मैं पहले ही लक्षित कर चुका हूं, सामाजिक-जनवाद का एक प्रतिक्रियावादी खेमा है, मगर इसके साथ-साथ वामपंथी सामाजिक-जनवादियों का (बगैर उद्धरण चिन्हों के), उन मजदूरों का खेमा भी अस्तित्व में है और बढ रहा है जो क्रान्तिकारी बनते जा रहे हैं। व्यवहार में उनके बीच का निर्णायक अन्तर, मजदूर वर्ग के संयुक्त मोर्चे के प्रति उनके दृष्टिकोण में है। प्रतिक्रियावादी सामाजिक-जनवादी संयुक्त मोर्चे के विरुद्ध हैं, वे संयुक्त मोर्चा आन्दोलन पर कीचड़ उछालते हैं, वे इसका

तोड़-फोड़ करते हैं और इसे छिन्न-भिन्न करते हैं, क्योंकि यह पूंजीपति वर्ग के साथ समझौते की उनकी नीति पर कुठाराघात करता है। वामपंथी सामाजिक-जनवादी संयुक्त मोर्चे के पक्ष में हैं; वे संयुक्त मोर्चा आन्दोलन की रक्षा करते हैं, इसे विकसित और सुदृढ़ करते हैं। चूंकि यह संयुक्त मोर्चा आन्दोलन फासिज्म और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ एक जुझारू आन्दोलन है, इसलिए यह लगातार एक प्रेरक शक्ति बना रहेगा और संयुक्त मोर्चा सरकार को प्रतिक्रियावादी पूंजीपति वर्ग के खिलाफ संघर्ष करने को बाध्य करता रहेगा। जन आन्दोलन जितना ही शक्तिशाली होता जायेगा, प्रतिक्रियावादियों से लड़ने में सरकार का यह उतनी ही अधिक शक्ति से समर्थन कर सकेगा। और, जन आन्दोलन नीचे से जितना ही बेहतर संगठित होगा, कारखानों में, बेरोजगारों के बीच, मजदूरों के जिलों में, शहरों और गांवों के छोटे लोगों के बीच संयुक्त मोर्चे के गैर-पार्टी वर्ग संगठनों का जितना ही व्यापक जाल बिछा होगा, संयुक्त मोर्चा सरकार की नीति के अधःपतन की सम्भावना के खिलाफ उतनी ही ज्यादा गारंटी होगी।

गलत विचारों की तीसरी श्रृंखला, जो हमारी पहले की बहसों में प्रकाश में आयी, "मजदूर सरकार" की व्यावहारिक नीति से ही संबद्ध थी। दक्षिण-पंथी अवसरवादी यह सोचते थे कि "मजदूर सरकार" को "पूंजीवादी जनतंत्र के ढांचे के भीतर" ही रहना चाहिए, और फलतः इस ढाचे के बाहर जाने वाला कोई कदम नहीं उठाना चाहिए। दूसरी ओर, अति-वामपंथियों ने व्यवहार में संयुक्त मोर्चा सरकार बनाने की कतई कोई कोशिश करने से ही इनकार कर दिया।

१९२३ में सैक्सनी और थुरिंगिया में अमल में दक्षिणपंथी अवसरवादी "मजदूर सरकार" की साफ तसवीर देखने में आयी। कम्युनिस्टों का वामपंथी सामाजिक-जनवादियों (ज़ीग्नर ग्रुप) के साथ संयुक्त रूप में सैक्सनी की मजदूर सरकार में दाखिल होना, अपने आप में कोई गलती नहीं थी (सैक्सनी की मजदूर सरकार सामाजिक-जनवादी ज़ीग्नर के नेतृत्व में ११ अक्तूबर १९२३ को बनी थी जिसमें ५ समाजवादी और २ कम्युनिस्ट शामिल थे तथा ३० अक्तूबर को केंद्र सरकार की फौज ने उसे उखाड़ फेका था—अनु.); उल्टे, जर्मनी की क्रान्तिकारी परिस्थिति को देखते हुए यह कदम पूरी तरह औचित्यपूर्ण था। मगर शासन में भाग लेते हुए कम्युनिस्टों को अपनी स्थिति का उपयोग प्रथमतः सर्वहारा को हथियारबंद करने के उद्देश्य से करना चाहिए था। उन्होंने ऐसा नहीं किया। उन्होंने धनी लोगों का एक भी मकान काम के लिए नहीं लिया, हालांकि मजदूरों के बीच मकानों की इतनी कमी थी कि उनमें से अपनी बीवियों और बच्चों समेत बहुतेरों के पास अभी भी एक छप्पर नहीं था। उन्होंने मजदूरों

के क्रान्तिकारी जन आन्दोलन को संगठित करने के लिए भी कुछ नहीं किया। वे आम तौर पर "पूंजीवादी जनतंत्र के ढांचे के भीतर" साधारण संसदीय मंत्रियों की तरह आचरण करते रहे। जैसा कि आप जानते हैं, यह ब्रंडलर (हेनरिख ब्रंडलर, जर्मन कम्युनिस्ट पार्टी के अवसरवादी गुट का नेता, जिसने सामाजिक-जनवादी पार्टी के चोटी के नेताओं के साथ मिली-भगत की और १९२३ में जर्मन सर्वहारा की शिकस्त में हाथ बंटाया; १९२९ में गुटबंदी की हरकतों पर उसे पार्टी से निकाल दिया गया—अनु.) और उसके अनुयायियों की अवसरवादी नीति का परिणाम था। इसका नतीजा ऐसे दिवालियेपन के रूप में सामने आया कि हम आज भी इस बात के एक चिरप्रतिष्ठित उदाहरण के रूप में सैक्सनी की सरकार का जिक्र करने को मजबूर हो जाते कि क्रान्तिकारियों को सत्ता में आने पर किस तरह का आचरण नहीं करना चाहिए।

साथियो, हम हर संयुक्त मोर्चा सरकार से एक सर्वथा भिन्न नीति का तकाजा करते हैं। हम यह तकाजा करते हैं कि ऐसी सरकार परिस्थिति की अपेक्षा के अनुरूप सुनिश्चित और आधारभूत क्रान्तिकारी मांगों को पूरा करे। मसलन, उत्पादन पर नियंत्रण, बैंकों पर नियंत्रण, पुलिस का संगठन भंग कर देना, उसके स्थान पर सशस्त्र मजदूरों के रक्षक-दल कायम करना, आदि।

पन्द्रह वर्ष पहले लेनिन ने "सर्वहारा क्रान्ति में संक्रमण करने या उसकी ओर बढ़ने के रूपों की खोज करने" पर अपना सारा ध्यान केंद्रित करने के लिए हमारा आह्वान किया था। यह सम्भव है कि बहुतेरे देशों में संयुक्त मोर्चा सरकार सबसे महत्वपूर्ण संक्रमणकालीन रूपों में से एक सिद्ध हो। लेनिन के इस आदेश से "वामपंथी" मतवादी सदा कतराते रहे हैं। संकीर्ण-मस्तिष्क वाले प्रचारक होने के नाते वे "संक्रमण के रूपों" की कभी भी परवाह किये बगैर महज "लक्ष्यों" के बारे में बातें करते थे। दूसरी ओर, दक्षिणपंथी अवसरवादियों ने एक अधिनायकत्व से दूसरे में शांतिपूर्ण संसदीय तरीके से जा पहुंचने का मजदूरों में भ्रम भरने के मकसद से पूंजीपति वर्ग के अधिनायकत्व और सर्वहारा के अधिनायकत्व के बीच एक विशेष जनवादी मध्यवर्ती चरण की स्थापना करने की कोशिश की है। इस मनगढ़ंत "मध्यवर्ती चरण" को उन्होंने "संक्रमणकालीन रूप" भी कहा है और लेनिन के शब्द भी उद्धृत किये हैं। मगर जालसाजी की इस कोशिश का पर्दाफाश करना मुश्किल नहीं था: क्योंकि लेनिन ने सर्वहारा क्रान्ति में संक्रमण या उसकी ओर बढ़ने, अर्थात पूंजीपति वर्ग के अधिनायकत्व को उखाड़ फेंकने के रूप की चर्चा की थी, न कि पूंजीवादी और सर्वहारा अधिनायकत्व के बीच किसी संक्रमणकालीन रूप की।

लेनिन ने सर्वहारा क्रान्ति में संक्रमण के रूप को इतना असाधारण महत्व क्यों दिया? क्योंकि उनके मस्तिष्क में सारी महान क्रान्तियों का आधारभूत

नियम विद्यमान था,—यह नियम कि जब मेहनतकश जनता के वस्तुतः व्यापक समुदाय को क्रान्तिकारी हिरावल के पक्ष में लाने का सवाल होता है जिसके बगैर सत्ता के लिए विजयी संघर्ष असम्भव है, तो आम जनता के लिए मात्र प्रचार और अभियान उसके **स्वयं अपने** राजनीतिक अनुभव का स्थान नही ले सकते। यह कल्पना कर लेना वामपंथी किस्म की एक आम गलती है कि जैसे ही राजनीतिक (या क्रान्तिकारी) संकट पैदा होता है, कम्युनिस्ट नेताओं के लिए यही काफी है कि वे क्रान्तिकारी विप्लव का नारा दे दें, और व्यापक जन समुदाय उनका अनुसरण करने लगेगा। नहीं, ऐसे संकट में भी यह जरूरी नही कि आम जनता ऐसा करने के लिए सदा तैयार रहे। स्पेन के मामले में हमने यह बात देखी। लाखों लोगों को स्वयं अपने अनुभव के जरिये जितनी तेजी से सम्भव हो उतनी तेजी से इस बात में निपुणता प्राप्त करने मे सहायक होना कि उन्हें क्या करना है, मूलगामी हल कहां खोजना है, कौन-सी पार्टी उनके विश्वास के योग्य है—अन्य चीजों के साथ-साथ इन्हीं उद्देश्यों के लिए संक्रमण-कालीन नारे तथा "सर्वहारा क्रान्ति में संक्रमण करने या उसकी ओर बढ़ने के" विशेष "रूपों" दोनों ही आवश्यक हैं। अन्यथा यह सम्भव है कि जनता का विशाल समुदाय, जोकि निम्न-पूजीवादी जनवादी भ्रमों और परंपराओं का शिकार होता है, उस समय भी डगमगाता रह जाय जबकि क्रान्तिकारी स्थिति मौजूद हो, क्रान्ति का पथ पाये बगैर टाल-मटोल करता रह जाय या भटक जाय—और फिर फासिस्ट जल्लादो के कुठार के नीचे आ जाय।

इसी कारण हम राजनीतिक संकट की परिस्थितियों में फासिस्ट-विरोधी संयुक्त मोर्चा सरकार के गठन की संभावना का सकेत करते हैं। अगर ऐसी सरकार जनता के दुश्मनों के खिलाफ सचमुच संघर्ष चलायेगी तथा मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट पार्टी को मुक्तहस्त छोड़ेगी, तो हम कम्युनिस्ट इसे पूर्ण समर्थन देंगे, तथा क्रान्ति के सिपाहियों के रूप में अग्नि परीक्षा की पहली कतार में अपना स्थान ग्रहण करेंगे। मगर जनता से हम साफ-साफ कह देते हैं: यह सरकार अन्तिम मुक्ति नहीं ला सकती ! यह शोषकों के वर्ग शासन को उखाड़ फेंकने की स्थिति में नही है, और इस कारण फासिस्ट प्रतिक्रान्ति के खतरे को अन्तिम रूप में समाप्त नही कर सकती। फलतः समाजवादी क्रान्ति के लिए तैयार होना आवश्यक है। सोवियत सत्ता, और केवल सोवियत सत्ता ही, ऐसी मुक्ति ला सकती है।

विश्व परिस्थिति के वर्तमान विकासक्रम का मूल्यांकन करते समय हम देखते हैं कि बहुतेरे देशों में राजनीतिक संकट परिपक्व हो रहा है। इस कारण संयुक्त मोर्चा सरकार के सवाल पर हमारी कांग्रेस में दृढ़ निर्णय लिया जाना अत्यन्त तात्कालिक और महत्व का है।

अगर हमारी पार्टियां संयुक्त मोर्चा सरकार गठित करने, तथा ऐसी सरकार को गठित करने और सत्ता में बरकरार रखने के लिए संघर्ष चलाने के जनता के क्रान्तिकारी प्रशिक्षण के लिए संघर्ष चलाने के मौके का बोल्शेविक तरीके से सदुपयोग करने में सफल होती हैं, तो यह संयुक्त मोर्चा सरकारों के गठन के पक्ष में हमारी नीति के राजनीतिक औचित्य का सबसे अच्छा प्रमाण होगा।

फासिज्म के खिलाफ विचारधारात्मक संघर्ष

हमारी पार्टियों के फासिस्ट-विरोधी संघर्ष का एक सबसे कमजोर पहलू यह है कि वे **फासिज्म की उत्तेजक लफ्फाजी के प्रति नाकाफी और बहुत ही मंद गति से प्रतिक्रिया व्यक्त करती हैं**, और आज तक फासिस्ट विचारधारा के खिलाफ संघर्ष की समस्याओं को नजरअंदाज करती आ रही हैं। बहुत से साथी यह विश्वास नहीं करते थे कि पूंजीवादी विचारधारा का फासिज्म की विचारधारा जैसा प्रतिक्रियावादी नमूना, जो अपनी बेहूदगी के मामले में अक्सर पागलपन की हद तक पहुंच जाता है, जन-साधारण पर कतई कोई प्रभाव डाल सकेगा। यह एक बहुत बड़ी गलती थी। पूंजीवाद की सड़ांध, उसकी विचारधारा और संस्कृति के अंतरतम तक पैठ जाती है तथा जनता के व्यापक समुदायों की अत्यन्त बुरी स्थिति उनके कुछ हिस्सों को इस सड़ांध के विचारधारात्मक कचरे का शिकार बनने की हालत में ला पटकती है।

फासिज्म के विचारधारात्मक रोगाणुओं की संक्रमण शक्ति को हमें किसी भी दशा में घटा कर नहीं आंकना चाहिए। उल्टे, हमें स्वयं अपनी ओर से, स्पष्ट, लोकप्रिय तर्कों तथा जन समुदाय के राष्ट्रीय मनोविज्ञान की विलक्षणताओं के प्रति सही, सुविचारित दृष्टिकोण के आधार पर विस्तृत विचारधारात्मक संघर्ष विकसित करना चाहिए।

फासिस्ट हर-राष्ट्र के संपूर्ण **इतिहास** को उलट-पलट रहे हैं ताकि उसके अतीत में जो कुछ महान और वीरतापूर्ण था, स्वयं को उसके उत्तराधिकारी और आगे ले चलने वाले के रूप में पेश कर सकें तथा जनता की राष्ट्रीय भावनाओं के प्रति जो कुछ अप्रतिष्ठाजनक या अप्रिय था, उसका इस्तेमाल फासिज्म के दुश्मनों के खिलाफ हथियार के रूप में कर सकें। जर्मनी में सैकड़ों पुस्तकें प्रकाशित की जा रही हैं जिनका एक ही लक्ष्य है—जर्मन जनता के इतिहास को गलत रूप में पेश करना तथा उस पर फासिस्ट रंग चढ़ाना। नये-नये राष्ट्रीय-समाजवादी इतिहासकार जर्मनी के इतिहास को इस तरह अंकित करने की कोशिश करते हैं, मानो किसी "ऐतिहासिक नियम" के फलस्वरूप पिछले दो हजार वर्षों से इसमें विकास की एक खास रेखा लाल धागे

की तरह चली आयी है, जिसके कारण ऐतिहासिक दृश्यपटल पर एक राष्ट्रीय "उद्धारक" का, जर्मन जनता के एक "मसीहा" का, ऑस्ट्रियाई वंश-परंपरा के एक खास "कॉरपोरल" (अर्थात अडोल्फ हिटलर, जो पहले कॉरपोरल था—अनु.) का अवतार हुआ है। इन पुस्तकों में जर्मन जनता की अतीत की महानतम विभूतियों को इस तरह प्रस्तुत किया गया है, जैसे कि वे फासिस्ट रहे हों, तथा महान किसान आन्दोलनों को सीधे फासिस्ट आन्दोलनों का पूर्ववर्ती चित्रित किया गया है।

मुसोलिनी गैरीबाल्डी के वीरतापूर्ण व्यक्तित्व से लाभ उठाने की हरचंद कोशिश करता है। फ्रांसीसी फासिस्ट, जोन ऑफ आर्क को अपनी वीरांगना के रूप में प्रस्तुत करते हैं। अमरीकी फासिस्ट अमरीकी स्वाधीनता संग्राम की परंपराओं की वाशिंगटन और लिंकन की परंपराओं की दुहाई देते हैं। बुलगारियाई फासिस्ट आठवें दशक (पिछली शताब्दी के—अनु.) के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन तथा उसके जनता के प्रिय वीरों—वासिल लेव्स्की (१८३७-१८७३; बुलगारियाई क्रान्तिकारी, तुर्की आततायियों के खिलाफ राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष के नेता, आंतरिक क्रान्तिकारी संगठन के संस्थापक, जिन्हें ६ फरवरी १९७३ को फांसी दे दी गयी—अनु.), स्तेफान कारादजा (१८४४-१८६८; बुलगारियाई राष्ट्रीय क्रान्तिकारी, १८६८ में बागी दस्ते के नेता, तुर्की सेना के साथ लड़ाई में बुरी तरह घायल हो गये, उन्हें पकड़ लिया गया और जेल में उनकी हत्या कर दी गयी—अनु.) तथा अन्य का इस्तेमाल करते हैं।

जो कम्युनिस्ट यह मान लेते हैं कि इस सबका मजदूर वर्ग के ध्येय से कोई संबंध नहीं, जो ऐतिहासिक दृष्टि से सही तरीके से, वस्तुतः मार्क्सवादी, मार्क्सवादी-लेनिनवादी भावना के साथ अपने जनगण के अतीत से जन साधारण को अवगत कराने के लिए कुछ नहीं करते, जो वर्तमान संघर्ष को जनगण की क्रान्तिकारी परंपराओं और अतीत से जोड़ने के लिए कुछ नहीं करते—वे स्वेच्छा से उस सब कुछ को झूठी बकवास करने वाले फासिस्टों के हवाले कर देते हैं जो राष्ट्र के ऐतिहासिक अतीत में मूल्यवान है, ताकि फासिस्ट लोग जनता को धोखा दे सकें।

नहीं, साथियो, हमें स्वयं अपने जनगण के न सिर्फ वर्तमान और भविष्य बल्कि अतीत के भी हर महत्वपूर्ण सवाल से सरोकार है। हम कम्युनिस्ट लोग मजदूरों के व्यवसाय के हितों पर आधारित संकीर्ण नीति पर नहीं चलते। हम संकुचित बुद्धि वाले ट्रेड यूनियन अहलकार, या दस्तकारों और कारीगरों के मध्य युगीन शिल्प-संघों के नेता नहीं हैं। हम आधुनिक समाज के सबसे महत्वपूर्ण, महानतम वर्ग के—मजदूर वर्ग के—वर्ग हितों के प्रतिनिधि हैं, जिसके प्रारब्ध में पूंजीवादी व्यवस्था की यातनाओं से मानव जाति को मुक्त कराने का कार्य पड़ा है, वह वर्ग जो दुनिया के एक छठे हिस्से में पहले ही पूंजीवाद के

जुए को उतार कर फेंक चुका है और शासक वर्ग बन चुका है। हम सभी शोषित, मेहनतकश तबकों के, अर्थात किसी भी पूंजीवादी देश के विशाल बहुमत के, जीवंत हितों की रक्षा करते हैं।

पूंजीवादी राष्ट्रवाद चाहे जिस रूप में हो, हम कम्युनिस्ट सिद्धान्ततः उसके कट्टर दुश्मन हैं। मगर हम राष्ट्रीय निषेधवाद के समर्थक नहीं हैं और न हमें कभी इस रूप में पेश आना चाहिए। मजदूरों और सभी मेहनतकशों को सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना में दीक्षित करने का कार्य हर कम्युनिस्ट पार्टी के आधारभूत कर्तव्यों में से एक है। मगर जो कोई यह सोचता है कि इसमें उसे व्यापक मेहनतकश जन समुदाय की राष्ट्रीय भावनाओं का कतई तिरस्कार करने की इजाजत मिल जाती है या इसकी मजबूरी ही हो जाती है, वह सच्चा बोल्शेविक होने से बहुत दूर है तथा राष्ट्रीय सवाल पर लेनिन की शिक्षा को बिलकुल नहीं समझ सका है।

लेनिन ने, जो पूंजीवादी राष्ट्रवाद से सदा दृढ़ता के साथ और सुसंगत रूप में लोहा लेते रहे, १९१४ में लिखे गये "महान रूसियों के राष्ट्रीय स्वाभिमान के संबंध में" लेख में हमारे सामने राष्ट्रीय भावनाओं की समस्या के प्रति सही दृष्टिकोण की एक मिसाल रखी है। उन्होंने लिखा :

"क्या हम ऐसे वर्ग-चेतन महान-रूसी सर्वहारा हैं जिनके भीतर राष्ट्रीय स्वाभिमान की भावना प्रविष्ट ही नहीं हो सकती? निश्चय ही नहीं। हम अपनी भाषा और अपनी मातृभूमि से प्यार करते हैं; हम अन्य किसी दूसरे समुदाय से बढ़ कर इसके मेहनतकश अवाम (अर्थात इसकी आबादी के नौ-दसवें हिस्से) को बुद्धिमान जनवादियों और समाजवादियों के स्तर पर लाने के लिए कार्य कर रहे हैं। हम यह देख कर और अनुभव कर कि जारशाही जल्लाद, सामंत और पूंजीपति हमारी नयनाभिराम मातृभूमि को कितनी हिंसा, जुल्म और मखौल का शिकार बना रहे हैं, किसी भी दूसरे से बढ़ कर दुखी हैं। हमें इस तथ्य पर गर्व है कि हमारे बीच, हम महान रूसियों के बीच, इन हिंसात्मक कुकृत्यों का प्रतिरोध किया गया है; कि हमारे ही बीच रादिश्चेव, दिसंबरवादी, आठवें दशक के क्रान्तिकारी बुद्धिजीवी उत्पन्न हुए; कि १९०५ में महान रूसी मजदूर वर्ग ने अवाम की शक्तिशाली क्रान्तिकारी पार्टी निर्मित की...।

"हम इस बात को जान कर राष्ट्रीय गर्व से भर उठते हैं कि महान रूसी राष्ट्र ने भी एक क्रान्तिकारी वर्ग की सृष्टि की है; कि यह भी मानवजाति के सामने स्वतंत्रता के लिए और समाजवाद के लिए संघर्ष के महान उदाहरण रख सकने में समर्थ सिद्ध हुआ है, कि इसका योगदान महज महान नरहत्याओं,

फांसी के अनगिनत तख्तों, यातना कक्षों, महान दुर्भिक्षों तथा पादरियों, जारों भूस्वामियों और पूंजीपतियों की घृणित गुलामी तक ही सीमित नहीं है।

"हम राष्ट्रीय गर्व से पूरित हैं, और इसलिए हम खास तौर पर अपने दासतापूर्ण अतीत से...और अपने दासतापूर्ण वर्तमान से नफरत करते हैं जिसमें वही भूस्वामी पूंजीपतियों की मदद से हमें पोलैंड और उक्राइन को कुचल देने के लिए, फारस में और चीन में जनतांत्रिक आन्दोलन का गला घोंट देने के लिए, महान-रूसी राष्ट्रीय गौरव को लज्जित करने वाले रोमानोव, बोब्रिंस्की, पुरिसकेविच जैसों के गिरोह को सशक्त बनाने के लिए, युद्ध में झोंकते हैं।" (संगृहीत रचनाएं, रूसी संस्करण, खंड २१, पृष्ठ ८५-८६)

यह है वह जो राष्ट्रीय स्वाभिमान के बारे में लेनिन ने लिखा है।

मैं सोचता हूं, साथियो, राइखस्टाग आगजनी मुकदमे के दौरान फासिस्टों ने बुलगारियावासियों को बर्बर लोग कह कर उन पर जब कीचड़ उछालने की कोशिश की, तो मैंने बुलगारियाई लोगों के मेहनतकश समुदायों के राष्ट्रीय सम्मान की पैरवी करके गलती नहीं की, जो वास्तविक बर्बरों और असभ्यों—फासिस्ट दस्युओं—के खिलाफ वीरतापूर्वक संघर्ष कर रहे हैं, और न मैंने यह ऐलान करके गलती की कि कोई वजह नहीं कि मैं बुलगारियाई होने पर लज्जा का अनुभव करूं, बल्कि उल्टे मुझे वीर बुलगारियाई मजदूर वर्ग की संतान होने का गर्व है।

साथियो, सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद को हर देश में स्वयं को —कहा जाय तो—"वहां की जलवायु के अनुसार ढालना" चाहिए, ताकि वहां की धरती में वह गहरी जड़ें जमा सके। अलग-अलग देशों में सर्वहारा वर्ग संघर्ष के तथा मजदूर आन्दोलन के राष्ट्रीय स्वरूपों का सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद से कोई अंतर्विरोध नहीं; उल्टे सर्वहारा के अन्तर्राष्ट्रीय हितों की सफलतापूर्वक रक्षा ठीक इन्हीं स्वरूपों में की जा सकती है।

कहने की जरूरत नहीं कि इस बात का जनता के सामने सब जगह और सब मौकों पर पर्दाफाश करना तथा उनके समक्ष यह ठोस रूप में सिद्ध करना आवश्यक है कि फासिस्ट पूंजीपति वर्ग आम राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने का बहाना लेकर स्वयं अपनी ही जनता को उत्पीड़ित और शोषित करने तथा दूसरे राष्ट्रों को लूटने और गुलाम बनाने की अपनी स्वार्थपूर्ण नीति चला रहा है। मगर हमें स्वयं को इसी तक सीमित नहीं रखना चाहिए। हमें साथ ही मजदूर वर्ग के संघर्ष तथा कम्युनिस्ट पार्टियों की कार्रवाइयों से ही यह सिद्ध कर देना चाहिए कि हर प्रकार की दासता और राष्ट्रीय उत्पीड़न के खिलाफ उठ कर सर्वहारा ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता और जनता की स्वाधीनता के लिए एक मात्र सच्चा योद्धा है।

अपने देशी शोषकों और उत्पीड़कों के खिलाफ सर्वहारा के वर्ग संघर्ष के हितों का राष्ट्र के स्वतंत्र और सुखी भविष्य के हितों से कोई अन्तर्विरोध नहीं है। उल्टे, समाजवादी क्रान्ति राष्ट्र की मुक्ति की सूचक होगी तथा उसके लिए और अधिक उत्कर्ष का पथ प्रशस्त करेगी। इस तथ्य मात्र से कि मजदूर वर्ग इस समय अपने वर्ग संगठनों को निर्मित और अपनी स्थितियों को सुदृढ़ कर रहा है, इस तथ्य मात्र से कि वह फासिज्म से जनवादी अधिकारों और आजादियों की रक्षा कर रहा है, इस तथ्य मात्र से कि वह पूंजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए लड़ रहा है, वह राष्ट्र के भविष्य के लिए लड़ रहा है।

क्रान्तिकारी सर्वहारा जनता की संस्कृति की रक्षा करने के लिए, उसे पतनोन्मुख इजारेदार पूंजीवाद की बेड़ियों से, बर्बर फासिज्म से जो उसका अतिक्रमण कर रहा है, मुक्त करने के लिए लड़ रहा है। केवल सर्वहारा क्रान्ति ही संस्कृति के विनाश को रोक सकती है, तथा इसे सचमुच राष्ट्रीय संस्कृति के रूप में—रूप में राष्ट्रीय और अन्तर्वस्तु में समाजवादी—उच्चतम विकास की अवस्था में पहुंचा सकती है, जो स्तालिन के नेतृत्व में, हमारी आंखों के सामने सोवियत संघ में साकार हो रही है।

सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद न सिर्फ राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता के लिए अलग-अलग देशों के मेहनतकशों के संघर्ष के विरुद्ध नहीं जाता बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा की सुसंबद्धता और जुझारू एकता के फलस्वरूप, वह इस संघर्ष की विजय के लिए आवश्यक समर्थन प्रदान करता है। पूंजीवादी देशों का मजदूर वर्ग महान सोवियत संघ के विजयी सर्वहारा के साथ घनिष्ठतम मैत्री रख कर ही विजय प्राप्त कर सकता है। औपनिवेशिक जनगण और उत्पीड़ित राष्ट्रीय अल्पसंख्यक साम्राज्यवादी देशों के सर्वहारा के साथ-साथ संघर्ष चला कर ही स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। साम्राज्यवादी देशों में सर्वहारा क्रान्ति की विजय का एकमात्र रास्ता साम्राज्यवादी देशों के मजदूर वर्ग तथा उपनिवेशों और पराधीन देशों के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की क्रान्तिकारी मैत्री के ही जरिये है क्योंकि जैसा कि हमें मार्क्स ने सिखाया है "कोई राष्ट्र, जो अन्य राष्ट्रों पर अत्याचार करता है, स्वतंत्र नहीं हो सकता।"

उत्पीड़ित, पराधीन राष्ट्र के कम्युनिस्ट स्वयं अपने राष्ट्र की जनता के बीच अंधराष्ट्रवाद से सफलतापूर्वक लोहा नहीं ले सकते, अगर वे साथ ही साथ अमल में, जन आन्दोलन में यह नहीं दिखाते कि वे वस्तुतः विदेशी जुए से अपने राष्ट्र की मुक्ति के लिए संघर्ष करते हैं। और पुनः, दूसरी ओर, एक उत्पीड़क राष्ट्र के कम्युनिस्ट स्वयं "अपने" पूंजीपति वर्ग की उत्पीड़क नीति के खिलाफ, तथा उसके जरिए गुलामी में रखे गये राष्ट्रों के आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए दृढ़ संघर्ष चलाये बगैर वह कार्य पूरा नहीं कर सकते जो

अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना में अपने राष्ट्र के मेहनतकश अवाम को दीक्षित करने के लिए आवश्यक है। अगर वे यह नहीं करते तो वे उत्पीड़ित राष्ट्र के मेहनतकशों के लिए भी राष्ट्रीय पूर्वग्रहों पर विजय पाना सुगमतर नहीं बनाते।

अगर हम इस भावना के साथ काम करते हैं, अगर अपने सारे जन कार्य में हम अकाट्य रूप में यह सिद्ध कर देते हैं कि हम राष्ट्रीय निषेधवाद और पूंजीवादी राष्ट्रवाद दोनों से ही मुक्त हैं, तब और केवल तब ही हम फासिस्टों की उद्धत राष्ट्रवादी लफ्फाजी के खिलाफ़ वस्तुतः सफल संघर्ष चला सकते हैं।

इसी कारण लेनिनवादी राष्ट्रीय नीति का सही और व्यावहारिक प्रयोग इतना अधिक महत्वपूर्ण है। यह अंधराष्ट्रवाद के खिलाफ—जन समुदाय पर फासिस्टों के विचारधारात्मक प्रभाव के इस मुख्य हथियार के खिलाफ—सफल संघर्ष के लिए निर्विवाद रूप में एक अनिवार्य आरंभिक शर्त है।

३. कम्युनिस्ट पार्टियों का सुदृढ़ीकरण तथा सर्वहारा की राजनीतिक एकता के लिए संघर्ष

साथियो, संयुक्त मोर्चा स्थापित करने के लिए संघर्ष में कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका असाधारण रूप में बढ़ जाती है। मूलतः कम्युनिस्ट पार्टी ही मजदूर वर्ग के संयुक्त मोर्चे की पहलकार, संगठनकर्ता और प्रेरक शक्ति होती है।

कम्युनिस्ट पार्टियां केवल तब ही फासिज्म के खिलाफ तथा पूंजी के हमले के खिलाफ संयुक्त संघर्ष के लिए मेहनतकशों के व्यापकतम हिस्सों की लामबंदी सुनिश्चित बना सकती हैं जब वे हर दृष्टि से स्वयं अपनी पांतों को शक्तिशाली बनायें, वे अपनी पहल विकसित करें, मार्क्सवादी-लेनिनवादी नीति पर चलें तथा ऐसी सही, लचीली कार्यनीतियों का प्रयोग करें जो ठोस स्थिति तथा वर्ग शक्तियों की पंक्तिबद्धता को ध्यान में रखें।

कम्युनिस्ट पार्टियों का सुदृढ़ीकरण

छठी और सातवीं कांग्रेसों के बीच के काल में पूंजीवादी देशों में हमारी पार्टियां निस्संदेह आकार-प्रकार में बढ़ी हैं तथा काफी हद तक तप कर पुख्ता हुई हैं। लेकिन इस उपलब्धि पर संतोष कर लेना सबसे खतरनाक गलती होगी। मजदूर वर्ग का संयुक्त मोर्चा जितना ही विस्तृत होता जायगा, उतनी ही ज्यादा नयी, जटिल समस्याएं हमारे सामने उभरती आयेंगी तथा हमारी

अपने देशी शोषकों और उत्पीड़कों के खिलाफ सर्वहारा के वर्ग संघर्ष के हितों का राष्ट्र के स्वतंत्र और सुखी भविष्य के हितों से कोई अन्तर्विरोध नही है। उल्टे, समाजवादी क्रान्ति राष्ट्र की मुक्ति की सूचक होगी तथा उसके लिए और अधिक उत्कर्ष का पथ प्रशस्त करेगी। इस तथ्य मात्र से कि मजदूर वर्ग इस समय अपने वर्ग संगठनों को निर्मित और अपनी स्थितियों को सुदृढ़ कर रहा है, इस तथ्य मात्र से कि वह फासिज्म से जनवादी अधिकारों और आजादियों की रक्षा कर रहा है, इस तथ्य मात्र से कि वह पूंजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए लड़ रहा है, वह राष्ट्र के भविष्य के लिए लड़ रहा है।

क्रान्तिकारी सर्वहारा जनता की संस्कृति की रक्षा करने के लिए, उसे पतनोन्मुख इजारेदार पूंजीवाद की बेड़ियों से, बर्बर फासिज्म से जो उसका अतिक्रमण कर रहा है, मुक्त करने के लिए लड़ रहा है। केवल सर्वहारा क्रान्ति ही संस्कृति के विनाश को रोक सकती है, तथा इसे सचमुच राष्ट्रीय संस्कृति के रूप में—रूप में राष्ट्रीय और अन्तर्वस्तु में समाजवादी—उच्चतम विकास की अवस्था में पहुंचा सकती है, जो स्तालिन के नेतृत्व में, हमारी आंखों के सामने सोवियत संघ में साकार हो रही है।

सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयतावाद न सिर्फ राष्ट्रीय, सामाजिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता के लिए अलग-अलग देशों के मेहनतकशों के संघर्ष के विरुद्ध नहीं जाता बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा की सुसंबद्धता और जुझारू एकता के फलस्वरूप, वह इस संघर्ष की विजय के लिए आवश्यक समर्थन प्रदान करता है। पूंजीवादी देशों का मजदूर वर्ग महान सोवियत संघ के विजयी सर्वहारा के साथ घनिष्ठतम मैत्री रख कर ही विजय प्राप्त कर सकता है। औपनिवेशिक जनगण और उत्पीड़ित राष्ट्रीय अल्पसंख्यक साम्राज्यवादी देशों के सर्वहारा के साथ-साथ संघर्ष चला कर ही स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं। साम्राज्यवादी देशों में सर्वहारा क्रान्ति की विजय का एकमात्र रास्ता साम्राज्यवादी देशों के मजदूर वर्ग तथा उपनिवेशों और पराधीन देशों के राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन की क्रान्तिकारी मैत्री के ही जरिये है क्योंकि जैसा कि हमें मार्क्स ने सिखाया है "कोई राष्ट्र, जो अन्य राष्ट्रों पर अत्याचार करता है, स्वतंत्र नही हो सकता।"

उत्पीड़ित, पराधीन राष्ट्र के कम्युनिस्ट स्वयं अपने राष्ट्र की जनता के बीच अंधराष्ट्रवाद से सफलतापूर्वक लोहा नहीं ले सकते, अगर वे साथ ही साथ अमल में, जन आन्दोलन में यह नही दिखाते कि वे वस्तुतः विदेशी जुए से अपने राष्ट्र की मुक्ति के लिए संघर्ष करते हैं। और पुनः, दूसरी ओर, एक उत्पीड़क राष्ट्र के कम्युनिस्ट स्वयं "अपने" पूंजीपति वर्ग की उत्पीड़क नीति के खिलाफ, तथा उसके जरिए गुलामी में रखे गये राष्ट्रों के आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए दृढ़ संघर्ष चलाये बगैर वह कार्य पूरा नहीं कर सकते जो

अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की भावना में अपने राष्ट्र के मेहनतकश अवाम को दीक्षित करने के लिए आवश्यक है। अगर वे यह नहीं करते तो वे उत्पीड़ित राष्ट्र के मेहनतकशों के लिए भी राष्ट्रीय पूर्वग्रहों पर विजय पाना सुगमतर नहीं बनाते।

अगर हम इस भावना के साथ काम करते हैं, अगर अपने सारे जन कार्य में हम अकाट्य रूप में यह सिद्ध कर देते हैं कि हम राष्ट्रीय निषेधवाद और पूंजीवादी राष्ट्रवाद दोनों से ही मुक्त हैं, तब और केवल तब ही हम फासिस्टों की उद्धत राष्ट्रवादी लफ्फाजी के खिलाफ वस्तुतः सफल संघर्ष चला सकते हैं।

इसी कारण लेनिनवादी राष्ट्रीय नीति का सही और व्यावहारिक प्रयोग इतना अधिक महत्वपूर्ण है। यह अंधराष्ट्रवाद के खिलाफ—जन समुदाय पर फासिस्टों के विचारधारात्मक प्रभाव के इस मुख्य हथियार के खिलाफ—सफल संघर्ष के लिए निर्विवाद रूप में एक अनिवार्य आरंभिक शर्त है।

३. कम्युनिस्ट पार्टियों का सुदृढ़ीकरण तथा सर्वहारा की राजनीतिक एकता के लिए संघर्ष

साथियो, संयुक्त मोर्चा स्थापित करने के लिए संघर्ष में कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका असाधारण रूप में बढ़ जाती है। मूलतः कम्युनिस्ट पार्टी ही मजदूर वर्ग के संयुक्त मोर्चे की पहलकार, संगठनकर्ता और प्रेरक शक्ति होती है।

कम्युनिस्ट पार्टियां केवल तब ही फासिज्म के खिलाफ तथा पूंजी के हमले के खिलाफ संयुक्त संघर्ष के लिए मेहनतकशों के व्यापकतम हिस्सों की लामबंदी सुनिश्चित बना सकती हैं जब वे हर दृष्टि से स्वयं अपनी पांतों को शक्तिशाली बनायें, वे अपनी पहल विकसित करें, मार्क्सवादी-लेनिनवादी नीति पर चलें तथा ऐसी सही, लचीली कार्यनीतियों का प्रयोग करें जो ठोस स्थिति तथा वर्ग शक्तियों की पंक्तिबद्धता को ध्यान में रखें।

कम्युनिस्ट पार्टियों का सुदृढ़ीकरण

छठी और सातवीं कांग्रेसों के बीच के काल में पूंजीवादी देशों में हमारी पार्टियां निस्संदेह आकार-प्रकार में बढ़ी हैं तथा काफी हद तक तप कर पुख्ता हुई हैं। लेकिन इस उपलब्धि पर संतोष कर लेना सबसे खतरनाक गलती होगी। मजदूर वर्ग का संयुक्त मोर्चा जितना ही विस्तृत होता जायगा, उतनी ही ज्यादा नयी, जटिल समस्याएं हमारे सामने उभरती आयेंगी तथा हमारी

अपनी पार्टियों के राजनीतिक और संगठनात्मक सुदृढ़ीकरण के लिए कार्य करना उतना ही ज्यादा आवश्यक होता जायगा। सर्वहारा का संयुक्त मोर्चा मजदूरों की ऐसी सेना सामने ला देता है जो तभी अपना लक्ष्य सिद्ध कर सकेगी जबकि इसका नेतृत्व ऐसी अग्रणी शक्ति के हाथ में हो जो उसके लक्ष्यों और पथों को निर्दिष्ट करे। यह अग्रणी शक्ति केवल एक शक्तिशाली सर्वहारा क्रान्तिकारी पार्टी ही हो सकती है।

अगर संयुक्त मोर्चा स्थापित करने के लिए हम कम्युनिस्ट हरचंद कोशिश करते हैं तो हम यह कम्युनिस्ट पार्टियों के लिए नये सदस्य भर्ती करने के संकीर्ण उद्देश्य से नहीं करते। फिर भी हमें हर तरह से कम्युनिस्ट पार्टियों को सुदृढ़ बनाना चाहिए और उनकी सदस्यता इसी कारण बढ़ानी चाहिए कि हम गंभीरता से संयुक्त मोर्चे को सुदृढ़ करना चाहते हैं। कम्युनिस्ट पार्टियों का सुदृढ़ किया जाना कोई संकुचित पार्टी सरोकार नहीं, बल्कि संपूर्ण मजदूर वर्ग का सरोकार है।

कम्युनिस्ट पार्टियों की एकता, क्रान्तिकारी एकजुटता और जुझारू तत्परता वह सबसे मूल्यवान पूंजी है जिस पर न सिर्फ हमारा बल्कि संपूर्ण मजदूर वर्ग का हक है। हमने फासिज्म के खिलाफ संघर्ष की दिशा में सामाजिक-जनवादी पार्टियों और संगठनों के साथ मिल कर किये जाने वाले अभियान के साथ पूंजीपति वर्ग से समझौते की विचारधारा और व्यवहार के बतौर सामाजिक-जनवाद के खिलाफ तथा परिणामतः स्वयं अपनी कतारों में इस विचारधारा के किसी भी तरह के प्रवेश के भी खिलाफ निर्मम संघर्ष का समन्वय किया है और करते रहेंगे।

संयुक्त मोर्चे की नीति को निर्भीकता और दृढ़ता के साथ अमल में लाते समय स्वयं अपनी कतारों में ऐसे विघ्नों से हमारा सामना पड़ता है, जिन्हें हमे हर हालत में यथासम्भव कम से कम वक्त में दूर कर देना चाहिए।

कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की छठी कांग्रेस के बाद पूंजीवादी देशों की सभी कम्युनिस्ट पार्टियों में पूंजीवादी घिराव की परिस्थितियों के अनुरूप अवसरवादी ढंग से ढल जाने की हर प्रवृत्ति के खिलाफ तथा सुधारवादी और वैधतावादी भ्रमों के हर रोग के खिलाफ सफल संघर्ष चलाया गया था। हमारी पार्टियों ने तरह-तरह के दक्षिणपंथी अवसरवादियों को अपनी पांतों से निकाल दिया और इस प्रकार अपनी बोल्शेविक एकता और जुझारू क्षमता को मजबूत किया। संकीर्णतावाद के खिलाफ संघर्ष कम सफल और अक्सर कतई नदारत रहा है। संकीर्णतावाद अब आदिम, खुले रूपों में स्वयं को अभिव्यक्त नहीं करता जैसा कि कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के अस्तित्व के आरंभ के वर्षों में होता था, बल्कि बोल्शेविक प्रस्थापनाओं की बाजाब्ता मान्यता की आड़ में

बोल्शेविक जन-नीति के विकास में बाधक बनता है। हमारे जमाने में यह अब अक्सर "बचकाना मर्ज" नहीं होता है जैसाकि लेनिन ने लिखा था, बल्कि यह एक गहरी जड़ जमाये दुर्गुण है जिससे अवश्य छुटकारा पा लिया जाना चाहिए, और नहीं तो सर्वहारा का संयुक्त मोर्चा स्थापित करने तथा जन समुदाय को सुधारवाद की स्थितियों से क्रान्ति के पक्ष में ले जाने की समस्या को हल कर सकना असंभव हो जायगा।

मौजूदा परिस्थितियों में संकीर्णतावाद, आत्मतुष्ट संकीर्णतावाद, जैसा कि हम इसे प्रस्ताव के मसविदे में कहते हैं, संयुक्त मोर्चा हासिल करने के हमारे संघर्ष में अन्य किसी भी चीज से ज्यादा बाधक होता है: संकीर्णतावाद, अपनी मतवादी तंगनजरी, सर्वसाधारण के वास्तविक जीवन से अपने विलगाव से संतुष्ट; घिसी-पिटी योजनाओं के आधार पर मजदूर वर्ग आन्दोलन की जटिलतम समस्याओं को हल करने के अपने सरलीकृत तरीकों से सतुष्ट; संकीर्णतावाद, जो सर्वज्ञ होने का दम भरता है तथा जो जन समुदाय से सीखना, मजदूर आन्दोलन के सबकों से सीखना व्यर्थ समझता है; संक्षेप में, संकीर्णतावाद, जिसके लिए, जैसाकि कहा जाता है, पहाड़ भी महज सीढ़ी के पत्थर हैं! आत्मसंतुष्ट संकीर्णतावाद यह नहीं समझेगा और न समझ सकता है कि कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा मजदूर वर्ग का नेतृत्व अपने आप नहीं प्राप्त हो जाता। मजदूर वर्ग के संघर्षों में कम्युनिस्ट पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका को लड़ कर हासिल करना होगा। इसके लिए यह जरूरी है कि कम्युनिस्टों की नेतृत्वकारी भूमिका के बारे में शेखियां न बघारी जायें, बल्कि रोजमर्रा के जन कार्य और सही नीति के जरिये मेहनतकश जनता के विश्वास का पात्र बना जाय और उसका विश्वास हासिल किया जाय। यह तभी सम्भव होगा जब हम कम्युनिस्ट अपने राजनीतिक कार्य में जनता की वर्ग चेतना के वास्तविक स्तर को, उस सीमा को जहां तक उनमें क्रान्तिकारिता का संचार हो चुका है, गंभीरता से ध्यान में रखें, जब हम ठोस स्थिति का अपनी इच्छाओं के आधार पर नही बल्कि वास्तविक परिस्थितियों के आधार पर संजीदगी से जायजा लें। धीरज के साथ, कदम-ब-कदम, हमें व्यापक जन समुदाय के लिए कम्युनिज्म की स्थितियों की ओर आना आसान बनाना होगा। हमें लेनिन के शब्दों को कभी नहीं भूलना चाहिए जिन्होंने सम्भवतम जोरदार तरीके से चेतावनी दी है कि:

"...यही पूरा मुद्दा है—जो हमारे लिए पुराना पड़ चुका है उसे हमें वर्ग के लिए पुराना पड़ चुका, जन समुदाय के लिए पुराना पड़ चुका, नही मान लेना चाहिए।" ("वामपंथी" कम्युनिज्म: एक बचकाना मर्ज)

क्या यह सच नही है, साथियो, कि हमारी कतारों में अभी भी बचे हुए

ऐसे मतवादी तत्वों की संख्या कम नहीं है जो हर समय और हर कहीं संयुक्त मोर्चे की नीति में खतरा ही देखते हैं ? ऐसे साथियों के लिए पूरा संयुक्त मोर्चा एक ऐसी विपत्ति है जिसमें कहीं कोई राहत नही। "सिद्धान्त के लिए" यह संकीर्णतावादी "हुज्जत" जनता के संघर्ष का सीधे नेतृत्व करने की कठिनाइयों के मुकाबले राजनीतिक असहायपन के अलावा और कुछ नहीं है।

संकीर्णतावाद खास तौर पर जनता में क्रान्तिकारिता के संचार को बढ़ा-चढ़ा कर आंकने के रूप में, वह सुधारवाद की स्थितियों का जिस रफ्तार से परित्याग कर रही है उसे बढ़ा-चढ़ा कर आंकने के रूप में, आन्दोलन के कठिन चरणों और पेचीदा दायित्वों को छलांग लगा कर लांघ जाने की कोशिशों के रूप में अभिव्यक्त होता है। अमल में, जनता का नेतृत्व करने के तरीकों के स्थान पर, प्रायः ही संकुचित पार्टी दल के नेतृत्व के तरीकों को प्रस्थापित किया गया है। जनता तथा उसके संगठनों और नेताओं के बीच परंपरागत कड़ियों की शक्ति को घटा कर आंका गया, और जब जनता ने इन संपर्कों से फौरन नाता नहीं तोड़ा तो उसके प्रति भी उतना ही कठोर रुख अपनाया गया जितना उसके प्रतिक्रियावादी नेताओं के प्रति। सभी देशों के लिए कार्यनीतियां और नारे घिसे-पिटे होते गये, तथा अलग-अलग हर देश की विशिष्ट परिस्थितियों के विशेष पहलुओं पर ध्यान ही नहीं दिया गया। जनता का विश्वास प्राप्त करने के लिए स्वयं उनके ही बीच जम कर संघर्ष करने की आवश्यकता को नजरअंदाज किया गया है। मजदूरों की आंशिक मांगों के लिए संघर्ष करने तथा सुधारवादी ट्रेड यूनियनों और फासिस्ट जन संगठनों में काम करने की उपेक्षा की गयी है। संयुक्त मोर्चे की नीति का स्थान अक्सर खोखली अपीलें और अमूर्त प्रचार लेता रहा है।

संकीर्णतावादी विचार, कार्यकर्ताओं के सही चुनाव में, जनता से जुड़े हुए, जनता के विश्वास-प्राप्त कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और विकास में, कम बाधक नही हुए हैं—ऐसे कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और विकास में जिनकी क्रान्तिकारी दृढ़ता वर्ग संग्रामों में जांची और परखी जा चुकी हो, जो जन कार्य के व्यावहारिक अनुभव तथा एक बोल्शेविक की दृढ़ सिद्धान्तनिष्ठता का समन्वय कर सकते हों।

इस प्रकार संकीर्णतावाद ने काफी हद तक कम्युनिस्ट पार्टियों की बढ़ोतरी को नुकसान पहुंचाया है, एक सच्ची जन नीति के अमल में लाये जाने में कठिनाई पैदा की है, क्रान्तिकारी आन्दोलन की स्थितियों को सुदृढ़ बनाने में वर्ग शत्रु की दिक्कतों से फायदा उठाये जाने में बाधा पहुंचायी है, तथा सर्वहारा के व्यापक समुदाय को कम्युनिस्ट पार्टियों के पक्ष में लाने में रुकावटें डाली हैं।

आत्मतुष्ट संकीर्णतावाद के अन्तिम अवशेषों पर विजय पाने और उन्हें

समूल नष्ट कर देने के लिए अधिकतम दृढ़ता के साथ लड़ते हुए हमें दक्षिणपंथी अवसरवाद के मामले में चौकसी को हर तरह बढ़ाना चाहिए, उसकी हर ठोस अभिव्यक्ति के खिलाफ संघर्ष को हर तरह तीव्र करना चाहिए तथा इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि जैसे-जैसे व्यापक संयुक्त मोर्चा अधिकाधिक विकसित होगा उसी अनुपात में दक्षिणपंथी अवसरवाद का खतरा बढ़ता जायगा। संयुक्त मोर्चे की पांतों में कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका को कम करने तथा सामाजिक-जनवादी विचारधारा के साथ फिर से मेल बैठाने की प्रवृत्तियां अभी ही मौजूद हैं। न ही हमें इस तथ्य को नजरअंदाज करना चाहिए कि संयुक्त मोर्चे की कार्यनीतियां सामाजिक-जनवादी कार्यकर्ताओं को स्पष्ट रूप से यह विश्वास दिलाने की एक पद्धति हैं कि कम्युनिस्ट नीति सही है और सुधारवादी नीति गलत है, तथा यह सामाजिक-जनवादी विचारधारा और व्यवहार के साथ फिर से मेल नहीं है। संयुक्त मोर्चे की स्थापना के लिए सफल संघर्ष का यह अनिवार्य तकाजा है कि फासिज्म को समाप्त करने तथा संयुक्त मोर्चे को कार्यान्वित करने, दोनों ही कामों में, पार्टी की भूमिका को घटाने की प्रवृत्तियों के खिलाफ, वैधतावादी भ्रमों के खिलाफ, स्वयंस्फूर्तता और स्वचेष्टता पर निर्भरता के खिलाफ, तथा निर्णायक कार्रवाई के क्षण में लेशमात्र ढुलमुलपन के खिलाफ अपनी पांतों में लगातार संघर्ष किया जाय।

स्तालिन हमें सिखाते हैं : "यह जरूरी है कि पार्टी अपने कार्य में अधिकतम सिद्धान्तनिष्ठता का (जिसका संकीर्णतावाद के साथ घालमेल नहीं किया जाना चाहिए!) जनता के साथ अधिकतम संपर्कों और संबंधों के साथ (जिनका 'पुछल्लावाद' के साथ घालमेल नहीं किया जाना चाहिए!) समन्वय कर सके, जिसके बगैर पार्टी के लिए न सिर्फ जनता को शिक्षा दे सकना बल्कि उससे सीख सकना भी, न सिर्फ जनता का नेतृत्व कर सकना और उसे पार्टी के स्तर पर ला सकना बल्कि जनता की आवाज को सुन सकना और उसकी दारुणतम आवश्यकताओं की पेशगोई कर सकना भी असम्भव है।" (स्तालिन, जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी का संदर्श और बोल्शेविकीकरण, अंग्रेजी, प्रावदा, अंक २७, ३ फरवरी १९२५)

मजदूर वर्ग की राजनीतिक एकता

साथियो, फासिज्म के खिलाफ और पूंजी के हमले के खिलाफ कम्युनिस्ट और सामाजिक-जनवादी मजदूरों के संयुक्त संघर्ष के संयुक्त मोर्चे के विकास के साथ राजनीतिक एकता का, मजदूर वर्ग की एक ही राजनीतिक जन-पार्टी का सवाल उभर कर सामने आता है। सामाजिक-जनवादी मजदूरों को अनुभव से इस बात में अधिकाधिक विश्वास होता है कि वर्ग शत्रु के

खिलाफ संघर्ष राजनीतिक नेतृत्व की एकता का तकाजा करता है क्योंकि नेतृत्व में द्वैत मजदूर वर्ग के संयुक्त संघर्ष के आगे विकास तथा सुदृढ़ीकरण में बाधक होता है।

सर्वहारा के वर्ग संघर्ष तथा सर्वहारा क्रान्ति की सफलता के हितों के कारण यह अनिवार्य हो जाता है कि हर देश में सर्वहारा की एक ही पार्टी हो। बेशक इसे हासिल कर सकना आसान या सरल नहीं है। इसके लिए जम कर कार्य और संघर्ष करना जरूरी है तथा यह अवश्य ही कमोबेश लंबी प्रक्रिया होगी। कम्युनिस्ट पार्टियों को सामाजिक-जनवादी पार्टियों या अलग-अलग संगठनों की कम्युनिस्ट पार्टियों के साथ एकता के लिए मजदूरों की बढ़ती हुई आकांक्षा पर भरोसा करते हुए इस एकीकरण के लिए दृढ़ता और विश्वास के साथ पहलकदमी करनी चाहिए। ऐसे समय में, जब अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन अपनी कतारो की फूट को दूर करने के काल में प्रवेश कर रहा है, एक ही क्रान्तिकारी पार्टी में मजदूर वर्ग की शक्तियों को एकजुट करने का ध्येय ही हमारा ध्येय है, कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल का ध्येय है।

मगर जहां कम्युनिस्ट और सामाजिक-जनवादी पार्टियों का संयुक्त मोर्चा स्थापित करने के लिए यही काफी है कि फासिज्म के खिलाफ, पूंजीवाद के हमले और युद्ध के खिलाफ संघर्ष करने के लिए समझौता हो, वहां राजनीतिक एकता सिद्धान्तों से जुड़ी कुछ सुनिश्चित शर्तों के आधार पर ही सम्भव है।

यह एकता निम्नलिखित शर्तों पर ही सम्भव है :

एक तो पूंजीपति वर्ग से पूर्ण स्वाधीनता हो तथा पूंजीपति वर्ग के साथ सामाजिक-जनवाद का गुट भंग किया जाय;

दूसरे, आरंभ से ही कार्रवाई की एकता हो;

तीसरे, पूंजीपति वर्ग के शासन को क्रान्तिकारी ढंग से उखाड़ फेंकने और सोवियतों के रूप में सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना की अनिवार्यता को स्वीकृत किया जाय;

चौथे, साम्राज्यवादी युद्ध मे स्वयं अपने पूंजीपति वर्ग का समर्थन करने से इनकार किया जाय;

पांचवें, जनवादी केन्द्रीयता के आधार पर पार्टी का निर्माण किया जाय जिससे उद्देश्य और कार्रवाई की एकता सुनिश्चित होती है तथा रूसी बोल्शेविकों के अनुभव के दौरान जिसकी परीक्षा हो चुकी है।

हमें सामाजिक-जनवादी मजदूरों को धीरज के साथ और बिरादराना तरीके से यह समझाना चाहिए कि क्यों इन शर्तों के बगैर मजदूर वर्ग की राजनीतिक एकता असम्भव है। हमें उनके साथ मिल कर इन शर्तों के अर्थ और महत्व पर विचार-विमर्श करना चाहिए।

सर्वहारा की राजनीतिक एकता स्थापित करने के लिए यह क्यों जरूरी है कि पूंजीपति वर्ग से पूर्ण स्वतंत्रता हो तथा पूंजीपति वर्ग के साथ सामाजिक-जनवाद का गुट भंग हो ?

कारण यह कि मजदूर आन्दोलन के संपूर्ण अनुभव, खास तौर पर जर्मनी में साझा नीति के पंद्रह वर्षों के अनुभव ने यह दिखा दिया है कि वर्ग सहयोग की नीति, पूंजीपति वर्ग पर निर्भरता की नीति, मजदूर वर्ग की पराजय और फासिज्म की विजय की ओर ले जाती है। और पूंजीपति वर्ग के खिलाफ निर्मम वर्ग संघर्ष का मार्ग, बोल्शेविकों का मार्ग, ही विजय का एकमात्र सच्चा मार्ग है।

क्यों राजनीतिक एकता की आरंभिक शर्त के रूप में पहले कार्रवाई की एकता कायम की जानी चाहिए ?

कारण यह कि पूंजी और फासिज्म के हमले को शिकस्त देने के लिए कार्रवाई की एकता इसके पहले भी सम्भव और आवश्यक है कि अधिकांश मजदूर पूंजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए समान राजनीतिक मंच पर संयुक्त हों,—जब कि सर्वहारा के संघर्ष की मुख्य दिशाओं और लक्ष्यों के बारे में एकता निर्मित करने के लिए, जिसके बगैर पार्टियों की एकता असम्भव है, कमोबेश लंबी कालावधि जरूरी है। विचारों की एकता आज भी वर्ग शत्रु के खिलाफ संयुक्त संघर्ष में सबसे अच्छे तरीके से निर्मित होती है। संयुक्त मोर्चा बनाने की जगह एकबारगी संयुक्त हो जाने का प्रस्ताव रखने का अर्थ है गाड़ी को घोड़े के आगे रख देना और यह सोचने लगना कि अब गाड़ी आगे बढ़ चलेगी। ठीक इस कारण कि हमारे लिए राजनीतिक एकता का सवाल कोई चाल नहीं है, जैसा कि यह बहुतेरे सामाजिक-जनवादियों के लिए है, हम राजनीतिक एकता के लिए संघर्ष में एक सबसे महत्वपूर्ण चरण के रूप में कार्रवाई की एकता कायम करने पर जोर देते हैं।

पूंजीपति वर्ग के शासन को क्रान्तिकारी ढंग से उखाड़ फेंकने तथा सोवियत सत्ता के रूप में सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना करने की अनिवार्यता को स्वीकृत करना क्यों जरूरी है ?

कारण यह कि एक ओर महान अक्तूबर क्रान्ति की विजय के अनुभव तथा दूसरी ओर पूरे युद्धोत्तर काल में जर्मनी, आस्ट्रिया और स्पेन में सीखे गये कड़वे सबकों से एक बार फिर इस बात की पुष्टि हो गयी है कि सर्वहारा की विजय पूंजीपति वर्ग के क्रान्तिकारी ढंग से उखाड़ फेंके जाने के जरिये ही सम्भव है, तथा पूंजीपति वर्ग सर्वहारा को शांतिपूर्ण तरीकों से समाजवाद की स्थापना करने देने की जगह मजदूर आन्दोलन को रक्त के सागर में ही डुबो देना चाहेगा। अक्तूबर क्रान्ति के अनुभव ने यह बात स्पष्ट रूप में साबित कर दी

है कि सर्वहारा अधिनायकत्व का सवाल ही सर्वहारा क्रान्ति की मूल अन्तर्वस्तु है जिस पर उखाड़ फेंके गये शोषकों के प्रतिरोध को कुचल देने, साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष के लिए क्रान्ति को हथियारबन्द करने तथा क्रान्ति को समाजवाद की पूर्ण विजय की मंजिल तक पहुंचाने की जिम्मेदारी होती है। एक नगण्य अल्पमत के ऊपर, शोषकों के ऊपर, विशाल बहुमत के अधिनायकत्व के रूप में सर्वहारा का अधिनायकत्व कायम करने के लिए—और इसी तरह इसकी स्थापना की जा सकती है—ऐसी सोवियतें जरूरी हैं जिनके भीतर मजदूर वर्ग के सारे तबके, किसानों के बुनियादी समुदाय तथा शेष मेहनतकश सम्मिलित हों, जिन्हें क्रान्तिकारी संघर्ष के मोर्चे में सम्मिलित किये बगैर सर्वहारा की विजय को सुदृढ़ नहीं किया जा सकता।

साम्राज्यवादी युद्ध में पूंजीपति वर्ग को समर्थन देने से इनकार करना राजनीतिक एकता की एक शर्त क्यों है?

कारण यह कि पूंजीपति वर्ग अपने दस्युतापूर्ण उद्देश्यों के लिए, जनगण के विशाल बहुमत के हितों के विरुद्ध साम्राज्यवादी युद्ध छेड़ता है—भले ही ये युद्ध चाहे किसी भी बाने में किये जायें। कारण यह कि सभी साम्राज्यवादी युद्ध की सरगर्म तैयारियों के साथ-साथ स्वयं अपने देश के मेहनतकशों का शोषण और उत्पीड़न अत्यन्त तेज कर देते हैं। ऐसे युद्ध में पूंजीपति वर्ग के समर्थन का अर्थ होता है देश तथा अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग के साथ गद्दारी।

अन्त में, जनवादी केन्द्रीयता के आधार पर पार्टी का निर्माण क्यों एकता की एक शर्त है?

कारण यह है कि जनवादी केन्द्रीयता के आधार पर निर्मित पार्टी ही उद्देश्य और कार्रवाई की एकता सुनिश्चित कर सकती है, सर्वहारा को उस पूंजीपति वर्ग पर विजय की मंजिल तक पहुंचा सकती है जिसकी सेवा में केन्द्रीकृत राज्य यंत्र जैसा शक्तिशाली अस्त्र मौजूद है। जनवादी केन्द्रीयता के सिद्धान्त का प्रयोग रूसी बोल्शेविक पार्टी, लेनिन और स्तालिन की पार्टी, के अनुभव की शानदार ऐतिहासिक कसौटी पर खरा उतर चुका है।

जी हां, साथियो, हम मजदूर वर्ग की एक ही जन राजनीतिक पार्टी के हामी हैं। मगर इस पार्टी को कामरेड स्तालिन के शब्दों में "...एक जंगजू पार्टी, एक क्रान्तिकारी पार्टी" होना चाहिए, "जिसमें इतनी निर्भीकता हो कि वह सर्वहारा का सत्ता के लिए संघर्ष को दिशा में नेतृत्व कर सके, जिसके पास इतना काफी अनुभव हो कि वह क्रान्तिकारी स्थिति में उत्पन्न होने वाली पेचीदा समस्याओं में अपनी दिशा निर्धारित कर सके, तथा इतनी काफी लचीली हो कि अपने गंतव्य के मार्ग में जलमग्न चट्टानों से बच कर आगे बढ़ सके।" (लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त, अंग्रेजी, पृ. १०७)

इसी से स्पष्ट हो जाता है कि ऊपर लिखी शर्तों के आधार पर राजनीतिक एकता के लिए प्रयास करना क्यों जरूरी है।

हम मजदूर वर्ग की राजनीतिक एकता के हामी हैं। इसलिए हम उन सभी सामाजिक-जनवादियों के साथ निकटतम सहयोग करने को तैयार हैं जो संयुक्त मोर्चे के हामी हैं और ऊपर बताये गये सिद्धान्तों पर एकता का ईमानदारी से समर्थन करते हैं।

लेकिन एकता के हामी होने के नाते ही हम उन सारे "वामपंथी" लफ्फाजों के खिलाफ दृढ़ता से संघर्ष चलायेंगे जो सामाजिक-जनवादी मजदूरों के मोह-भंग का इस्तेमाल कम्युनिस्ट आन्दोलन के विरुद्ध निर्दिष्ट नयी समाजवादी पार्टियों या इन्टरनेशनलों का निर्माण करने के लिए करते हैं, और इस प्रकार मजदूर वर्ग की फूट को और गहरा करते रहते हैं।

कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त मोर्चे के लिए सामाजिक-जनवादी मजदूरों में बढ़ रही कोशिशों का हम स्वागत करते हैं। इस तथ्य में हम उनकी क्रान्तिकारी चेतना की अभिवृद्धि होते तथा मजदूर वर्ग की फूट के भरने की शुरूआत होते देखते हैं। इस राय के होने के नाते कि कारंवाई की एकता अत्यावश्यक है और सर्वहारा की राजनीतिक एकता की स्थापना का सबसे सच्चा मार्ग है, हम ऐलान करते हैं कि **कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल और इसके हिस्से पूंजी के हमले के खिलाफ, फासिज्म के खिलाफ तथा साम्राज्यवादी युद्ध के खतरे के खिलाफ संघर्ष में मजदूर वर्ग की एकता की स्थापना के लिए दूसरे इन्टरनेशनल और उसके हिस्सों के साथ समझौता वार्ताएं शुरू करने के लिए तैयार हैं।**

उपसंहार

साथियो, मैं अपनी रिपोर्ट समाप्त कर रहा हूं। जैसा कि आप देख रहे हैं, छठी कांग्रेस के बाद की स्थिति में आयी तब्दीली और अपने संघर्ष के सबकों को ध्यान में रखते हुए, तथा हमारी पार्टियों में अभी ही जिस अंश तक सुदृढ़ीकरण लाया जा सका है उस पर भरोसा करते हुए, आज हम अनेक सवाल एक नये ढंग से उठा रहे हैं, प्रथमतः संयुक्त मोर्चे का और सामाजिक-जनवाद, सुधारवादी ट्रेड यूनियनों और अन्य जन संगठनों के प्रति दृष्टिकोण का सवाल उठा रहे हैं।

ऐसे लालबुझक्कड़ मौजूद है जिन्हें इस सब में हमारी बुनियादी स्थितियों से भटकाव, बोल्शेविज्म की सीधी लाइन से एक किस्म का दायीं ओर झुकाव दिखायी देगा। हमारे देश बुलगारिया में कहावत है कि भूखी मुर्गी मोटे अनाज का ही सपना देखती है। खैर उन राजनीतिक मुर्गियों को ऐसा ही सोचने दीजिए।

इसमें हमें कोई दिलचस्पी नहीं है। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि पूरी दुनिया में स्वयं हमारी पार्टियां और व्यापक जन समुदाय उसे ठीक-ठीक समझें जिसके लिए हम प्रयत्न कर रहे है।

हम क्रान्तिकारी मार्क्सवादी, लेनिनवादी, मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के वफादार शिष्य नही होंगे, अगर हम बदलती हुई स्थिति तथा मजदूर आन्दोलन में आ रही तब्दीलियों के अनुरूप अपनी नीतियों और कार्य-नीतियों की उचित पुनर्रचना नहीं करते।

हम वास्तविक क्रान्तिकारी नही होंगे, अगर हम अपने अनुभव से तथा अवाम के अनुभव से शिक्षा नही लेते।

हम यह चाहते है कि पूंजीवादी देशों में हमारी पार्टियां मजदूर वर्ग की वास्तविक राजनीतिक पार्टियों के रूप में आगे आयें और काम करें, अपने देशों के जीवन में दरहकीकत एक राजनीतिक तत्व बनें, हर मौके पर एक सक्रिय बोल्शेविक जन नीति का अनुसरण करें और न कि प्रचार और आलोचना, तथा सर्वहारा अधिनायकत्व के लिए संघर्ष की कोरी अपीलों तक अपने को सीमित रखें।

हम सभी गढ़ी-गढ़ायी योजनाओं के दुश्मन हैं। हम हर क्षण की, हर स्थान की ठोस स्थिति को ध्यान में रखना चाहते हैं, और न कि हर कही एक अचल रूढ़िबद्ध रूप के अनुसार कार्य करना चाहते हैं; और, यह नहीं भूलना चाहिए कि विभिन्न परिस्थितियों में कम्युनिस्टों की स्थिति एक-जैसी नहीं रह सकती।

हम वर्ग संघर्ष के विकास के और स्वयं जन-साधारण की वर्ग चेतना में वृद्धि के सभी चरणों को संजीदगी से ध्यान में रखना चाहते हैं जिससे हम हर चरण में उस चरण से संबद्ध क्रान्तिकारी आन्दोलन की ठोस समस्याओं का पता लगा सकें और उन्हें हल कर सकें।

हम वर्ग शत्रु के खिलाफ संघर्ष करने के लिए व्यापकतम जन समुदाय के साथ समान भाषा खोज निकालना चाहते हैं, सर्वहारा समुदाय और अन्य समस्त मेहनतकशों से क्रान्तिकारी हिरावल के अलगाव पर अन्तिम रूप से विजय पाने के रास्ते खोजना चाहते हैं, साथ ही हम पूंजीपति वर्ग के खिलाफ, फासिज्म के खिलाफ, संघर्ष में अपने प्राकृतिक मित्रों से स्वयं मजदूर वर्ग के ही घातक अलगाव पर विजय के तरीके खोजना चाहते हैं।

हम जन समुदाय के मूलभूत हितों और आवश्यकताओं को आरम्भ-बिंदु और स्वयं उनके अनुभव को आधार मानते हुए, उन्हें अधिकाधिक क्रान्तिकारी वर्ग संघर्ष में लाना और उन्हें सर्वहारा क्रान्ति की ओर ले जाना चाहते हैं।

अपने गौरवशाली रूसी बोल्शेविकों के दृष्टांत, कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की

अग्रणी पार्टी—सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी—के दृष्टांत पर चलते हुए हम जर्मन, स्पेनी, ऑस्ट्रियाई, और अन्य कम्युनिस्टों की क्रान्तिकारी वीरता का सच्ची क्रान्तिकारी यथार्थवादिता के साथ समन्वय करना चाहते हैं, तथा गंभीर राजनीतिक सवालों पर पंडिताऊ कलईगीरी के आखिरी अवशेषों का खात्मा कर देना चाहते हैं।

हम अपनी पार्टियों के सामने पेश जटिलतम राजनीतिक समस्याओं के समाधान के लिए हर दृष्टि से उन्हें लैस कर देना चाहते हैं। इस उद्देश्य के लिए हम उनके सैद्धान्तिक स्तर को निरन्तर उच्चतर उठाना चाहते हैं, उन्हें जीवन्त मार्क्सवाद-लेनिनवाद की भावना में—न कि निष्प्राण मत-वादिता की भावना में—दीक्षित करना चाहते है।

हम अपनी कतारों से समूचे आत्मतुष्ट संकीर्णतावाद का मूलोच्छेदन कर देना चाहते हैं, जो, सर्वोपरि, अवाम तक ले जाने वाली हमारी राह को अवरुद्ध करता है तथा एक सच्ची बोल्शेविक नीति को अमल मे लाने में रुकावटें डालता है।

हम दक्षिणपंथी अवसरवाद की ठोस अभिव्यक्तियों के खिलाफ संघर्ष को यह ध्यान में रखते हुए हर प्रकार तेज करना चाहते हैं कि इस पक्ष से खतरा ठीक हमारी जन नीति और संघर्ष को अमल में लाने के दौरान सामने आयेगा।

हम यह चाहते हैं कि सर्वहारा के क्रान्तिकारी हिरावल के रूप में हर देश के कम्युनिस्ट स्वयं अपने अनुभव से मुस्तैदी से वे सारे सबक सीखें जो सीखे जा सकते हैं और उनको अमल में उतारें। हम यह चाहते हैं कि वे जल्दी से जल्दी संघर्ष के विक्षोभपूर्ण सागर में संतरण करना सीखें, न कि अच्छे मौसम की उम्मीद में किनारे खड़े रह कर, उमड़ती हुई लहरों को देखते और गिनते रहें।

हम यही चाहते हैं।

और, हम यह सब इसलिए चाहते हैं कि इसी तरह सारे मेहनतकशों की रहनुमाई करते हुए, लाखों की क्रान्तिकारी सेना के साथ एकाकार होकर कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के नेतृत्व में चलते हुए और हमारे नेता कामरेड स्तालिन जैसे महान और बुद्धिमान रहबर के मौजूद रहते मजदूर वर्ग धरती पर से फासिज्म का, और उसके साथ-साथ पूंजीवाद का, सफाया कर देने के अपने ऐतिहासिक लक्ष्य को निश्चित रूप में पूरा कर सकेगा।

फासिज्म के खिलाफ मजदूर वर्ग की एकता

कॉमिन्टर्न की सातवीं विश्व कांग्रेस में समापन भाषण, १३ अगस्त १९३५

साथियो, मेरी रिपोर्ट पर हुई भरपूर बहस यह दिखाती है कि पूंजी और फासिज्म के हमले के खिलाफ, साम्राज्यवादी युद्ध के खतरे के खिलाफ, मजदूर वर्ग के संघर्ष की आधारभूत कार्यनीतिक समस्याओं और कर्त्तव्यों में कांग्रेस ने कितनी अपार दिलचस्पी ली है।

आठ-दिवसीय बहस का निचोड़ पेश करते हुए हम कह सकते हैं कि रिपोर्ट में सम्मिलित सभी मुख्य प्रस्थापनाओं को कांग्रेस का एकमत से अनुमोदन प्राप्त हुआ है। हमने जो कार्यनीतिक लाइन प्रस्तावित की है या हमने जो प्रस्ताव पेश किया उस पर किसी भी वक्ता ने एतराज नहीं किया।

मैं यह बेधड़क कह सकता हूं कि कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की पहले की किसी भी कांग्रेस में ऐसी विचारधारात्मक और राजनीतिक एकजुटता सामने नहीं आयी जैसी मौजूदा कांग्रेस में। कांग्रेस में जो पूर्ण मतैक्य देखने में आया वह इस बात का सूचक है कि बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप तथा पिछले चंद वर्षों के अत्यन्त प्रचुर और शिक्षाप्रद अनुभव को यथोचित ध्यान में रखते हुए, अपनी नीति और कार्यनीति में संशोधन करने की आवश्यकता को हमारी पांतें पूरी तरह स्वीकार करती हैं।

इस मतैक्य को निस्संदेह अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा आन्दोलन की सबसे फौरी समस्या को, अर्थात फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में मजदूर वर्ग के सभी तबकों की कार्रवाई की एकता कायम करने की समस्या को, हल करने में सफलता की एक सबसे महत्वपूर्ण शर्त समझा जाना चाहिए।

इस समस्या के सफल समाधान के लिए सबसे पहले यह जरूरी है कि कम्युनिस्ट मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्लेषण के अस्त्र का कुशलता के साथ प्रयोग करें, विकसित होती हुई वास्तविक परिस्थिति तथा वर्ग शक्तियों की पंक्तिबद्धता का सावधानी से अनुशीलन करें, और उसी के अनुरूप अपने कार्य-कलाप और संघर्ष की योजना बनायें। हमारे साथियों में ढली-ढलायी योजनाओं, बेजान फार्मूलों और बने-बनाये नमूनों के प्रति जो कमजोरी अक्सर देखने में आती है, उसे हमें निर्ममता के साथ उखाड़ फेंकना चाहिए। हमें उस

हालत का खात्मा कर देना चाहिए जिसमें मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्लेषण के जरूरी ज्ञान या योग्यता के अभाव में कम्युनिस्ट लोग परिस्थितियों, वर्ग शक्तियों के संबंधों, सर्वहारा और मेहनतकश अवाम की क्रान्तिकारी परिपक्वता, तथा संकट से बाहर आने के क्रान्तिकारी पथ को सम्भव बनाने के लिए जरूरी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रभाव के स्तर की व्याख्या की लेशमात्र गंभीर कोशिश किये बगैर आम मुहावरों और "संकट से बाहर आने के क्रान्तिकारी पथ" जैसे नारों को अपना लेते हैं। ऐसे विश्लेषण के बगैर ये सभी नारे कागजी गोले, थोथे मुहावरे बन जाते हैं जो तात्कालिक कर्तव्यों को महज ओझल करते हैं। ठोस मार्क्सवादी-लेनिनवादी विश्लेषण के बगैर हम फासिज्म की समस्या को, सर्वहारा संयुक्त मोर्चे और जन मोर्चे की समस्याओं को, पूंजीवादी-जनवाद के प्रति अपने रुख की समस्या को, मजदूर वर्ग और खास तौर पर सामाजिक-जनवादी मजदूरों के भीतर चल रही प्रक्रियाओं की समस्या को, संयुक्त मोर्चा सरकार की समस्या को, या उन अनगिनत अन्य नयी और पेचीदा समस्याओं में से किसी को भी ठीक-ठीक प्रस्तुत और हल नहीं कर सकेंगे, जिन्हें स्वयं जिंदगी और वर्ग संघर्ष का विकास हमारे सामने आज पेश कर रहा है और भविष्य में पेश करेगा।

दूसरे, हमें जीते-जागते लोगों की जरूरत है—ऐसे लोगों की जरूरत है जो मजदूर समुदाय के बीच पले-बढ़े हों, उनके रोजमर्रा के संघर्ष के बीच से उभरे हों, जो सर्वहारा के ध्येय के लिए पूरी तरह समर्पित और जुझारू कार्रवाई वाले लोग हों, जिनके तन और मन कांग्रेस के फैसलों को अमल में उतारें। बोल्शेविक, मार्क्सवादी-लेनिनवादी कार्यकर्ताओं के बगैर हम फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में मेहनतकशों के सामने पेश विपुल समस्याओं को हल नहीं कर सकेंगे।

तीसरे, हमें मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्त के कुतुबनुमा से लैस लोगों की जरूरत है, क्योंकि ऐसे लोग, जो इस यंत्र का कुशलता से इस्तेमाल नहीं कर सकते, संकुचित, कामचलाऊ राजनीति में उतर जाते हैं, हर मामले पर अलग-अलग फैसले लेते है, तथा संघर्ष का वह व्यापक सदर्श गवां देते हैं, जो जनता को यह दिखाता है कि हम कहां जा रहे हैं और मेहनतकशों को किधर ले जा रहे हैं।

चौथे, हमें जनता के संगठन की जरूरत है जिससे अपने फैसलों को हम अमल में उतार सकें। हमारा विचारधारात्मक और राजनीतिक प्रभाव ही काफी नहीं है। हमें इस आशा पर कि आन्दोलन खुद-ब-खुद विकसित होगा निर्भर करना बंद कर देना चाहिए, क्योंकि यह हमारी एक बुनियादी कमजोरी रही है। हमें यह याद रखना चाहिए कि जब तक हम लगन के साथ, दीर्घ-

काल तक, बड़े धैर्य से और कभी-कभी ऊपर से श्रेयरहित दिखायी देने वाला संगठनात्मक काम नहीं करेंगे, तब तक जनता कम्युनिस्ट पक्ष की ओर कभी नही बढ़ेगी। जनता को संगठित कर सकने के लिए यह जरूरी है कि हम अपने फैसलों को सिर्फ कम्युनिस्टों की नही बल्कि मेहनतकशों के व्यापकतम समुदाय की संपत्ति बना देने की लेनिनवादी कला में निपुणता हासिल करें। हमें जनता से किताबी फार्मूलों की भाषा में नहीं, बल्कि जन साधारण के ध्येय के लिए उन लड़ने वालों की भाषा में बात करना सीखना चाहिए, जिनके हर शब्द और हर विचार में लाखों लोगों के अन्तर्तम विचार और भावनाएं प्रतिबिंबित होती है।

प्रथमतः इन्ही समस्याओं पर अपने समापन भाषण में मैं कुछ कहना चाहूंगा।

साथियो, कांग्रेस ने नयी कार्यनीतिक लाइनों का अत्यंत उत्साह और मतैक्य के साथ स्वागत किया है। उत्साह और मतैक्य का होना, निश्चय ही, बहुत अच्छी बात है; मगर यह और भी बेहतर बात होगी कि इन्हें हमारे सामने पेश कर्तव्यों के प्रति सुविचारित और आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ, स्वीकृत किये गये फैसलो की समुचित समझदारी तथा हर देश की विशिष्ट परिस्थितियो मे इन फैसलों को जिन साधनो और तरीको से अमल मे लाया जाना है उनकी वास्तविक समझ के साथ, समन्वित किया जाय।

आखिरकार, हमने आज से पहले भी अच्छे प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत किये हैं, मगर मुश्किल यह रही कि हमने अक्सर ही इन फैसलों को औपचारिक ढंग से ही स्वीकृत किया और उन्हें मजदूर वर्ग के एक छोटे-से हिरावल की ही जायदाद बनाया। ये फैसले लाखों लोगों के रक्त-मास का हिस्सा नहीं बन सके, न ही वे उनकी कार्रवाइयों मे उनके मार्ग-दर्शक बन सके।

क्या हम दावे से कह सकते हैं कि हम स्वीकृत फैसलों के प्रति इस रस्मी रवैये को अब तिलांजलि दे चुके हैं? नही। यह कहना जरूरी है कि इस कांग्रेस में भी कुछ साथियो के भाषणों से औपचारिकतावाद के अवशेषों की गंध आती है, कि वास्तविकता के ठोस विश्लेषण और सजीव अनुभव के स्थान पर किसी न किसी तरह की एक नयी योजना, एक तरह के एक नये, अति-सरलीकृत, बेजान फर्मूले को स्थापित कर देने की, जिसे हम चाहते हैं मगर जिसका अभी तक अस्तित्व नहीं है उसे इस तरह प्रस्तुत करने की आकांक्षा अभिव्यक्त हुई, जैसे वह वस्तुतः अस्तित्व में हो।

फासिज्म के खिलाफ संघर्ष ठोस होना चाहिए

फासिज्म के सामान्य चरित्र-निरूपण से, चाहे वह अपने में कितना भी

सही क्यों न हो, फासिज्म के विकास के विशेष पहलुओं तथा अलग-अलग देशों में फासिस्ट तानाशाही के विविध रूपों और उसकी विविध मंजिलों का अध्ययन करने और उन पर विचार करने की आवश्यकता से हमें छुट्टी नही मिल सकती। यह आवश्यक है कि हर देश में फासिज्म की राष्ट्रीय विलक्षणताओं की, उसके विशिष्ट राष्ट्रीय लक्षणों की छानबीन की जाय, उनका अध्ययन किया जाय और उनकी निश्चित जानकारी हासिल की जाय तथा उन्हीं के अनुरूप फासिज्म के खिलाफ संघर्ष के कारगर तरीको और रूपों को निर्धारित किया जाय।

लेनिन हमें निरंतर इस तरह के "ढले-ढलाये तरीको से, कार्यनीतिक नियमों को, संघर्ष के नियमों को, यांत्रिक ढंग से सपाट रूप दे देने और अभिन्न मान लेने से" आगाह करते रहे। यह चेतावनी एक ऐसे समय खास तौर पर प्रासंगिक है जब सवाल इस तरह के दुश्मन से लोहा लेने का है, जो जनता की राष्ट्रीय भावनाओं और पूर्वग्रहों का, तथा पूंजीवाद-विरोधी रुझानों का, बड़ी पूजी के हितों में इतनी बारीकी और मक्कारी से इस्तेमाल करता है। ऐसे दुश्मन को पूरी तरह से, हर कोण से, जान लिया जाना चाहिए। हमें कतई किसी प्रकार का विलम्ब किये बगैर उसके नाना प्रकार के दांव-घातों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करनी चाहिए, उसकी छिपी चालों का पता लगा लेना चाहिए, किसी भी क्षेत्र में और किसी भी पल उसे शिकस्त देने के लिए तैयार रहना चाहिए। अगर दुश्मन से सीखना हमारे लिए ज्यादा फुर्ती से और ज्यादा कारगर ढंग से उसका गला दबोच देने में सहायक हो, तो इससे भी नहीं हिचकना चाहिए।

फासिज्म के विकास की किसी भी तरह की सार्वभौम योजना प्रस्तुत करना, जो सभी देशों और सभी जनगण पर लागू होती हो, भारी भूल होगी। इस तरह की योजना हमारे लिए वास्तविक संघर्ष चलाने में सहायक नही, बल्कि बाधक होगी। और सारी बातों के अलावा, इसका यह नतीजा होगा कि इससे आबादी के वे तबके बिना भेदभाव के फासिज्म के खेमे में धकेल दिये जायेंगे, जिन्हें, अगर ठीक दृष्टिकोण अपनाया गया होता, तो विकास के एक खास चरण में फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में लाया जा सकता था या कम से कम बेअसर बना दिया जा सकता था।

मसलन फ्रांस और जर्मनी में फासिज्म के विकास को ही लीजिए। कुछ साथी यह विश्वास करते है कि, आम तौर पर कहा जाय तो, फासिज्म फ्रांस में उतनी आसानी से विकसित नही हो सकता जितनी आसानी से जर्मनी मे। इस कथन में सच क्या है और झूठ क्या है? सच यह है कि जर्मनी में वैसी गहरी जड़ें-जमाये जनवादी परंपराएं नही रहीं जैसी कि फ्रांस में हैं। फ्रांस

अठारहवीं और उन्नीसवी शताब्दियों में कई क्रान्तियों से गुजरा है। यह सच है कि फ्रांस ऐसा देश है जो युद्ध में विजयी हुआ और जिसने दूसरे देशों पर वार्साई संधि लादी, कि फ्रांसीसी जनता की राष्ट्रीय भावनाएं उस तरह आहत नहीं हुई हैं जिस तरह जर्मनी में हुई—जहां इस तत्व ने एक बड़ी भूमिका अदा की। यह सच है कि फ्रांस में किसानों के बुनियादी समुदाय, खास तौर पर दक्षिण में, प्रजातंत्र के समर्थक और फासिज्म के विरोधी हैं, जबकि इसके विपरीत जर्मनी में फासिज्म के सत्ता में आने से पहले भी किसानों का एक खासा बड़ा हिस्सा प्रतिक्रियावादी पार्टियों के प्रभाव में था।

लेकिन, साथियो, फ्रांस में और जर्मनी में फासिस्ट आन्दोलन के विकास में मौजूद भिन्नताओं के बावजूद, फ्रांस में फासिज्म के हमले में बाधक होने वाले तत्वों के बावजूद, वहां फासिज्म के खतरे के निर्विघ्न रूप से बढ़ते जाने को न देखना, या फासिस्ट सत्ता-अपहरण की सम्भावना को घटा कर आंकना, अदूरदर्शिता होगी। साथ ही, फ्रांस में ऐसे बहुत-से तत्व हैं जो फासिज्म के विकास के लिए मददगार हैं। यह नहीं भूलना चाहिए कि आर्थिक संकट, जिसकी शुरूआत फ्रांस में अन्य पूंजीवादी देशों के बाद में हुई, अधिकाधिक गहरा और तेज होता जा रहा है और इससे फासिस्ट लफ्फाजी की धमाचौकड़ी को बहुत बढ़ावा मिलता है। फ्रांसीसी फासिज्म को सेना में, अफसरों में, ऐसी सबल स्थितियां प्राप्त हैं, जैसी राष्ट्रीय-समाजवादियों को सत्ता में आने से पहले राइखस्वेर (जर्मन सेना—अनु.) मे प्राप्त नही थी। यही नहीं, शायद किसी भी दूसरे देश में संसदीय हुकूमत इस भीषण सीमा तक भ्रष्ट नही हुई है और जन समुदाय में इतना ज्यादा आक्रोश पैदा नहीं किया है, जितना फ्रांस में। और, हम जानते हैं कि फ्रांसीसी फासिस्ट, पूंजीवादी-जनवाद के खिलाफ अपनी लड़ाई में इस तथ्य का बड़े लफ्फाजी भरे ढंग से इस्तेमाल करते हैं। न ही यह भूलना चाहिए कि योरप में अपने राजनीतिक और सैनिक नायकत्व से हाथ धो बैठने के फ्रांसीसी पूंजीपति वर्ग के गहरे भय के कारण भी, फासिज्म के विकास का खतरा बढ़ता है।

इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि फ्रांस में फासिज्म-विरोधी आन्दोलन द्वारा हासिल की गयी सफलताएं, जिनका कामरेड थोरे और केशी ने यहां जिक्र किया है, और जिन पर हम हृदय से इतने हर्षित हैं, अभी भी इस बात का संकेत नही करती कि मेहनतकश समुदाय ने फासिज्म का रास्ता रोक देने में निश्चित रूप से सफलता पा ली है। हमें फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में फ्रांसीसी मजदूर वर्ग के कर्तव्यों के अत्यधिक महत्व पर एक बार फिर भरपूर जोर देना होगा, जिनका जिक्र मैं पहले ही अपनी रिपोर्ट में कर चुका हूं।

इसी तरह, उन दूसरे देशों मे फासिज्म की कमजोरी के बारे में भ्रम

पालना भी खतरनाक होगा जहां उसे विस्तृत जन-आधार प्राप्त नही है। हमारे पास बुलगारिया, यूगोस्लाविया और फिनलेंड जैसे देशों के उदाहरण हैं, जहां हालांकि फासिज्म के पास विस्तृत जन-आधार नही था, फिर भी वह राज्य की सशस्त्र सेना के सहारे सत्ता में आ गया, और तब उसने राज्य यंत्र का उपयोग कर जन-आधार विस्तृत करने की कोशिश की।

कामरेड दत्त का यह कहना सही था कि विविध देशों में फासिस्ट आन्दोलन के विशिष्ट पहलुओं को ध्यान में रखे बगैर, फासिज्म के बारे में सामान्य रूप में, सोचने की ही हममें प्रवृत्ति रही है, जिसके फलस्वरूप हम पूंजीपति वर्ग के सभी प्रतिक्रियावादी कदमों का वर्गीकरण फासिज्म के रूप मे कर देते हैं और इस हद तक चले जाते है कि पूरे गैर-कम्युनिस्ट खेमे को फासिस्ट करार देने लगते हैं। फलतः फासिज्म के खिलाफ संघर्ष सशक्त नही, बल्कि कमजोर होता है।

आज भी हममें फासिज्म के सवाल पर ढले-ढलाये दृष्टिकोण के अवशेष मौजूद हैं। मसलन, जब कुछ साथी जोर-शोर से यह कहते हैं कि रूजवेल्ट की "नयी अर्थनीति" (न्यू डील) फासिज्म की दिशा में पूंजीपति वर्ग के विकास का ग्रेट ब्रिटेन की "राष्ट्रीय सरकार" से कहीं अधिक स्पष्ट और प्रखर रूप प्रस्तुत करती है, तो क्या यह इस प्रश्न पर एक ढले-ढलाये दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति नहीं है ? पिटी-पिटायी योजनाओं के इस्तेमाल का बेहद आदी हो चुका व्यक्ति ही यह नही देखेगा कि अमरीकी वित्त पूंजी के जो सबसे प्रतिक्रियावादी हलके रूजवेल्ट पर हमला कर रहे हैं, वे ही सर्वोपरि ऐसी शक्ति है जो सयुक्त राज्य अमरीका में फासिस्ट आन्दोलन को प्रोत्साहित और सगठित कर रही है। "अमरीकी नागरिक के जनवादी अधिकारों की रक्षा मे" इन हलकों के पाखड भरे उद्‌गारो के पीछे संयुक्त राज्य अमरीका में वास्तविक फासिज्म की शुरूआत न देखना, मजदूर वर्ग को उसके सबसे घातक दुश्मन के खिलाफ संघर्ष में गुमराह करने के बराबर है।

औपनिवेशिक और अर्ध-औपनिवेशिक देशो में भी, जैसा कि बहस के दौरान बताया जा चुका है, कुछ फासिस्ट ग्रुप विकसित हो रहे हैं। लेकिन, निस्संदेह, वहा वैसे फासिज्म का सवाल नही उठता जैसा हम जर्मनी, इटली और अन्य पूंजीवादी देशो में देखने के अभ्यस्त हैं। वहा हमें उन सर्वथा भिन्न आर्थिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों का अध्ययन करना और उन्हें ध्यान में रखना चाहिए, जिनके अनुरूप फासिज्म अपने विलक्षण रूप ग्रहण कर रहा है और करता रहेगा।

वास्तविक जीवन की घटनाओं के प्रति ठोस दृष्टिकोण अपनाने में असमर्थ कुछ साथी, जो मानसिक काहिली के शिकार हैं, वास्तविक स्थिति और वर्ग

शक्तियों के संबंध का सावधानी से और ठोस अध्ययन करने के स्थान पर सामान्य, किसी भी तरह की वचनबद्धता से रहित फार्मूले अपना लेते हैं। ये घात लगा कर गोली दागने वालों के विपरीत, जो कि अचूक निशाना लगाते हैं, हमे उन "धांय-धांय वाले" बंदूकचियों की याद दिलाते हैं जो लगातार और अचूक रूप से निशाना चूकते रहते हैं, यानी जो ज्यादा ऊपर या ज्यादा नीचे, ज्यादा पास या ज्यादा दूर, गोली दागते रहते हैं। मगर हम, साथियो, मजदूर आन्दोलन में कम्युनिस्ट-योद्धाओं के रूप में, मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी हिरावल के रूप में, घात लगा कर गोली दागने वाले होना चाहते हैं, जो बिना चूके निशाने पर वार करते हैं।

संयुक्त सर्वहारा मोर्चा या फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चा

कुछ साथी बिलकुल अकारण ही इस समस्या को उठा कर माथापच्ची कर रहे हैं कि कहां से शुरुआत की जाय—संयुक्त सर्वहारा मोर्चे से या फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे से।

कुछ लोग कहते हैं कि हम तब तक फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे का निर्माण नही शुरू कर सकते, जब तक कि हम सर्वहारा का ठोस संयुक्त मोर्चा न गठित कर लें।

दूसरे यह दलील देते हैं कि चूंकि बहुत-से देशों में सामाजिक-जनवादियों के प्रतिक्रियावादी हिस्से की ओर से संयुक्त सर्वहारा मोर्चे की स्थापना का विरोध किया जाता है, इसलिए बेहतर यह है कि जन मोर्चे का निर्माण ही शुरू कर दिया जाय, और फिर इसके आधार पर संयुक्त मजदूर वर्ग मोर्चा विकसित किया जाय।

जाहिर है कि दोनों ही यह नहीं समझ पाते है कि संयुक्त सर्वहारा मोर्चा और फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चा संघर्ष की जीती-जागती द्वन्द्वात्मकता से जुड़े हैं; कि ये आपस में गुथे हुए हैं, और फासिज्म के खिलाफ अमली संघर्ष के दौरान एक दूसरे में प्रवेश कर जाता है, और निश्चय ही कोई चीनी दीवाल नही जो उन्हें अलग रखे।

कारण यह कि गभीरता से इस बात की कल्पना भी नही की जा सकती कि एक सच्चे फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे की स्थापना स्वयं उस मजदूर वर्ग की अमली एकता कायम किये बगैर की जा सकती है, जो इस फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे की नेतृत्वकारी शक्ति है। साथ ही, इस संयुक्त सर्वहारा मोर्चे का आगे विकास, बहुत हद तक, उसके फासिज्म के विरुद्ध जन मोर्चे में रूपांतरित होने पर निर्भर करता है।

साथियो, आप इस प्रकार के टले-ढलाये सिद्धान्तों के उस भक्त की कल्पना कीजिए जो टकटकी बांधे हमारे प्रस्ताव को निहार रहा हो और एक सच्चे सिद्धान्तदंभी के उत्साह के साथ अपनी प्रिय योजना को सोच निकालने में जुटा हो :

पहले, नीचे से स्थानीय संयुक्त सर्वहारा मोर्चा;
तब, नीचे से क्षेत्रीय संयुक्त मोर्चा;
इसके बाद, ऊपर से संयुक्त मोर्चा, इन्हीं मंजिलों से गुजरता हुआ;
तब, ट्रेड यूनियन आन्दोलन की एकता;
तदुपरांत, दूसरी फासिस्ट-विरोधी पार्टियों को शामिल करना;
इसके बाद, विस्तारित जन मोर्चा, ऊपर से और नीचे से भी।

और तब आन्दोलन उच्चतर स्थर पर ले जाया जाय, उसमे राजनीतिक विचारों और क्रान्तिकारी भावनाओं का संचार किया जाय, इत्यादि-इत्यादि।

आप कहेंगे, साथियो, कि यह सरासर बकवास है। मैं आपसे सहमत हूं। लेकिन बदकिस्मती की बात है कि अभी भी किसी न किसी रूप में इस प्रकार की संकीर्णतावादी बकवास हमारी पांतों में अक्सर ही पायी जाती है।

दरअसल वस्तुस्थिति क्या है? बेशक हमें हर कहीं फासिज्म के खिलाफ संघर्ष के जन मोर्चे के लिए प्रयास करना चाहिए। मगर बहुत से देशों में हम तब तक जन मोर्चे के बारे में आम बातचीत से आगे नहीं बढ़ सकेंगे, जब तक कि संघर्ष के सर्वहारा संयुक्त मोर्चे के निर्माण में सामाजिक-जनवाद के प्रति-क्रियावादी हिस्से के प्रतिरोध को तोड़ने के उद्देश्य से आम मजदूरों को लामबंद करने में सफल नहीं होंगे। प्रथमतः, ग्रेट ब्रिटेन में यही स्थिति है जहां आबादी में मजदूर वर्ग का बहुमत है और जहां अधिकांश मजदूर वर्ग ट्रेड यूनियनों और लेबर पार्टी के नेतृत्व में चलता है। यही वस्तुस्थिति बेल्जियम और स्कैंडिनेवियाई देशों में है, जहां संख्या की दृष्टि से छोटी कम्युनिस्ट पार्टियों के लिए शक्तिशाली सामूहिक ट्रेड यूनियनों और संख्या की दृष्टि से विशाल सामाजिक-जनवादी पार्टियों का सामना करना अनिवार्य है।

इन देशों में अगर कम्युनिस्टों ने जन मोर्चे के बारे में, जो कि सामूहिक मजदूर वर्ग संगठनों की शिरकत के बगैर नहीं बन सकता, आम बातचीत की आड़ में संयुक्त सर्वहारा मोर्चा स्थापित करने के संघर्ष से जी चुराया, तो वे बहुत ही गंभीर राजनीतिक भूल करेंगे। इन देशों में एक सच्चा जन मोर्चा कायम करने के लिए कम्युनिस्टों को मजदूरों के विशाल समुदाय के बीच अपार राजनीतिक और सांगठनिक कार्य करना होगा। इन मजदूरों के पहले से ही सोच रखे गये विचारों को, जो कि यह समझते हैं कि उनके विशाल सुधारवादी संगठनों के रूप में पहले ही सर्वहारा एकता साकार हो चुकी है,

दूर किया जाना चाहिए। इन मजदूरों को यह समझाना होगा कि कम्युनिस्टों के साथ सयुक्त मोर्चे का अर्थ है विशाल मजदूर जमात का वर्ग संघर्ष की स्थिति की ओर मुड़ना। इस मोड़ से ही पूंजी और फासिज्म के हमले के खिलाफ संघर्ष में सफलता की गारंटी हो सकती है। अपने लिए यहां और अधिक व्यापक कर्तव्यों को निर्धारित करके हम अपनी कठिनाइयों को दूर नहीं कर सकेंगे। उल्टे, इन कठिनाइयों को दूर करने के लिए लड़ते हुए हम—हकीकत में, न कि सिर्फ शब्दों में—फासिज्म के खिलाफ, पूंजीवादी हमले के खिलाफ और साम्राज्यवादी युद्ध के खतरे के खिलाफ संघर्ष के एक सच्चे जन मोर्चे के निर्माण के लिए जमीन तैयार करेंगे।

पोलैंड जैसे देशों में मसला भिन्न है, जहां मजदूर आन्दोलन के साथ ही साथ एक शक्तिशाली किसान आन्दोलन भी विकसित हो रहा है, जहां किसान समुदायों के स्वयं अपने संगठन है जिनमें कृषि संकट के फलस्वरूप मूलगामी चेतना का सचार होता जा रहा है, जहां राष्ट्रीय उत्पीड़न के खिलाफ राष्ट्रीय अल्पसख्यकों में रोष उमड़ पड़ता है। यहां सघर्ष के जन मोर्चे का विकास संयुक्त सर्वहारा मोर्चे के विकास के समानान्तर चलेगा, और कभी-कभी इस प्रकार के देश में आम जन मोर्चे का आन्दोलन मजदूर वर्ग मोर्चे के आन्दोलन से आगे निकल जा सकता है।

स्पेन जैसे देश को लीजिए, जो पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति के दौर से गुजर रहा है। क्या यह कहा जा सकता है कि चूंकि सर्वहारा असख्य छोटे-छोटे संगठनों में बंटा हुआ है, इसलिए इसके पहले कि लेरोक्स (अलेक्साड्रो गार्सिया लेरोक्स, स्पेन की रिपब्लिकन और रैडिकल पार्टी के नेता; पहली रिपब्लिकन सरकार, १६३१, के विदेश मत्री; '१६३५ से प्रतिक्रियावादी सरकारों का नेतृत्व और अन्त मे तानाशाह फ्रेंको के साथ हो लिया—अनु.) और गिल रोबल्स (स्पेन का प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञ; फासिस्ट-परस्त लेरोक्स सरकार में मत्री—अनु.) के खिलाफ मजदूरों और किसानों के मोर्चे के निर्माण के पहले यहां सर्वप्रथम मजदूर वर्ग की पूर्ण जगजू एकता कायम की जानी चाहिए? प्रश्न को इस तरह सुलझाने में हम सर्वहारा को किसानों से अलग-थलग कर देंगे, तत्वतः कृषि क्रान्ति का नारा वापस ले लेंगे, जनता के दुश्मनों के लिए सर्वहारा और किसानों के बीच फूट डालना आसान कर देंगे, तथा किसान समुदाय को मजदूर वर्ग के खिलाफ खड़ा कर देंगे। फिर भी, साथियो, जैसा कि सुविदित है, अस्टूरियास में १६३४ की अक्तूबर की घटनाओं मे मजदूर वर्ग की पराजय के मुख्य कारणों में यह एक था।

बहरहाल, एक बात नही भूलनी चाहिए कि उन सारे देशों में जहां सर्वहारा वर्ग सख्या में अपेक्षाकृत अल्प हो, जहां कृषक और शहरी निम्न-पूंजीवादी

तबकों का प्रभुत्व हो, यह और भी जरूरी है कि स्वयं मजदूर वर्ग का दृढ संयुक्त मोर्चा स्थापित करने के लिए हर प्रयास किया जाय जिससे वह सारे मेहनतकशों के संदर्भ में नेतृत्वकारी शक्ति के रूप में अपना स्थान ले सके।

इस प्रकार, साथियो, सर्वहारा मोर्चे और जन मोर्चे की समस्या को सुलझाते समय सभी मामलों, सभी देशों, सभी जनगण के लिए उपयुक्त कोई एक रामबाण-नहीं हो सकता। इस मामले में सार्वभौमतावाद, सारे देशों के लिए एक ही नुस्खे का प्रयोग, अगर आप मुझे कहने की इजाजत दें, अज्ञान का पर्याय है; और अगर अज्ञान लुक-छिप कर आये तो भी, खास तौर पर जब वह सार्वभौम ढली-ढलायी योजनाओं के नकाब में आये, उस पर कोड़े बरसाये जाने चाहिए।

सामाजिक-जनवाद की भूमिका और सर्वहारा के संयुक्त मोर्चे के प्रति उसका रुख

साथियो, हमारे सामने पेश कार्यनीति संबंधी सवालों को देखते हुए इस सवाल का सही जवाब देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि आज अभी भी सामाजिक-जनवाद पूंजीपति वर्ग का प्रधान दुर्ग है या नहीं, और अगर है तो कहां ?

बहस में भाग लेने वाले कुछ साथियों (का. फ्लोरिन और का. दत्त) ने इस सवाल को उठाया, मगर इसके महत्व को देखते हुए इसका और भी पूरी तौर पर जवाब दिया जाना चाहिए। कारण यह कि यह एक ऐसा सवाल है जिसे हर रुझान के मजदूर, खास तौर पर सामाजिक-जनवादी मजदूर, पूछ रहे है और पूछे बिना रह नहीं सकते।

यह बात याद रखनी चाहिए कि अनेक देशों मे पूंजीवादी राज्य मे सामाजिक-जनवाद की स्थिति और पूंजीपति वर्ग के प्रति उसके रवैये में तब्दीली आती रही है।

सर्वप्रथम तो संकट ने मजदूर वर्ग के उस सबसे सुरक्षित तबके की, मजदूरों के बीच के उस तथाकथित अभिजात तबके की, चूल-मूल भी हिला दी है जिस पर, जैसा कि हम जानते हैं, सामाजिक-जनवाद समर्थन के लिए भरोसा करता है। इस तबके ने भी पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की नीति की अभीप्सता के बारे में अपने विचारों में अधिकाधिक संशोधन करना शुरू कर दिया है।

दूसरे, जैसा कि मैंने अपनी रिपोर्ट में लक्षित किया था, अनेक देशों में पूंजीपति वर्ग स्वयं पूंजीवादी जनवाद का परित्याग करने और अपनी तानाशाही के आतंकवादी रूप का सहारा लेने तथा सामाजिक-जनवाद को न सिर्फ वित्त पूंजी की राजनीतिक व्यवस्था में उसकी पहले की स्थिति से बल्कि कुछ परि-

स्थितियों में उसकी वैध हैसियत से भी वंचित कर देने और उसे ताड़ना तथा दमन का शिकार बनाने को मजबूर है।

तीसरे, जर्मनी, ऑस्ट्रिया और स्पेन में मजदूरों की पराजय (जर्मनी में १९१८-२३ के काल में तथा ऑस्ट्रिया और स्पेन में १९३४ में—अनु.) से सीखे गये सबकों के प्रभाववश, उस पराजय से जो अधिकांश में पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की सामाजिक-जनवाद की नीति का नतीजा थी, तथा दूसरी ओर बोल्शेविक नीति तथा क्रान्तिकारी मार्क्सवाद के प्रयोग के फलस्वरूप सोवियत संघ में समाजवाद की विजय के प्रभाववश, सामाजिक-जनवादी मजदूरों में क्रान्तिकारिता का संचार हो रहा है और वे पूंजीपति वर्ग के खिलाफ वर्ग-संघर्ष की ओर मुड़ने लगे है।

इस सबका मिला-जुला प्रभाव यह पड़ा है कि सामाजिक-जनवाद के लिए पूंजीपति वर्ग के दुर्ग की पहले की भूमिका को बरकरार रख सकना उत्तरोत्तर अधिक कठिन और कुछ देशों में दरअसल असम्भव हो गया है।

इसे न समझ सकना खास तौर पर उन देशों में हानिकर है जिनमें फासिस्ट तानाशाही ने सामाजिक-जनवाद को उसकी वैध हैसियत से वंचित कर दिया है। इस दृष्टि बिंदु से उन जर्मन साथियों की आत्मालोचना सही थी जिन्होंने अपने भाषणो में सामाजिक-जनवाद संबंधी पुराने फार्मूलों और फैसलों से शाब्दिक रूप में चिपके रहने, उसकी स्थिति मे आयी तब्दीलियों को नजरअंदाज करने, की गलती की आलोचना की और ऐसे नजरिये को छोड़ने की आवश्यकता का जिक्र किया। यह स्पष्ट है कि अगर हम इन तब्दीलियों को नजरअंदाज करते हैं तो इससे मजदूर वर्ग की एकता स्थापित करने के सिलसिले में हमारी नीति विकृत होगी, तथा सामाजिक-जनवादी पार्टियों के प्रतिक्रियावादी तत्वों द्वारा संयुक्त मोर्चे का भीतरघात करना आसान हो जायगा।

सभी देशों में सामाजिक-जनवादी पार्टियों की कतारो में क्रान्तिकारिता के संचार की जो प्रक्रिया चल रही है, उसका विकास असमान है। यह कल्पना नही कर लेनी चाहिए कि जो सामाजिक-जनवादी मजदूर क्रान्तिकारी चेतना से अनुप्राणित हो रहे है, वे एकबारगी और सामूहिक पैमाने पर सुसंगत वर्ग संघर्ष की स्थिति अपना लेंगे तथा बिना किसी मध्यवर्ती चरण से गुजरे सीधे कम्युनिस्टों के साथ एका कायम कर लेंगे। बहुत-से देशो में यह एक कमोबेश मुश्किल, कमोवेश पेचीदा और लंबी प्रक्रिया होगी और हर हालत में मूलतः हमारी नीति और कार्यनीति के सही होने पर निर्भर करेगी। हमें इस सम्भावना को भी समझ लेना चाहिए कि पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की स्थिति से पूंजीपति वर्ग के खिलाफ वर्ग संघर्ष की स्थिति मे पहुचने के दौर में कुछ सामाजिक-जनवादी पार्टिया और सगठन कुछ समय तक स्वतंत्र संगठनों

या पार्टियों के रूप में अस्तित्व में बने रहेंगे। ऐसी स्थिति में ऐसे सामाजिक-जनवादी संगठनों या पार्टियों को पूंजीपति वर्ग का दुर्ग समझने की बात निस्संदेह सोची ही नही जा सकती।

यह अपेक्षा नही की जा सकती कि वे सामाजिक-जनवादी मजदूर, जो पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की विचारधारा के असर में हैं जिसे उनमें दसियों साल से भरा जाता रहा है, मात्र वस्तुगत कारणों के प्रभाव से खुद-ब-खुद इस विचारधारा से अलग हो जायेंगे। नही। उन्हें सुधारवादी विचारधारा की गिरफ्त से स्वयं को मुक्त करने में सहायता देना हमारा, हम कम्युनिस्टों का, काम है। कम्युनिज्म के सिद्धान्तों और कार्यक्रम की व्याख्या करने का कार्य धीरज के साथ और दोस्ताना तरीके से किया जाना चाहिए तथा उसे अलग-अलग सामाजिक-जनवादी मजदूरों के विकास की मात्रा के अनुसार ढाला जाना चाहिए। सामाजिक-जनवाद की हमारी आलोचना को और अधिक विशिष्ट और व्यवस्थित होना चाहिए तथा उसे स्वयं आम सामाजिक-जनवादियों के अनुभव पर आधारित होना चाहिए। यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि प्रथमतः वर्ग शत्रु के खिलाफ कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त संघर्ष में सामाजिक-जनवादी मजदूरों द्वारा हासिल किये गये अनुभव का इस्तेमाल करके ही, उनके क्रान्तिकारी विकास को आसान और तेज करना सम्भव और आवश्यक होगा। सर्वहारा संयुक्त मोर्चे में सामाजिक-जनवादी मजदूरो की शिरकत से बढ़ कर उनके संदेहों और दुविधाओं को दूर करने का कोई दूसरा कारगर तरीका नही है।

हम न सिर्फ सामाजिक-जनवादी मजदूरों के लिए बल्कि सामाजिक-जनवादी पार्टियों और संगठनों के उन अग्रणी सदस्यों के लिए भी जो ईमानदारी से क्रान्तिकारी वर्ग स्थिति अपनाना चाहते है, वर्ग शत्रु के खिलाफ हमारे साथ काम करना और लड़ना आसान बनाने के लिए अपनी शक्ति भर पूरा प्रयास करेंगे। इसके साथ ही हम घोषणा करते हैं कि ऐसा कोई सामाजिक-जनवादी अमला, निचला अधिकारी, या मजदूर जो प्रतिक्रियावादी सामाजिक-जनवादी नेताओं की तोड़-फोड़ की चालों पर चलता रहेगा, जो संयुक्त मोर्चे का विरोध करेगा और इस प्रकार प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में वर्ग शत्रु को मदद देगा, वह मजदूर वर्ग के सामने कम से कम उनके बराबर दोषी होगा जो ऐतिहासिक दृष्टि से वर्ग सहयोग की सामाजिक-जनवादी नीति को समर्थन देने के अपराधी हैं—उस नीति को समर्थन देने के अपराधी है जिसने अनेक योरपीय देशों में १९१८ की क्रान्ति को क्षति पहुंचायी और फासिज्म के लिए रास्ता साफ किया।

संयुक्त मोर्चे के प्रति अपनाया जाने वाला दृष्टिकोण सामाजिक-जनवाद के

प्रतिक्रियावादी तबकों और उन तबकों के बीच विभाजक रेखा है, जो क्रान्तिकारी बनते जा रहे हैं। जो तबके क्रान्तिकारी बन रहे हैं उनको दी गयी हमारी सहायता उतनी ही कारगर होगी, जितना हम सामाजिक-जनवाद के उस प्रतिक्रियावादी खेमे के खिलाफ अपनी लड़ाई तेज करेंगे जो पूंजीपति वर्ग के गुट में हाथ बटाता है। सामाजिक-जनवादी पार्टियों के साथ संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए कम्युनिस्ट जितनी ही दृढ़ता के साथ जूझेंगे, वामपंथी खेमे में विविध तत्व उतनी ही जल्द आत्म निर्णय करेंगे। वर्ग संघर्ष के अनुभव तथा संयुक्त मोर्चा आन्दोलन में सामाजिक-जनवादियों की शिरकत से पता चलेगा कि उस खेमे में कौन मात्र शब्दों में "वामपंथी" और कौन सचमुच वामपंथी है।

संयुक्त मोर्चा सरकार

आम तौर पर देखा जाय तो संयुक्त सर्वहारा मोर्चे को व्यवहार में उतारने के प्रति सामाजिक-जनवाद का रुख हर देश में इस बात का मुख्य सूचक है कि पूंजीवादी राज्य में सामाजिक-जनवादी पार्टी या इसके अलग-अलग हिस्सों की पहले की भूमिका बदली है या नही, और अगर बदली है तो किस हद तक, **लेकिन संयुक्त मोर्चा सरकार के मसले पर सामाजिक-जनवादियों के रुख से इस बात की खास तौर पर स्पष्ट परख होगी।**

जब ऐसी स्थिति पैदा होती है जिसमे सयुक्त मोर्चा सरकार निर्मित करने का सवाल एक फौरी व्यावहारिक समस्या बन जाता है, तब देश विशेष में यह प्रश्न सामाजिक-जनवाद की नीति की निर्णायक कसौटी बन जायेगा: या तो उस पूंजीपति वर्ग के साथ मिल कर जो फासिज्म की ओर बढ़ रहा है मजदूर वर्ग के खिलाफ सरकार बने, या फासिज्म और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ क्रान्तिकारी सर्वहारा के साथ मिल कर, और वह भी मात्र कथनी मे नही बल्कि करनी में, सरकार बने। जिस समय संयुक्त मोर्चा सरकार निर्मित होगी, या जब वह सत्ता मे होगी, यह सवाल अनिवार्यतः इसी रूप मे उठेगा।

मेरा ख्याल है कि आम कार्यनीतिक दिशा का संकेत देने के लिए मेरी रिपोर्ट में संयुक्त मोर्चा सरकार या फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चा सरकार के चरित्र तथा उनके निर्माण की परिस्थितियों के बारे में पर्याप्त कहा जा चुका है। इस सबके अतिरिक्त हमसे यह अपेक्षा करना कि हम ऐसी सरकार के बनने के सभी सम्भव रूपों और सभी परिस्थितियों का संकेत देंगे, महज फिजूल अटकलबाजी मे उलझना होगा।

मैं इस सवाल को लेकर अति सरलीकरण करने अथवा गढ़ी-गढायी योजनाओं को लागू करने के खिलाफ चेतावनी के दो शब्द कहना चाहूंगा। जीवन किसी भी योजना से ज्यादा जटिल होता है। मसलन, यह कल्पना करना गलत

होगा कि संयुक्त मोर्चा सरकार सर्वहारा के अधिनायकत्व की स्थापना की राह की एक अपरिहार्य मंजिल है। यह बात उतनी ही गलत है जितना यह पहले का दावा कि फासिस्ट देशों में कोई मध्यवर्ती मंजिलें नहीं होंगी तथा फासिस्ट तानाशाही का स्थान सर्वहारा अधिनायकत्व द्वारा फौरन ले लिया जाना निश्चित है।

पूरे सवाल का निचोड़ यह निकलता है : क्या सर्वहारा स्वयं निर्णायक क्षण में पूंजीपति वर्ग को सीधे उखाड़ फेंकने और खुद अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए तैयार होगा और क्या उस हालत में वह अपने मित्रों का समर्थन सुनिश्चित करने में समर्थ होगा ? अथवा, क्या किसी विशेष चरण में संयुक्त सर्वहारा मोर्चे और फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे का आन्दोलन पूंजीपति वर्ग की तानाशाही को खत्म करने के लिए सीधे आगे बढ़े बगैर महज फासिज्म को कुचलने या उखाड़ फेंकने की स्थिति में होगा ? दूसरी हालत में महज इसी आधार पर संयुक्त मोर्चे की सरकार का गठन करने और उसे समर्थन देने से इनकार करना, राजनीतिक अदूरदर्शिता का एक अक्षम्य उदाहरण होगा, न कि गंभीर क्रान्तिकारी राजनीति।

इसी तरह यह समझना कठिन नहीं है कि उन देशों में संयुक्त मोर्चा सरकार कायम करना जहां अभी फासिज्म सत्ता में नहीं है, उन देशों में ऐसी सरकार कायम करने से कुछ भिन्न बात है जहां फासिस्ट तानाशाही का प्रभुत्व है। बाद वाले देशों में फासिस्ट हुकूमत को उखाड़ फेंकने की प्रक्रिया में ही संयुक्त मोर्चा सरकार निर्मित हो सकती है। जिन देशों में पूंजीवादी-जनवादी क्रान्ति विकसित हो रही है, जन मोर्चा सरकार मजदूर वर्ग और कृषक वर्ग के जनवादी अधिनायकत्व की सरकार बन सकती है।

जैसा कि मैं अपनी रिपोर्ट में पहले ही लक्षित कर चुका हूं, कम्युनिस्ट किसी संयुक्त मोर्चा सरकार को उस हद तक समर्थन देने का अपनी शक्ति भर प्रयास करेंगे जिस हद तक कि वह जनता के दुश्मनों से वास्तव में लड़ेगी तथा कम्युनिस्ट पार्टी और मजदूर वर्ग को कार्रवाई की स्वतंत्रता मंजूर करेगी। सरकार में कम्युनिस्ट भाग लेंगे या नहीं, इस सवाल का फैसला पूरी तरह उस समय की वास्तविक स्थिति के आधार पर होगा। ऐसे सवाल जैसे-जैसे सामने आयेंगे, उन्हें हल किया जायगा। पहले से ही तैयार नुस्खे नहीं दिये जा सकते हैं।

पूंजीवादी जनवाद के प्रति रुख

कामरेड लेन्स्की ने अपने भाषण में लक्षित किया कि श्रमिक जनों के अधिकारों पर फासिज्म के हमले को नाकाम करने के लिए आम जनता को

लामबंद करते समय पोलिश पार्टी को साथ ही "ठोस जनवादी मांगों को सूत्रित करने में इस बात की आशंकाएं थीं कि इससे कहीं जनता में जनवादी भ्रांतिया न फैल जायें।" बेशक, पोलिश पार्टी ही ऐसी एक पार्टी नहीं, जिसमें ठोस जनवादी मांगों को सूत्रित करने के मामले में किसी न किसी प्रकार की आशंका पायी जाती हो।

यह आशंका कहां से पैदा होती है, साथियो? यह पूंजीवादी जनवाद के प्रति हमारे रुख की हमारी गलत, गैर-द्वंद्वात्मक अवधारणा से पैदा होती है। हम कम्युनिस्ट सोवियत जनवाद के अडिग समर्थक हैं जिसकी महान नजीर है सोवियन संघ का सर्वहारा अधिनायकत्व, जहां ठीक उस समय सोवियतों की सातवीं कांग्रेस के प्रस्ताव द्वारा समान मताधिकार और सीधे तथा गुप्त मतदान की घोषणा कर दी गयी जिस समय कि पूंजीवादी देशों में पूंजीवादी जनवाद के अंतिम अवशेषों का सफाया किया जा रहा है। सोवियत जनवाद में यह पूर्वकल्पित है कि सर्वहारा क्रान्ति विजयी हो, उत्पादन के साधनों के निजी स्वामित्व को सार्वजनिक स्वामित्व में परिवर्तित कर दिया जाय तथा जनता का विशाल बहुमत समाजवाद का पथ अपना ले। यह जनवाद अंतिम रूप नहीं प्रस्तुत करता; जैसे-जैसे समाजवादी निर्माण के क्षेत्र में, वर्गहीन समाज के निर्माण के क्षेत्र में तथा आर्थिक जीवन और जन मानस से पूंजीवाद के अवशेषों को दूर करने के क्षेत्र में अधिकाधिक उपलब्धियां प्राप्त होती हैं, वैसे-वैसे यह जनवाद विकसित होता है और विकसित होता जायगा।

लेकिन आज पूंजीवाद के तहत रहने वाले लाखों मेहनतकशों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि विविध देशों में जिन रूपों से पूंजीपति वर्ग का शासन ढंका हुआ है, उनके प्रति अपना रुख निर्धारित करें। हम अराजकतावादी नहीं हैं, और हम इस मामले पर उदासीन नहीं रह सकते कि किसी देश विशेष में किस प्रकार की राजनीतिक हुकूमत अस्तित्व में है : वहां पूंजीवादी जनवाद के रूप में पूजीवादी तानाशाही है, चाहे उसमें जनवादी अधिकारों और आजादियों मे कितनी ही कांट-छांट क्यों न कर दी गयी हो, अथवा वहां अपने खुले, फासिस्ट रूप में पूंजीवादी तानाशाही मौजूद है? सोवियत-जनवाद के समर्थक होने के साथ-साथ हम वर्षों के कठोर संघर्ष के जरिये मजदूर वर्ग द्वारा छीनी गयी जनवादी उपलब्धियों की एक-एक इंच रक्षा करेंगे तथा इन उपलब्धियों में वृद्धि करने के लिए दृढ़ता के साथ संघर्ष करेंगे।

ब्रिटिश मजदूर वर्ग को हड़ताल करने का अधिकार, अपनी ट्रेड यूनियनों के लिए वैध हैसियत हासिल करने, सभा का अधिकार और प्रेस की स्वतंत्रता प्राप्त करने, मताधिकार और अन्य अधिकारों में वृद्धि करने से पहले कितनी जबर्दस्त कुर्बानियां करनी पड़ी थीं! उन्नीसवीं शताब्दी में फ्रांस में प्राथमिक

अधिकारों तथा शोषकों के खिलाफ संघर्ष के लिए अपनी शक्तियों के संगठन के वैध अवसर की प्राप्ति के लिए लड़ी गयी क्रान्तिकारी लड़ाइयों में कितने दसियों हजार मजदूरों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया ! पूंजीवादी-जनवादी आजादियों को जीतने के लिए सभी देशों के सर्वहारा ने अपना कितना खून बहाया है तथा इन्हें बरकरार रखने के लिए स्वभावतः वह अपनी शक्ति भर लड़ेगा।

पूंजीवादी जनवाद के प्रति हमारा रुख सभी परिस्थितियों में एक जैसा नहीं रहता। मसलन, अक्तूबर क्रान्ति के समय रूसी बोल्शेविकों ने उन सभी राजनीतिक पार्टियों के खिलाफ जीवन-मरण का संघर्ष चलाया जिन्होंने पूंजीवादी जनवाद की रक्षा करने के नारे के तहत सर्वहारा अधिनायकत्व की स्थापना का विरोध किया। बोल्शेविकों ने इन पार्टियों से इसलिए संघर्ष किया क्योंकि उस समय पूंजीवादी जनवाद का झण्डा ऐसा परचम बन गया था, जिसके गिर्द सारी प्रतिक्रान्तिकारी शक्तियां सर्वहारा की विजय को चुनौती देने के लिए गोलबंद हो गयी थीं। इस समय पूंजीवादी देशों में स्थिति सर्वथा भिन्न है। अब फासिस्ट प्रतिक्रान्ति मेहनतकश जनता के शोषण और दमन की बर्बरतम हुकूमत कायम करने के प्रयास में पूंजीवादी जनवाद पर हमला कर रही है। इस समय अनेक पूंजीवादी देशों में श्रमिक जनता के सामने यह आवश्यकता उठ खड़ी हुई है कि वह सर्वहारा तानाशाही और पूंजीवादी जनवाद के बीच नहीं, बल्कि पूंजीवादी जनवाद और फासिज्म के बीच साफ-साफ चुनाव करे, और यह चुनाव आज ही करे।

इसके अलावा, आज हमारे सामने ऐसी परिस्थिति है जो उस स्थिति से भिन्न है, जो, मसलन, पूंजीवाद के स्थिरीकरण के युग में थी। उस समय फासिस्ट खतरा उतना तीव्र नहीं था, जितना आज है। उस समय अनेक देशों में क्रान्तिकारी मजदूरों के सामने पूंजीवादी तानाशाही पूंजीवादी जनवाद के रूप में मौजूद थी और वे अपना प्रहार पूंजीवादी जनवाद पर केन्द्रित कर रहे थे। जर्मनी में उन्होने वाइमर रिपब्लिक (जिसकी घोषणा १९१९ में वाइमर में बुलायी गयी संविधान सभा द्वारा तैयार किये गये संविधान के आधार पर की गयी और जो, १९३३ में हिटलर के सत्ता में आने के बाद ही, भंग हो गयी) के खिलाफ इसलिए संघर्ष नहीं किया क्योंकि वह गणराज्य था, बल्कि इसलिए कि वह ऐसा पूंजीवादी गणराज्य था जो सर्वहारा के क्रान्तिकारी आन्दोलन को, खास तौर पर १९१८-२० और १९२३ में, कुचलने में लगा था।

लेकिन क्या कम्युनिस्ट उस समय भी वही स्थिति बरकरार रख सकते थे जब फासिस्ट आन्दोलन ने सर उठाना शुरू कर दिया, जब, मसलन १९३२ में, जर्मनी में फासिस्ट लोग मजदूर वर्ग के खिलाफ सैकड़ों-हजारों की संख्या में

तूफानी दस्तों को संगठित और हथियारबंद कर रहे थे ? बेशक नहीं। कई देशों में, खास तौर पर जर्मनी में, यह कम्युनिस्टों की गलती थी कि जो तब्दीलियां आ गयी थीं वे उनको ध्यान में न रख सके, बल्कि उन्हीं नारों को दुहराते रहे और उन्हीं कार्यनीतिक स्थितियों से चिपके रहे, जो कुछ साल पहले सही थीं, खास तौर पर तब जब सर्वहारा अधिनायकत्व के लिए संघर्ष एक फौरी सवाल था और जब संपूर्ण जर्मन प्रतिक्रान्ति वाइमर रिपब्लिक के झण्डे के नीचे गोलबंद हो रही थी, जैसाकि उसने १९१८-२० में किया।

और यह स्थिति कि हम आज भी अभी तक अपनी पातों में ठोस जनवादी नारे देने से भय देख सकते हैं, इस बात की सूचक है कि हमारे साथी हमारी कार्यनीति की ऐसी महत्वपूर्ण समस्याओं के प्रति नजरिया तय करने की मार्क्सवादी-लेनिनवादी पद्धति में कितने कम पारंगत हो सके हैं। कुछ साथी कहते हैं कि जनवादी अधिकारों के लिए संघर्ष मजदूरों को सर्वहारा अधिनायकत्व के लिए संघर्ष से भटका देगा। इस प्रश्न पर लेनिन ने जो कहा है उसे याद करना अप्रासंगिक नहीं होगा :

"यह मान लेना एक बुनियादी गलती होगी कि जनवाद के लिए संघर्ष सर्वहारा को समाजवादी क्रान्ति से भटका सकता है, अथवा इसे दृष्टि से ओझल कर सकता, या इस पर आवरण डाल सकता है, आदि। उल्टे, ठीक जैसे समाजवाद तब तक विजयी नहीं हो सकता, जब तक कि वह पूर्ण जनवाद का सूत्रपात न करे, उसी तरह सर्वहारा पूंजीपति वर्ग पर विजय के लिए तैयार हो सकने में तब तक असमर्थ रहेगा, जब तक कि वह जनवाद के लिए कई-तरफा, सुसंगत और क्रान्तिकारी संघर्ष नहीं चलाता।" (समाजवादी क्रान्ति तथा राष्ट्रों का आत्मनिर्णय का अधिकार)

इन शब्दों को हमारे साथियों को अपनी स्मृति में मजबूती-से जमा लेना चाहिए और उन्हें याद रखना चाहिए कि इतिहास में महान क्रान्तियां मजदूर वर्ग के प्राथमिक अधिकारों की रक्षा के लिए छोटे-छोटे आन्दोलनों से पैदा हुई हैं। मगर जनवादी अधिकारों के लिए संघर्ष को समाजवाद के लिए मजदूर वर्ग के संघर्ष से जोड़ सकने के लिए सर्वप्रथम और सर्वोपरि यह आवश्यक है कि पूंजीवादी जनवाद की रक्षा करने के सवाल पर किसी भी ढले-ढलाये दृष्टिकोण को अस्वीकृत कर दिया जाय।

सही लाइन ही काफी नहीं है

साथियो, यह निस्संदेह स्पष्ट है कि कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल और उसके हर हिस्से के लिए बुनियादी चीज है—एक सही लाइन तय करना। मगर वर्ग संघर्ष में ठोस नेतृत्व के लिए मात्र सही लाइन ही काफी नहीं है।

'उसके लिए कई शर्तों का और सबसे बढ़ कर निम्नलिखित शर्तों का पूरा किया जाना जरूरी है :

सर्वप्रथम, इस बात की संगठनात्मक गारंटियों का होना कि स्वीकृत फैसले अमल में लाये जायेंगे तथा रास्ते में आने वाली सभी बाधाओं पर दृढ़ता के साथ विजय प्राप्त की जायेगी। कामरेड स्तालिन ने पार्टी की लाइन को अमल में लाने के लिए जरूरी शर्तों के बारे में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की सत्रहवीं कांग्रेस में जो कुछ कहा था, वही हमारी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत फैसलों पर भी पूरा का पूरा लागू हो सकता है और लागू होना चाहिए।

कामरेड स्तालिन ने कहा था :

"कुछ लोग यह सोचते हैं कि यह सर्वथा पर्याप्त है कि एक सही पार्टी लाइन निर्धारित कर ली जाय, उसे घोषित कर सब को जानकारी में ला दिया जाय, उसे सामान्य प्रस्थापनाओं और प्रस्तावों के रूप में प्रस्तुत कर दिया जाय और उस पर सर्वसम्मत मतदान कर दिया जाय, और विजय स्वयं, अर्थात अपने-आप मिल जायगी। बेशक यह सरासर गलत है। यह एक बड़ी भ्राति है। जो लोग इस तरह सोचते हैं वे बहुत बड़ी गलती पर हैं। सिर्फ लाइलाज नौकरशाह ही इस तरह की दलील दे सकते हैं। पार्टी की आम नीति के पक्ष में सुन्दर प्रस्ताव और घोषणाएं तो शुरूआत भर हैं क्योंकि वे विजय की कामना मात्र की सूचक है, न कि स्वयं विजय की सूचक। सही नीति की रूपरेखा तैयार कर ली जाने और सही हल निर्दिष्ट कर दिये जाने के बाद सफलता संगठनात्मक कार्य पर, पार्टी लाइन के कार्यान्वियन के लिए संघर्ष के संगठन पर, कार्यकर्ताओं के सही चुनाव पर और अग्रणी निकायों द्वारा फैसलों के कार्यान्वियन के नियंत्रण पर निर्भर करती है। अगर ये बातें नहीं होतीं तो सही पार्टी लाइन और सही फैसलों को गंभीर क्षति पहुंच सकने का भारी खतरा रहता है। यही नहीं, सही नीति निर्धारित कर ली जाने के बाद स्वयं राजनीतिक लाइन—कार्यान्वियन या उसकी असफलता—समेत सब कुछ संगठनात्मक कार्य पर निर्भर करता है।"

कामरेड स्तालिन के इन शब्दों में और कुछ जोड़ने की मुश्किल से ही कोई आवश्यकता होगी, जिन्हें कि हमारी पार्टी के सारे कार्य में मार्गदर्शक सिद्धान्त बन जाना चाहिए।

एक और शर्त है—कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल और इसके हिस्सों के फैसलों को स्वयं व्यापकतम जन समुदाय के फैसलों में बदलना। यह अब और भी ज्यादा जरूरी है जब हमारे सामने सर्वहारा का एक संयुक्त मोर्चा संगठित करने तथा फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे में अत्यन्त व्यापक जन समुदाय को

खींच लाने का दायित्व पेश है। लेनिन ने जनता को स्वयं उसके अनुभव के जरिये पार्टी की सही लाइन और नारों को समझाने में जो परम कुशलता दिखायी, उसमें उनकी राजनीतिक और कार्यनीतिक प्रतिभा सबसे स्पष्ट और विशद रूप में सामने आती है। अगर हम क्रान्तिकारी मजदूरों के आन्दोलन की राजनीतिक रणनीति और कार्यनीति के महानतम भंडार, बोल्शेविज्म के इतिहास, पर नजर डालें तो हम देखेंगे कि बोल्शेविक जनता के नेतृत्व के तरीकों के स्थान पर पार्टी के नेतृत्व के तरीकों को कभी नहीं प्रतिष्ठित करते थे।

कामरेड स्तालिन ने लक्षित किया था कि अक्तूबर क्रान्ति के ठीक पहले रूसी बोल्शेविकों की कार्यनीति का एक खास पहलू इस बात में निहित था कि वे जनता को स्वाभाविक ढंग से पार्टी के नारों और "क्रान्ति की देहरी" तक पहुंचाने वाले रास्तों और मोड़ों को खोजने में सफल रहे और जनता को स्वयं अपने अनुभव से इन नारों की सत्यता का अहसास करने, जांच करने और उन्हें पहचानने में मदद पहुंचाते रहे; कि उन्होंने पार्टी के नेतृत्व और जनता के नेतृत्व में कभी घालमेल नहीं किया, बल्कि दोनों के बीच अन्तर को साफ-साफ देखा, और इस तरह कार्यनीति को न महज पार्टी नेतृत्व बल्कि लाखों मेहनतकशों के नेतृत्व के विज्ञान के रूप में निरूपित किया।

साथ ही, यह याद रखना चाहिए कि **जनता तब तक हमारे फैसलों को आत्मसात नहीं कर सकती जब तक कि हम ऐसी भाषा न बोलना सीखें जिसे वह समझती है।** हमें सदा यह नहीं मालूम रहता कि कैसे सरल और ठोस शैली में, जनता के सुपरिचित और उसकी समझ में आने वाले बिंबों के माध्यम से बात कही जाय। हम अभी भी उन अमूर्त फार्मूलों से बचने में सफल नहीं होते, जिन्हें हमने कंठस्थ कर लिया है। दरअसल अगर आप अपने परचों, अखबारों, प्रस्तावों और प्रस्थापनाओं पर नजर दौड़ायें, तो आप देखेंगे कि वे अक्सर ऐसी कठिन भाषा और शैली में लिखी गयी हैं कि साधारण मजदूरों की बात तो दूर रही, हमारे पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए भी उन्हें समझ सकना मुश्किल होता है।

साथियो, अगर हम मन में इस बात को विचारें कि खास तौर पर फासिस्ट देशों में जो मजदूर इन परचों को बांटते या महज पढ़ते हैं, वे ऐसा करके अपनी जान तक जोखिम में डालते हैं, तो हमें जनता के लिए ऐसी भाषा में लिखने की आवश्यकता का और भी स्पष्ट अहसास होगा जिसे वह समझती है, ताकि उसकी कुर्बानियां व्यर्थ न जायें।

हमारे जबानी आन्दोलन और प्रचार के साथ यही बात लागू होती है। हमें पूरी ईमानदारी से यह बात स्वीकार करनी चाहिए कि इस मामले में

फासिस्ट लोग अक्सर हमारे बहुत से साथियों से ज्यादा चतुर और नमनीय सिद्ध हुए हैं।

मसलन मुझे हिटलर के सत्ता में आने से पहले बर्लिन में हुई बेरोजगारों की एक सभा की याद आ रही है। उन दिनों कुख्यात जालसाज और मुनाफाखोर स्क्लारेक बंधुओं पर मुकदमा चल रहा था, जो कई महीने घिसटता रहा। सभा को संबोधित करते हुए एक राष्ट्रीय-समाजवादी वक्ता ने अपना लक्ष्य सिद्ध करने के लिए उस मुकदमे का लफ्फाजी से भरा इस्तेमाल किया। उसने उन जालसाजों का, स्क्लारेक बंधुओं की रिश्वतखोरी और दूसरे जुर्मों का जिक्र किया और इस बात पर जोर दिया कि यह मुकदमा महीनों से घिसटता चला आ रहा है। उसने इस बात के आंकड़े पेश किये कि इस पर अब तक जर्मन जनता की जेबों से बटोरे गये कितने लाख मार्क खर्च हो चुके हैं। जोरशोर की हर्षध्वनि के बीच वक्ता ने ऐलान किया कि स्क्लारेक जैसे दस्युओं को बिना किसी हाय-तोबा के गोली से उड़ा दिया जाना चाहिए था और मुकदमे पर बर्बाद किये गये धन को बेरोजगारों पर खर्च किया जाना चाहिए था।

एक कम्युनिस्ट उठा और उसने भाषण की अनुमति मांगी। अध्यक्ष ने पहले तो इनकार कर दिया, मगर श्रोताओं का दबाव पड़ने पर जो एक कम्युनिस्ट की बातें सुनना चाहते थे, उसने उसे बोलने दिया। जब कम्युनिस्ट मंच पर आया तो हर व्यक्ति बड़ी उत्सुकता से इस बात का इंतजार कर रहा था कि देखें कम्युनिस्ट वक्ता क्या कहता है। और, उसने क्या कहा ?

"साथियो," उसने ऊंची और खनकती आवाज में कहना शुरू किया, "कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल का पूर्णाधिवेशन अभी-अभी समाप्त हुआ है। इसने मजदूर वर्ग की मुक्ति की राह दिखायी है। साथियो, इसने आपके सामने 'मजदूर वर्ग का बहुमत जीतने' का मुख्य कर्तव्य पेश किया है।...पूर्णाधिवेशन ने बताया है कि बेरोजगारों के आन्दोलन का 'राजनीतिकीकरण' किया जाना चाहिए। पूर्णाधिवेशन हमारा आह्वान करता है कि इसे उच्चतर स्तर पर उठाया जाना चाहिए।...पूर्णाधिवेशन अपील करता है कि इस आन्दोलन को उच्चतर स्तर पर उठाया जाना चाहिए।"

वह इसी स्वर में बोलता रहा—जाहिर है इस गलतफहमी में कि वह पूर्णाधिवेशन के प्रामाणिक फैसलों की "व्याख्या" कर रहा है।

क्या इस तरह का भाषण बेरोजगारों के मन को छू सकता था ? क्या उन्हें इस बात से कोई संतोष मिल सकता था कि हम पहले उनका राजनीतिकीकरण, फिर क्रान्तिकारीकरण और अन्त में लामबंदीकरण करना चाहते हैं ताकि उनके आन्दोलन को उच्चतर स्तर पर उठाया जा सके ?

कक्ष के एक कोने में बैठा हुआ मैं बड़ी कुढ़न के साथ देख रहा था कि किस तरह से बेरोजगार, जो एक कम्युनिस्ट से ठोस रूप में जानना चाहते थे कि उन्हें क्या कुछ करना चाहिए, जमहाइयां लेने लगे और निराशा के अचूक लक्षण व्यक्त करने लगे। और उस समय मुझे कतई कोई अचरज नहीं हुआ जब आखीर में अध्यक्ष ने रुखाई के साथ हमारे वक्ता के भाषण को बीच में ही रोक दिया और सभा की ओर से एक भी व्यक्ति ने विरोध नहीं किया।

बदकिस्मती से हमारे आन्दोलन-प्रचार संबंधी कार्य में यह अपनी तरह की एकमात्र घटना नहीं है। न ही इस तरह की घटनाएं जर्मनी तक सीमित हैं। इस तरह से आन्दोलन करने का अर्थ है खुद अपने ध्येय के खिलाफ आन्दोलन करना। समय आ गया है कि कम से कम आन्दोलन के इस तरह के सारे बचकाने तरीकों को खत्म कर दिया जाय।

मेरी रिपोर्ट के दौरान अध्यक्ष कामरेड कुसिनेने को कांग्रेस में शरीक एक सदस्य का मेरे नाम लिखा गया एक अपने ढंग का पत्र मिला। मैं इसे आपको पढ़ कर सुना दूं :

"कांग्रेस में अपने भाषण में आप कृपया निम्नलिखित सवाल को उठायें और वह यह कि कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल द्वारा भविष्य में स्वीकृत सारे प्रस्ताव और फैसले इस प्रकार लिखे जायें कि न सिर्फ प्रशिक्षित कम्युनिस्ट उनका अर्थ समझ सकें, बल्कि कॉमिन्टर्न की सामग्री को पढ़ने वाला कोई भी मेहनतकश बिना आरम्भिक प्रशिक्षण के फौरन यह देख सके कि कम्युनिस्ट क्या चाहते है तथा कम्युनिज्म मानवजाति की सेवा किस तरह करता है। कुछ पार्टी नेता यह बात भूल जाते हैं। उन्हें यह बात फिर से याद दिलायी जानी चाहिए और वह भी बहुत ही जोरदार ढंग से। यह बात भी याद दिलायी जानी चाहिए कि कम्युनिज्म के लिए आन्दोलन-प्रचार का काम समझ में आने काबिल भाषा में चलाया जाना चाहिए।"

मुझे ठीक-ठीक नही पता कि यह पत्र किसने लिखा है, मगर मुझे इस बात मे कोई संदेह नहीं कि इस साथी ने अपने पत्र में लाखों मजदूरों की राय और इच्छा व्यक्त की है। हमारे बहुत से साथी यह सोचते हैं कि वे जितने ज्यादा भारी-भरकम शब्दों और जितने ही ज्यादा फार्मूलों का इस्तेमाल करेंगे, जो अक्सर जनता की समझ में न आने वालों हों, उनका आन्दोलन और प्रचार उतना ही अच्छा होगा। वे यह भूल जाते हैं कि हमारे युग के मजदूर वर्ग के महानतम नेता और सिद्धान्तकार, लेनिन, सदा ऐसी अत्यन्त लोकप्रिय भाषा में बोलते और लिखते रहे जो फौरन जनता की समझ में आ जाय।

हममें से हर एक को इसे एक नियम, एक बोल्शेविक नियम, एक प्राथमिक नियम बना लेना चाहिए :

लिखते या बोलते समय उस आम मद्गजर को हमेशा ध्यान में रखिए जिसके

लिए जरूरी है कि वह आपको समझ सके, आपकी अपील में विश्वास कर सके और आपका अनुसरण करने के लिए तैयार रहे। आपको उन्हें अवश्य ध्यान में रखना चाहिए जिनके लिए आप लिखते हैं, जिनसे बात करते हैं।

कार्यकर्ता

साथियो, हमारे अच्छे से अच्छे प्रस्ताव कागज के टुकड़े मात्र रह जायेंगे अगर उन्हें अमल में उतारने वाले कार्यकर्ता हमारे पास न हों। मगर मुझे कहना पड़ेगा कि बदकिस्मती से कार्यकर्ताओं के सवाल पर, जो कि हमारे सामने पेश सबसे महत्वपूर्ण सवालों में से एक है, इस कांग्रेस में लगभग बिलकुल ध्यान नहीं दिया गया है।

कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की कार्यकारिणी की रिपोर्ट पर सात दिनों तक बहस हुई, विभिन्न देशों के अनेक वक्ता बोले, मगर कुछेक ने ही और वह भी चलते-चलते, कम्युनिस्ट पार्टियों और मजदूर आन्दोलन के लिए इस अत्यधिक महत्वपूर्ण सवाल पर चर्चा की। अपने अमली कार्य में हमारी पार्टियां अधिकतर इस बात को नहीं समझ सकी हैं कि सब कुछ जनता पर, कार्यकर्ताओं पर, निर्भर है।

चूंकि संघर्ष में हम लगातार अपने कुछ सबसे मूल्यवान कार्यकर्ताओं को खोते जा रहे है, इसलिए कार्यकर्ताओं की समस्या के प्रति उपेक्षा का रुख और भी अक्षम्य है। हम विद्वानों की एक सभा नहीं बल्कि एक ऐसा जुझारू आन्दोलन हैं जो लगातार गोलीबारी झेलने वाली पंक्ति में रहता है। हमारे सबसे कर्मठ, सबसे साहसी और सबसे ज्यादा वर्ग चेतन तत्व अगली कतारों में हैं। खास तौर पर फासिस्ट देशों में, दुश्मन इन्हीं अगली पांतों के लोगों को जा पकड़ता है, उनकी हत्या कर देता है, उन्हें जेलों और यातना शिविरों में डाल देता है तथा दारुण यातनाओं का शिकार बनाता है। इससे उनके अभाव की पूर्ति के लिए पांतों में लगातार नये कार्यकर्ताओं की भर्ती करना, नये कार्यकर्ताओं को तैयार और प्रशिक्षित करना तथा मौजूदा कार्यकर्ताओं को सावधानी से सुरक्षित रखना अत्यधिक आवश्यक है।

हमारे प्रभाव के कारण जन संयुक्त मोर्चा आन्दोलन में तेजी आती जा रही है और मजदूर वर्ग से हजारों नये जुझारू कार्यकर्ता आगे आ रहे हैं और यह कार्यकर्ताओं के प्रश्न के खास तौर पर महत्वपूर्ण होने का एक अतिरिक्त कारण है। साथ ही हमारी पांतों में मात्र नौजवान क्रान्तिकारी तत्व ही नहीं, ऐसे मजदूर ही नहीं आ रहे हैं जो अभी-अभी क्रान्तिकारी बन रहे हैं और जिन्होंने कभी किसी राजनीतिक आन्दोलन में भाग नहीं लिया है। अक्सर ही सामाजिक-जनवादी पार्टियों के पुराने सदस्य और सक्रिय कार्यकर्ता भी हमारी

पांतों में आते हैं। खास तौर पर गैर-कानूनी कम्युनिस्ट पार्टियों में नये कार्यकर्ताओं पर विशेष ध्यान देना जरूरी है—इसलिए और भी कि बहुत ही कम राजनीतिक प्रशिक्षण के नाते इन कार्यकर्ताओं को अपने व्यावहारिक कार्य में अक्सर गंभीर राजनीतिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिन्हें उनको स्वयं हल करना होता है।

यह समस्या कि कार्यकर्ताओं के मामले में सही नीति क्या होनी चाहिए, हमारी पार्टियों के लिए और युवा कम्युनिस्ट लीग तथा अन्य सारे जन संगठनों के लिए—संपूर्ण क्रान्तिकारी मजदूर आन्दोलन के लिए—एक अत्यन्त गंभीर समस्या है।

कार्यकर्ताओं के मामले में सही नीति का मतलब क्या है?

पहले तो अपने लोगों को जानना। यह मानो एक नियम-सा है कि हमारी पार्टियों में कार्यकर्ताओं का व्यवस्थित अध्ययन नहीं किया जाता। बहुत हाल में ही, फ्रांस और पोलैंड की कम्युनिस्ट पार्टियों ने, और पूर्व में चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने इस दिशा में कुछ सफलताएं प्राप्त की हैं। जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी ने भी अपने भूमिगत काल से पहले अपने कार्यकर्ताओं का अध्ययन शुरू किया था। इन पार्टियों के अनुभव से पता चला है कि जैसे ही उन्होंने अपने लोगों का अध्ययन शुरू किया, ऐसे पार्टी कार्यकर्ता खोज निकाले गये जोकि पहले अनदेखे पड़े थे। दूसरी ओर, पार्टियों ने उन विजातीय तत्वों को निकालना शुरू कर दिया जो विचारधारात्मक और राजनीतिक दृष्टि से नुकसानदेह थे। फ्रांस के सेलोर और बार्बे की मिसाल की ओर इशारा कर देना काफी है जिन्हें सूक्ष्मदर्शी यंत्र के सामने रखा गया तो वे वर्ग शत्रु के दलाल सिद्ध हुए और पार्टी से निकाल बाहर किये गये। पोलैंड और हंगेरी में कार्यकर्ताओं की जांच से उन उकसाने वालों, दुश्मन के दलालों के अड्डों को खोज निकालना आसान हो गया जिन्होंने अपनी शिनाख्त को बहुत ही जतन से छिपा रखा था।

दूसरे, कार्यकर्ताओं की उचित पदोन्नति। पदोन्नति को आकस्मिक किस्म की चीज नहीं बल्कि पार्टी के सामान्य कार्यों में से एक होना चाहिए। इस बात पर ध्यान दिये बगैर कि जिस कम्युनिस्ट की पदोन्नति की जा रही है उसका जनता से संपर्क है या नहीं, एकांततः संकुचित पार्टी संबंधी विचारों के आधार पर तरक्की देना बुरा है। विभिन्न पार्टी कार्यकर्ताओं को विशेष कार्यों को कर सकने की योग्यता तथा जनता के बीच उनकी लोकप्रियता के आधार पर तरक्की दी जानी चाहिए। हमारी पार्टियों में ऐसी पदोन्नति की मिसालें मौजूद हैं जिनसे अति उत्तम नतीजे सामने आये हैं। मिसाल के लिए, हमारे बीच एक स्पेनी महिला कम्युनिस्ट, इस कांग्रेस के अध्यक्ष-मंडल में

बैठी हुई कामरेड डोलोरेस हैं। दो वर्ष पहले तक वह एक आम पार्टी कार्यकर्ता थीं। मगर वर्ग शत्रु के साथ शुरू-शुरू की टक्करों में ही वह एक उत्कृष्ट आन्दोलनकर्ता और योद्धा सिद्ध हुईं। बाद में उन्हें तरक्की देकर पार्टी के नेतृत्वकारी निकाय में लाया गया और उन्होंने स्वयं को उस निकाय का एक सबसे सुयोग्य सदस्य सिद्ध किया है।

मैं कई देशों से इसी तरह के अनेक उदाहरण दे सकता हूं, मगर अधिकांश मामलों में तरक्कियां असंगठित और बेतरतीब ढंग से की जाती हैं और इस कारण वे सदा दुरुस्त नहीं होतीं। कभी-कभी उन उपदेश देने वालों, लच्छेदार बातें करने वालों और गपोड़ों को नेतृत्व के पदों पर तरक्की दे दी जाती है, जो वस्तुतः ध्येय को क्षति पहुंचाते हैं।

तीसरे, **लोगों का अच्छा से अच्छा उपयोग करने की योग्यता।** हमें हर एक सक्रिय सदस्य के बहुमूल्य गुणों का पता करने और उनको उपयोग में लाने में समर्थ होना चाहिए। आदर्श लोग नहीं हुआ करते; वे जैसे हैं, हमें उनको वैसा ही ग्रहण करना चाहिए और उनकी कमजोरियों और खामियों को सुधारना चाहिए। हमें अपनी पार्टियों में उन अच्छे, ईमानदार कम्युनिस्टों के गलत उपयोग के ज्वलंत उदाहरण मालूम हैं जिन्हें अगर ऐसा काम दिया गया होता जिसे करने में वे ज्यादा सक्षम थे, तो वे अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए होते।

चौथे, **कार्यकर्ताओं का उचित वितरण।** सबसे पहले तो हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आन्दोलन की मुख्य कड़ियां ऐसे समर्थ लोगों के हाथों में हों जिनका जनसाधारण से संपर्क हो, जो नीचे के आम लोगों के बीच से आये हों, जिनके पास पहल हो और जो कट्टर हों। अपेक्षाकृत अधिक महत्व के जिलों में उचित संख्या में ऐसे सक्रिय कार्यकर्ता होने चाहिए। पूंजीवादी देशों में कार्यकर्ताओं को एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थानांतरित करना आसान काम नहीं है। ऐसे काम में अनेक रुकावटें और मुश्किलें सामने आती हैं जिनमें धनाभाव, पारिवारिक मसले आदि भी शामिल हैं। ये ऐसी कठिनाइयां हैं जिन्हें ध्यान में रखा जाना चाहिए और उचित रूप से दूर किया जाना चाहिए। मगर आम तौर पर हम यह सब करने की सर्वथा उपेक्षा करते हैं।

पांचवें, **कार्यकर्ताओं को व्यवस्थित ढंग से सहायता देना।** इस सहायता में ब्योरेवार निर्देश, दोस्ताना जांच-पड़ताल, खामियों और गलतियों का सुधार तथा कार्यकर्ताओं का ठोस दिन-प्रति-दिन पथ-प्रदर्शन शामिल है।

छठे, **कार्यकर्ताओं को बनाये रखने के लिए देखरेख।** जब कभी परिस्थिति का तकाजा हो, हमें पार्टी कार्यकर्ताओं को फौरन पिछवाड़े वापस खींच लेना और उनके स्थान पर दूसरे कार्यकर्ताओं को तैनात करना सीखना चाहिए।

हमें यह मांग करनी चाहिए कि खास तौर पर उन देशों में जहां पार्टियां गैर-कानूनी हैं, पार्टी नेता कार्यकर्ताओं की सुरक्षा की सर्वोच्च जिम्मेदारी अपने ऊपर लें। कार्यकर्ताओं की उचित सुरक्षा के लिए यह भी पूर्वकल्पित है कि पार्टी के भीतर गोपनीयता की अत्यन्त कुशल व्यवस्था हो। हमारी कुछ पार्टियों में हमारे साथी यह सोचते हैं कि पार्टियां अवैधता की अवस्था के लिए अभी ही तैयार हो चुकी हैं, गोकि उन्होंने सिर्फ रस्मी तौर पर, बने-बनाये नियमों के अनुसार ही, अपना पुनर्गठन किया है। दुश्मन की सीधी करारी चोटों के नीचे पार्टी के भूमिगत हो जाने के बाद ही पुनर्गठन का वास्तविक कार्य शुरू करने के लिए हमें बहुत मंहगी कीमत चुकानी पड़ी थी। भूमिगत हालात में जाने के समय जर्मनी की कम्युनिस्ट पार्टी को जो भारी क्षतियां उठानी पड़ी, उन्हें याद कीजिए। उसका अनुभव हमारी उन पार्टियों के लिए एक गंभीर चेतावनी बन जाना चाहिए, जो आज अभी वैध हैं मगर कल अपनी कानूनी हैसियत से हाथ धो सकती हैं।

कार्यकर्ताओं के प्रति सही नीति से ही हमारी पार्टियां सारी सुलभ शक्तियों को अधिक से अधिक विकसित कर सकेंगी और उपयोग में ला सकेंगी, तथा जन आन्दोलन के विशाल भंडार से लगातार नये और बेहतर सक्रिय कार्यकर्ताओं की ताजा कुमक प्राप्त कर सकेंगी।

कार्यकर्ताओं के चयन में हमारी मुख्य कसौटी क्या होनी चाहिए?

सबसे पहले, मजदूर वर्ग के ध्येय के प्रति पूर्ण निष्ठा, पार्टी के प्रति निष्ठा, जिसकी परख वर्ग शत्रु के मुकाबले में—संग्राम में, जेल में, अदालत में—हो चुकी हो।

दूसरे, जनता के साथ यथासम्भव घनिष्ठतम संपर्क। संबद्ध साथियों को जनता के हितों में पूरी तरह सराबोर होना चाहिए, जनता के जीवन की नब्ज को महसूस करना चाहिए, उनकी भावनाओं और आवश्यकताओं को जानना चाहिए। हमारे पार्टी संगठनों के नेताओं की प्रतिष्ठा का आधार सबसे पहले इस तथ्य पर टिका होना चाहिए कि जन साधारण उन्हें अपना नेता मानें तथा स्वयं अपने अनुभव से एक नेता के रूप में उनकी योग्यता के प्रति, और संघर्ष में उनके दृढ़ निश्चय और आत्मोत्सर्ग के प्रति, आश्वस्त हों।

तीसरे, सामने मौजूद परिस्थिति में अपनी सूझबूझ को स्वतंत्र रूप में दुरुस्त रखने की क्षमता तथा फैसले लेने में जिम्मेदारी उठाने से न डरने की क्षमता। जो जिम्मेदारी लेने से डरता है, वह नेता नहीं है। जो पहल करने में असमर्थ है, जो यह कहता है कि "मैं सिर्फ वही करूंगा जो मुझसे कहा जायेगा," वह बोल्शेविक नहीं है। सिर्फ वही सच्चा बोल्शेविक नेता है जो पराजय के क्षणों में विवेक नहीं खो देता, जो सफलता के क्षणों में फूल कर

कुप्पा नही हो जाता, जो फैसलों को अमल में लाने में अदम्य दृढ़ता दिखाता है।. कार्यकर्ता सबसे अच्छे ढंग से उस समय विकसित होते और बढ़ते हैं जब वे ऐसी स्थिति में रखे जाते है. जहां उन्हें स्वतंत्र रूप से संघर्ष की ठोस समस्याओं को हल करना पड़े, तथा वे इस बात के प्रति जागरूक हों कि अपने फैसलों के लिए वे पूरी तरह उत्तरदायी हैं।

.चौथे, वर्ग शत्रु के खिलाफ संघर्ष में तथा बोल्शेविक लाइन से हर भटकाव का निर्मम विरोध करने में अनुशासन और बोल्शेविक दृढ़ता।

..कार्यकर्ताओं के सही चुनाव का निर्धारण करने वाली इन शर्तों पर हमें इस,कारण और भी जोर देना चाहिए कि व्यवहार में अक्सर ही ऐसे साथी को तरजीह दी जाती है जो, मसलन, अच्छी तरह लिख सकता हो और अच्छा वक्ता हो, मगर सक्रिय और कर्मठ स्त्री या पुरुष नही हो, और जो संघर्ष के लिए उतना उपयुक्त नहीं जितना वह दूसरा साथी, जो शायद अच्छी तरह लिखने या भाषण देने में कुशल न हो, लेकिन निष्ठावान साथी हो, उसमें पहल और जनता से संपर्क मौजूद हो, और वह संग्राम में उतरने और दूसरों का संग्राम मे नेतृत्व करने मे सक्षम हो। क्या इस तरह के बहुत से उदाहरण नहीं रहे हैं जिनमें संकीर्णतावादियों, मतवादियों और उपदेश झाड़ने वालों ने मजमा लगा कर वफादार जन कार्यकर्ताओं, मजदूर वर्ग के सभी नेताओं को बाहर कर दिया ?

. हमारे अग्रणी कार्यकर्ताओं को चाहिए कि उन्हें जो करना है उसकी जानकारी का बोल्शेविक जीवट, क्रान्तिकारी चारित्रिक बल तथा उसे संपन्न करने की इच्छा-शक्ति के साथ समन्वय करें।

.. साथियो, 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' नामक संगठन पर मजदूर आन्दोलन के कार्यकर्ताओं के मामले में जो अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की जिम्मेदारी है, कार्यकर्ताओं के सवाल के संदर्भ में मुझे उस पर भी प्रकाश डालने की अनुमति दीजिए। हमारे कैदियों और उनके परिवारों को, राजनीतिक प्रवासियों को, ताड़ना के शिकार क्रान्तिकारियों और फासिस्ट विरोधियों को 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' के संगठनों द्वारा दी गयी भौतिक और नैतिक सहायता से अनेक देशों में मजदूर वर्ग के हजारों सबसे बहुमूल्य योद्धाओं की जिंदगियों की रक्षा हुई और उनकी शक्ति और जुझारू-क्षमता सुरक्षित रह सकी। हममें से जो जेल में रहे हैं, उन्होंने अपने प्रत्यक्ष अनुभव से जाना है कि 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' के कार्यकलाप का कितना अपार महत्व है।

..'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' ने अपने कार्यकलाप से लाखों मजदूरों का तथा किसानों और बुद्धिजीवियों के बीच के क्रान्तिकारी तत्वों का स्नेह, अनुराग और गहरा आभार प्राप्त किया है।

मौजूदा परिस्थितियों में जबकि पूंजीवादी प्रतिक्रियावाद बढ़ रहा है, जबकि फासिज्म जोर पकड़ता जा रहा है और वर्ग संघर्ष अधिक उग्र होता जा रहा है, 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' की भूमिका अत्यधिक बढ़ती जा रही है। 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' के सामने अब दायित्व यह है कि वह सारे पूंजीवादी देशों में (खास तौर पर फासिस्ट देशों में जहां इसे वहां की विशेष परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को ढाल लेना चाहिए) मेहनतकशों का एक सच्चा सामूहिक संगठन बन जाय। कहा जाय तो इसे सर्वहारा के संयुक्त मोर्चे और फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे का एक प्रकार का "रेड क्रास" बन जाना चाहिए, जो अपनी परिधि में लाखों मेहनतकशों को समेट ले—फासिज्म के खिलाफ संघर्षरत, शांति और समाजवाद के लिए संघर्षरत मेहनतकश वर्गों की सेना का "रेड क्रास"। अगर 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' को अपनी भूमिका सफलतापूर्वक निभानी है, तो इसे स्वयं अपने हजारों सक्रिय जुझारू कार्यकर्ताओं को, स्वयं अपने 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' कार्यकर्ताओं की वाहिनी को, प्रशिक्षित करना चाहिए जिनका चरित्र और क्षमता इस अत्यन्त महत्वपूर्ण संगठन के विशेष उद्देश्यों को पूरा कर सकें।

और यहां मुझे यथासम्भव अधिक से अधिक दो-टूक और स्पष्ट रूप में यह कह देना चाहिए कि जहां आम तौर पर मजदूर आन्दोलन में जनता के प्रति नौकरशाही दृष्टिकोण और बेजान रुख हानिकर है, वहीं 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' के कार्यकलाप के क्षेत्र में ऐसा रुख लगभग मुजरिमाना दोष है। यंत्रणा कक्षों और यातना शिविरों में क्लेश पा रहे मजदूर वर्ग के योद्धाओं तथा प्रतिक्रिया और फासिज्म के शिकार हुए लोगों, राजीतिक प्रवासियों और उनके परिवारों—सभी को 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' के संगठनों और कार्यकर्ताओं की ओर से अधिक से अधिक सहानुभूतिपूर्ण देखभाल और चिंतातुरता मिलनी चाहिए। 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' को खास तौर पर मजदूर आन्दोलन के कार्यकर्ताओं को शारीरिक और नैतिक दृष्टि से सुरक्षित रखने में सर्वहारा और फासिस्ट-विरोधी आन्दोलन के योद्धाओं को सहायता देने का अपना कर्तव्य और अच्छी तरह समझना और पूरा करना चाहिए। 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' के संगठनों में सक्रिय कम्युनिस्ट और क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं को 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सुरक्षा' की भूमिका और दायित्वों को सफलता के साथ पूरा करने में मजदूर वर्ग और कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के समक्ष अपनी अपार जिम्मेदारियों को हर कदम पर अनुभव करना चाहिए।

साथियो, जैसा कि आप जानते हैं, कार्यकर्ताओं को सबसे अच्छा प्रशिक्षण संघर्ष के दौरान, मुश्किलों पर विजय पाने और अग्नि-परीक्षाएं झेलने में तथा साथ ही आचरण के अनुकूल और प्रतिकूल उदाहरणों से मिलता है।

हमारे पास हड़तालों के दिनों में, प्रदर्शनों के समय, जेल में, अदालत में, शानदार आचरण के सैकड़ों उदाहरण हैं। हमारे पास वीरता की हजारों मिसालें हैं, मगर बदकिस्मती से भीरुता, दृढ़ता की कमी और भगेड़ूपन तक के उदाहरण कम नहीं हैं। हम अक्सर अच्छे और बुरे दोनों तरह के इन उदाहरणों को भूल जाते हैं। हम कार्यकर्ताओं को इन उदाहरणों से लाभान्वित होना नहीं सिखाते। हम उन्हें यह नहीं दिखाते कि किसका अनुकरण किया जाना चाहिए और किसे ठुकराया जाना चाहिए। हमें वर्ग टक्करों के दौरान, पुलिस की पूछताछ के दौरान, जेलों और यातना शिविरों में, अदालत आदि में अपने साथियों और जुझारू मजदूरों के आचरण का अध्ययन करना चाहिए। अच्छे उदाहरणों को प्रकाश में लाया जाना चाहिए। उन्हें अनुकरणीय आदर्शों के रूप में पेश किया जाना चाहिए, तथा जो कुछ सड़ा-गला, गैर-बोल्शेविक और निकृष्ट है उसे अलग कर दिया जाना चाहिए। राइखस्टाग अग्निकांड मुकदमे के बाद से हमारे पास ऐसे कई साथी हैं, पूंजीवादी और फासिस्ट आन्दोलनों के सामने जिनके बयानों से यह पता चलता है कि अनगिनत साथी इस बात की बहुत अच्छी समझदारी के साथ विकसित हो रहे हैं कि अदालत में बोल्शेविक आचरण वस्तुतः क्या होता है।

लेकिन आप में से, कांग्रेस के प्रतिनिधियों में से, कितने लोग रूमानिया में रेलवेमैनों पर चलाये गये मुकदमे के बारे में विस्तार-से जानते हैं, फिएट शुल्ज पर चलाये गये मुकदमे के बारे में जानते हैं, बाद में जर्मनी में फासिस्टों ने जिनका सिर उड़ा दिया था, हमारे वीर जापानी साथी इसिकावा पर चलाये गये मुकदमे, हमारे बुलगारिया के क्रांतिकारी सैनिकों पर चलाये गये मुकदमे, और दूसरे अनेक मुकदमों के बारे में जानते हैं जिनमें सर्वहारा वीरता की अद्भुत मिसालें सामने आयीं?

सर्वहारा वीरता के ऐसे बहुमूल्य उदाहरणों को लोकप्रिय बनाया जाना चाहिए, उन्हें हमारी पांतों में और मजदूर वर्ग की पांतों में जो भी भीरुता, निकृष्टता तथा हर प्रकार के सड़े-गलेपन और दुर्बलता के उदाहरण मिलें, उनके विरोध में रखा जाना चाहिए। मजदूर आन्दोलन के कार्यकर्ताओं को शिक्षित करने में उदाहरणों का अधिक से अधिक व्यापक रूप मे इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

साथियो, हमारे पार्टी नेता अक्सर यह शिकायत करते हैं कि लोग नहीं हैं, कि उनके आन्दोलन और प्रचार कार्य के लिए, अखबारों के लिए, ट्रेड यूनियनों के लिए, नौजवानों के बीच, महिलाओं के बीच काम करने के लिए कार्यकर्ताओं की कमी है। कार्यकर्ता काफी नहीं हैं, काफी नहीं हैं—यही गुहार है। हमारे

पास आदमी नहीं हैं। इसके जवाब में हम लेनिन के पुराने मगर शाश्वत रूप से नूतन शब्दों को उद्धृत कर सकते हैं :

"आदमी नहीं हैं—फिर भी बेशुमार आदमी हैं। अपार संख्या में लोग हैं, क्योंकि मजदूर वर्ग तथा समाज के अधिकाधिक विविधतापूर्ण तबके अपनी पांतों से वर्ष-प्रति-वर्ष अधिकाधिक संख्या में ऐसे असंतुष्ट लोगों को जन्म देते हैं जो नाराजगी का इजहार करना चाहते हैं... जो उस निरंकुशता के खिलाफ संघर्ष में अपने भरसक पूरी सहायता देने को तत्पर हैं जिसकी असहनीयता को अभी सभी नहीं जानते, फिर भी अधिकाधिक जन समुदाय को उत्तरोत्तर ज्यादा प्रखर रूप में जिसका अहसास होता जा रहा है। इसके साथ ही साथ हमारे पास लोग नही हैं, क्योंकि हमारे पास नेता नहीं हैं, राजनीतिक नेता नही हैं, हमारे पास ऐसे प्रतिभावान संगठनकर्ता नहीं हैं जो इस प्रकार का व्यापक और साथ ही एकसार और सामंजस्यपूर्ण कार्य संगठित कर सकें जिससे सभी शक्तियों को—यहां तक कि सबसे नगण्य शक्तियों को भी—काम मिल जाय।" (क्या करें ?)

हमारी पार्टियों को लेनिन के इन शब्दों को पूरी तरह हृदयंगम करना चाहिए तथा अपने दिन-प्रति-दिन के कार्य मे मार्गदर्शक के रूप में प्रयोग में लाना चाहिए। लोगों की भरमार है। उन्हें हमारे अपने ही संगठनों में, हड़तालों और प्रदर्शनों के दौरान, मजदूरों के विविध जन संगठनों में, संयुक्त मोर्चा निकायों में खोजने भर की जरूरत है। उन्हें अपने कार्य और संघर्ष के दौरान विकसित होने में मदद दी जानी चाहिए। उन्हें ऐसी स्थिति में रखा जाना चाहिए जहां वे मजदूरों के ध्येय के लिए सचमुच उपयोगी हो सकें।

साथियो, हम कम्युनिस्ट कार्य परायण लोग हैं। हमारी समस्या पूंजी के हमले के खिलाफ, फासिज्म के खिलाफ तथा साम्राज्यवादी युद्ध के खतरे के खिलाफ व्यावहारिक संघर्ष की, पूंजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए संघर्ष की, समस्या है। इस व्यावहारिक कर्तव्य के कारण ही कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं के लिए स्वयं को क्रान्तिकारी सिद्धान्त से सन्नद्ध करना आवश्यक है, क्योंकि सिद्धान्त व्यावहारिक कार्य में लगे लोगों को दिशा तय करने की शक्ति, दृष्टि की स्पष्टता, कार्य के प्रति आश्वस्तता, अपने ध्येय की विजय में विश्वास प्रदान करता है।

लेकिन सच्चा क्रान्तिकारी सिद्धान्त सारे प्राणहीन सिद्धान्त-प्रतिपादन का, अमूर्त परिभाषाओं के साथ सभी निष्फल खिलवाड़ों का, कट्टर दुश्मन है। "हमारा सिद्धान्त मतवाद नहीं है, बल्कि कार्रवाई के लिए मार्गदर्शक है," लेनिन कहा करते थे। हमारे कार्यकर्ताओं को ऐसे ही सिद्धान्त की जरूरत है,

मूलभूत सिद्धान्तों में दक्षता का आधार विद्यार्थी द्वारा स्वयं अपने देश के सर्वहारा के संघर्ष की मूल समस्याओं का व्यावहारिक अध्ययन हो। तब विद्यार्थी अपने व्यावहारिक काम पर वापस आने पर स्वयं स्थिति पर काबू पा सकेगा तथा वर्ग शत्रु के खिलाफ संग्राम में जनता को नेतृत्व दे सकने वाला स्वतंत्र व्यावहारिक संगठनकर्ता और नेता बन सकेगा।

हमारे पार्टी स्कूलों के सभी स्नातक उपयुक्त नहीं साबित होते। बहुतेरों के पास लच्छेदार मुहावरे, अमूर्त विचार, ढेर-सा किताबी ज्ञान और पांडित्य-प्रदर्शन होता है। मगर हमें जरूरत है वास्तविक, सच्चे बोल्शेविक संगठनकर्ताओं और नेताओं की। और, हमें आज ही उनकी बुरी तरह जरूरत है। कोई हर्ज नहीं अगर ऐसे विद्यार्थी अच्छी थीसिसें नहीं लिख सकते (गोकि हमें उनकी भी बहुत जरूरत है), मगर उन्हें यह अवश्य मालूम होना चाहिए कि वे कैसे संगठन और नेतृत्व करें, मुश्किलों से हिम्मत न हारें, बल्कि उन पर विजय पाने में सक्षम हों।

क्रान्तिकारी सिद्धान्त क्रान्तिकारी आन्दोलन का सामान्यीकृत, संक्षिप्त अनुभव होता है। कम्युनिस्टों को अपने-अपने देशों में न सिर्फ अतीत के बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के अन्य दस्तों के मौजूदा संघर्ष के अनुभव का भी सावधानी से उपयोग करना चाहिए। बहरहाल, अनुभव के उचित उपयोग का अर्थ यह कतई नहीं है कि संघर्ष के बने-बनाये रूपों और तरीकों को परिस्थितियों के एक समुच्चय से दूसरे समुच्चय में, एक देश से दूसरे देश में, यंत्रवत स्थानांतरित कर दिया जाय, जैसा कि हमारी पार्टियों में अक्सर ही होता है। ऐसे देशों में जहां पूंजीवाद अभी भी सर्वशक्तिमान है, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के भी कार्य की पद्धतियों और रूपों के नग्न अनुकरण का, सीधी-सादी नकल का परिणाम, चाहे वह अच्छी से अच्छी नीयत से ही क्यों न हो, लाभ से ज्यादा नुकसान होता है, जैसाकि वस्तुतः अक्सर ही हुआ है। हमें रूसी बोल्शेविकों के अनुभव से एक ही अन्तर्राष्ट्रीय लाइन को हर देश के जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों में कारगर तौर पर प्रयोग करना सीखना चाहिए; पूंजीवाद के खिलाफ संघर्ष में हमें सारी लफ्फाजी, पिटे-पिटाये फार्मूलों के इस्तेमाल, पांडित्यदंभ और मतवादिता का निर्ममता के साथ परित्याग कर देना, उपहास करना और आम तौर पर खिल्ली उड़ाना सीखना चाहिए।

साथियो, यह जरूरी है कि हर कदम पर, संघर्ष के दौरान, मुक्ति की दशा में और जेल में सीखा जाय, सदा सीखा जाय। सीखा जाय और लड़ा जाय, लड़ा जाय और सीखा जाय।

हमें मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन की महान शिक्षा का कार्य में

और संघर्ष में स्तालिन की दृढ़ता के साथ, सिद्धान्त के मामलों में, वर्ग शत्रुओं और बोल्शेविक लाइन से हटने वालों के प्रति स्तालिन के कट्टर विरोध-भाव के साथ, मुश्किलों के सामने स्तालिन की निर्भयता के साथ, स्तालिन की क्रान्तिकारी यथार्थवादिता के साथ समन्वय करने में समर्थ होना चाहिए।

साथियो, कम्युनिस्टों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रति विश्व लोकमत की इतनी गहरी दिलचस्पी कभी नहीं देखी गयी, जितनी हम आज अपनी मौजूदा कांग्रेस के मामले में देखते हैं। अतिरंजना के भय के बिना यह कहा जा सकता है कि ऐसा एक भी गंभीर समाचारपत्र, एक भी राजनीतिक पार्टी, एक भी कमोबेश गंभीर राजनीतिक या सामाजिक नेता नहीं है जो बड़े ही ध्यान से हमारी कांग्रेस की कार्यवाहियों को न देख रहा हो।

लाखों मजदूरों, किसानों, छोटे शहरियों, दफ्तर कर्मचारियों और बुद्धि-जीवियों की, औपनिवेशिक जनगण और उत्पीड़ित कौमों की आंखें अन्तर्राष्ट्रीय सर्वहारा वर्ग के प्रथम राज्य—लेकिन अन्तिम राज्य नहीं—की महान राजधानी मास्को की ओर लगी हैं। और इसी में हम कांग्रेस मे विवेचित प्रश्नों और इसके फैसलों के अपार महत्व और तात्कालिकता की पुष्टि देखते हैं।

सभी देशों के फासिस्टों, खास तौर पर प्रचंड जर्मन फासिज्म की बौख-लाहट से भरी चीख-पुकार से हमारा यह विश्वास दृढ़ ही होता है कि हमारे फैसलों ने सचमुच सही निशाने पर चोट की है।

पूंजीवादी प्रतिक्रियावाद और फासिज्म की अंधेरी रात में, जिसमें वर्ग शत्रु पूंजीवादी देशों की मेहनतकश जनता को दबोचे रहने की कोशिश में है, बोल्शे-विकों की अन्तर्राष्ट्रीय पार्टी, कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल, प्रकाश स्तंभ की तरह खड़ी है और समस्त मानवजाति को पूंजीवाद के जुए से, फासिस्ट बर्बरता से तथा साम्राज्यवादी युद्ध की विभीषिकाओं से मुक्ति का एकमात्र मार्ग दिखा रही है।

मजदूर वर्ग की कार्रवाई की एकता कायम करना इस मार्ग की एक फैसलाकुन मंजिल है—जी हां, हर रुझान के मजदूर वर्ग के संगठनों की कार्रवाई की एकता, उसके कार्यकलाप के सभी क्षेत्रों में तथा वर्ग संघर्ष के सभी मैदानों में उसकी शक्तियों की एकजुटता।

मजदूर वर्ग को अपनी ट्रेड यूनियनों की एकता कायम करनी होगी। कुछ सुधारवादी ट्रेड यूनियन नेता संयुक्त ट्रेड यूनियनों के मामलों में कम्युनिस्टों के हस्तक्षेप से, ट्रेड यूनियनों के भीतर कम्युनिस्ट गुटों के अस्तित्व से ट्रेड यूनियन जनवाद के विनाश के हौवे से व्यर्थ ही मजदूरों को डराने की कोशिश करते हैं। हम कम्युनिस्टों को ट्रेड यूनियन जनवाद के दुश्मन के रूप में पेश करना निरी बकवास है। हम अपनी समस्याओं को खुद सुलझाने के ट्रेड यूनियनों के अधि-

कार की वकालत और लगातार हिमायत करते हैं। हम ट्रेड यूनियन में कम्यु-निस्ट गुटों के गठन से दूर रहने को भी तैयार हैं, अगर यह ट्रेड यूनियन एकता के हित में आवश्यक हो। हम सभी राजनीतिक पार्टियों से संयुक्त ट्रेड यूनियनों की स्वतंत्रता पर समझौता करने को तैयार हैं। मगर हम पूंजीपति वर्ग पर ट्रेड यूनियनों की किसी तरह की निर्भरता के निश्चय ही विरोधी हैं और अपने इस बुनियादी दृष्टिकोण को नहीं छोड़ते कि सर्वहारा और पूंजीपति वर्ग के बीच वर्ग संघर्ष के मामले में ट्रेड यूनियनों द्वारा तटस्थ स्थिति अपनायी जानी अक्षम्य है।

मजदूर वर्ग को मजदूर वर्ग के नौजवानों की सभी शक्तियों और फासिस्ट-विरोधी नौजवानों के सभी संगठनों की एकता कायम करने तथा मेहनतकश नौजवानों के उस तबके को अपने पक्ष में लाने की कोशिश करनी चाहिए जो फासिज्म तथा जनता के अन्य दुश्मनों के नैराश्यजनक प्रभाव में आ गया हो।

मजदूर वर्ग को मजदूर आन्दोलन के सभी क्षेत्रों में कार्रवाई की एकता हासिल करनी चाहिए और वह करेगा। सभी पूंजीवादी देशों के हम कम्युनिस्ट और क्रान्तिकारी मजदूर जितनी ही मजबूती और दृढ़ संकल्प के साथ अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन के सबसे महत्वपूर्ण फौरी प्रश्नों के बारे में हमारी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत की गयी नयी कार्यनीतिक लाइन को व्यवहार में लागू करेंगे, उतनी ही जल्दी ऐसी एकता स्थापित करना सम्भव होगा।

हम जानते हैं कि आगे अनेक कठिनाइयां है। हमारा पथ चौरस तारकोल-बिछी सड़क नहीं है, हमारे पथ पर गुलाब के फूल नहीं बिछे हैं। मजदूर वर्ग को अनेक बाधाओं को पार करना पड़ेगा जिनमें स्वयं उसके बीच की बाधाएं भी शामिल हैं; सबसे बढ़ कर उसके सामने सामाजिक-जनवाद के प्रतिक्रिया-वादी तत्वों की फूटपरस्त चालों को नाकाम करने का दायित्व है। पूंजीवादी प्रतिक्रियावाद और फासिज्म की हथौड़े की चोटों के नीचे अनेक आहुतिया देनी पड़ेंगी। सर्वहारा के क्रान्तिकारी जहाज को अपने बन्दरगाह तक पहुंचने के पहले बहुत-सी जलमग्न चट्टानों के बीच से होकर गुजरना पड़ेगा।

मगर पूंजीवादी देशों में मजदूर वर्ग आज वह नहीं रह गया जो वह साम्राज्यवादी युद्ध के आरम्भ में, १९१४ में, था, और न जो वह युद्ध के अन्त में, १९१८ में, था। मजदूर वर्ग के पीछे बीस वर्षों का समृद्ध अनुभव और क्रान्ति-कारी अग्नि-परीक्षाएं, अनेक पराजयों, खास तौर पर जर्मनी, ऑस्ट्रिया और स्पेन की पराजयों के कड़ुवे सबक मौजूद हैं।

मजदूर वर्ग के सामने विजयी समाजवाद के देश सोवियत संघ की प्रेरणा-प्रद मिसाल है, इस बात की मिसाल कि कैसे वर्ग शत्रु को परास्त किया जा सकता है, कैसे मजदूर वर्ग स्वयं अपनी सरकार कायम कर सकता है और

समाजवादी समाज का निर्माण कर सकता है।

विश्व के पूरे विस्तार पर अब पूंजीपति वर्ग का अविभक्त आधिपत्य नहीं रह गया है। अब विजयी मजदूर वर्ग भूमंडल के छठे हिस्से पर शासन करता है। महान चीन के विशाल हिस्से पर सोवियतें शासन करती हैं।

मजदूर वर्ग के पास एक दृढ़, सुगठित क्रान्तिकारी हिरावल—कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल—मौजूद है। इसके पास एक परखे हुए और मान्य, एक महान और बुद्धिमान नेता—स्तालिन—मौजूद हैं।

साथियो, ऐतिहासिक विकास का पूरा दौर मजदूर वर्ग के ध्येय के पक्ष में है। इतिहास के चक्र को पीछे घुमाने की प्रतिक्रियावादियों, हर प्रकार के फासिस्टों, सारी दुनिया के पूंजीपति वर्ग की कोशिशें व्यर्थ हैं। नहीं, यह चक्र आगे घूम रहा है और सोवियत समाजवादी जनतंत्रों के विश्वव्यापी संघ की दिशा में आगे की ओर घूमता रहेगा, जब तक कि पूरे संसार में समाजवाद की अन्तिम विजय नहीं हो जाती है।

एक ही ऐसी चीज है जिसकी पूंजीवादी देशों के मजदूर वर्ग में अभी भी कमी है—उसकी अपनी पांतों में एकता।

इसलिए कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के इस युद्ध घोष को, मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्तालिन के इस तूर्यनाद को हमारे मंच से सारे संसार में और भी बुलंदी से गूंजने दो :

दुनिया के मजदूरो एक हो!

फासिज्म और मजदूर वर्ग की एकता

ज्यॉर्जी दिमित्रोव की रिपोर्ट पर कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस द्वारा २० अगस्त १९३५ को स्वीकृत प्रस्ताव

(१) फासिज्म और मजदूर वर्ग

१. कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवी कांग्रेस ऐलान करती है कि अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर वर्ग शक्तियों की पंक्तिबद्धता तथा विश्व के मजदूर आन्दोलन के सामने पेश दायित्व विश्व की स्थिति में निम्नलिखित बुनियादी परिवर्तनों से निर्धारित होते हैं :

(क) सोवियतों के देश में समाजवाद की अन्तिम और अटल विजय, विश्वव्यापी महत्व की विजय, जिसने संपूर्ण देश के शोषितों और उत्पीड़ितों के प्राचीर के रूप में सोवियत संघ की शक्ति और भूमिका में अपार वृद्धि की है तथा जो पूंजीवादी शोषण, पूंजीवादी प्रतिक्रियावाद और फासिज्म के खिलाफ, शांति के लिए और जनगण की स्वतंत्रता तथा स्वाधीनता के लिए संघर्ष में मेहनतकशों को अनुप्राणित कर रही है।

(ख) पूंजीवाद के इतिहास में गहनतम आर्थिक संकट, जिससे पूंजीपति वर्ग ने आम जनता को तबाह कर, करोड़ों बेरोजगारों को भुखमरी और मौत का शिकार बना कर तथा मेहनतकशों के जीवन स्तर को अभूतपूर्व सीमा तक नीचे गिरा कर अपना बचाव करने की कोशिश की है। अनेक देशों में औद्योगिक उत्पादन में वृद्धि और वित्तीय धन्नासेठों के मुनाफों में बढ़ोतरी के बावजूद विश्व पूंजीपति वर्ग कुल मिला कर संकट या मंदी से बाहर निकलने या पूंजीवाद के अन्तर्विरोधों को और भी उग्र होने से रोकने में सफल नहीं हुआ है। कुछ देशों (फ्रांस, बेल्जियम, आदि) में संकट जारी है, अन्य में यह मंदी की अवस्था में दाखिल हो गया है तथा उन देशों में, जहां उत्पादन संकट के

पहले के स्तर से आगे बढ़ गया है (जापान, ग्रेट ब्रिटेन में), नयी आर्थिक उथल-पुथल की घरघराहट सुनायी पड़ रही है।

(ग) फासिज्म का हमला, जर्मनी में फासिज्म का सत्तारूढ़ होना, उस नये साम्राज्यवादी युद्ध और सोवियत संघ पर हमले के खतरे का बढ़ना, जिसके जरिये पूंजीवादी जगत अपने अन्तर्विरोधों की अंधी गली से बाहर निकलने का रास्ता ढूंढ रहा है।

(घ) वह राजनीतिक संकट जो ऑस्ट्रिया और स्पेन में फासिस्टों के खिलाफ मजदूरों के सशस्त्र संघर्ष के रूप में अभिव्यक्त हुआ है, वह संघर्ष जो अभी फासिज्म पर सर्वहारा की विजय की मंजिल तक नहीं पहुंच सका है, लेकिन जिसने पूंजीपति वर्ग को अपनी फासिस्ट तानाशाही को सुदृढ़ कर सकने से रोक दिया है; फ्रांस में शक्तिशाली फासिस्ट-विरोधी आन्दोलन, जो १९३४ में फरवरी के प्रदर्शन तथा सर्वहारा की आम हड़ताल के साथ शुरू हुआ।

(ङ) संपूर्ण पूंजीवादी जगत में आम मेहनतकशों में क्रान्तिकारिता का संचार जो सोवियत संघ में समाजवाद की विजय तथा विश्व आर्थिक संकट के प्रभाव से, तथा योरप के मध्यवर्ती भाग में—जर्मनी में—साथ ही ऑस्ट्रिया और स्पेन में, अर्थात उन देशों में, सर्वहारा की क्षणिक पराजय से सीखे गये सबकों के आधार पर घटित हो रहा है जहां अधिकांश संगठित मजदूर सामाजिक-जनवादी पार्टियों का समर्थन कर रहे थे। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर वर्ग की कतारों में कार्रवाई की एकता की प्रबल आकांक्षा बढ़ रही है। औपनिवेशिक देशों में क्रान्तिकारी आन्दोलन तथा चीन में सोवियत क्रान्ति विस्तृत हो रही है। विश्व के पैमाने पर वर्ग शक्तियों का सबंध क्रान्ति की शक्तियों के बढ़ाव की दिशा में अधिकाधिक बदल रहा है।

ऐसी परिस्थिति में शासक पूंजीपति वर्ग अधिकाधिक फासिज्म में, वित्तीय पूंजी के सबसे ज्यादा प्रतिक्रियावादी, सबसे ज्यादा अंधराष्ट्रवादी और सबसे ज्यादा साम्राज्यवादी तत्वों की खुली आतंकवादी तानाशाही की स्थापना में अपनी मुक्ति का रास्ता खोजने की कोशिश कर रहा है। इसके पीछे उसका लक्ष्य है मजदूरों की लूट-खसोट के लिए, या दस्युतापूर्ण, साम्राज्यवादी युद्ध की तैयारी के लिए असाधारण कदम उठाना, सोवियत संघ पर आक्रमण बोलना, चीन को गुलाम बनाना और उसे टुकड़े-टुकड़े कर देना, तथा इस सबके आधार पर क्रान्ति को रोकना। वित्तीय पूंजी अपने उन फासिस्ट दलालों के माध्यम से पूंजीवाद के खिलाफ निम्न-पूंजीवादी जन समुदाय के गुस्से पर अंकुश लगाने की कोशिश कर रही है, जो लफ्फाजी के तौर-तरीकों से आबादी के इन तबकों की मनोदशाओं के अनुरूप अपने नारों को बदल लेते हैं। इस प्रकार फासिज्म अपने लिए एक जन-आधार कायम कर रहा है तथा

इन तबकों को मजदूर वर्ग के खिलाफ एक प्रतिक्रियावादी शक्ति के रूप में निर्दिष्ट करके वित्तीय पूंजी द्वारा सभी मेहनतकशों को और अधिक गुलाम बनाने की दिशा में ले जाता है। अनेक देशों में फासिज्म पहले ही सत्ता में आ चुका है। किन्तु, फासिज्म की वृद्धि और उसकी विजय पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की सामाजिक-जनवाद की फूटपरस्त नीति के फलस्वरूप असंगठित मजदूर वर्ग की कमजोरी का ही नहीं, बल्कि स्वयं पूंजीपति वर्ग की कमजोरी का प्रमाण है जो मजदूर वर्ग के संघर्ष में एकता के अहसास से भयभीत है, क्रान्ति से डरा हुआ है, तथा अब पूंजीवादी जनवाद के पुराने तरीकों से अपनी तानाशाही बरकरार रख सकने में सक्षम नहीं रह गया है।

२. फासिज्म की सबसे ज्यादा प्रतिक्रियावादी किस्म फासिज्म की जर्मन किस्म है, जो बेशर्मी से स्वयं को राष्ट्रीय समाजवाद पुकारता है, हालांकि समाजवाद के साथ या जनसाधारण के वास्तविक राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ उसका कतई कोई संबंध नहीं है, और वह महज बड़े पूंजीपति वर्ग के चाकर की भूमिका निभाता है तथा न केवल पूंजीवादी राष्ट्रवाद बल्कि पाशविक अंधराष्ट्रवाद का भी अंग है।

फासिस्ट जर्मनी सारे संसार को साफ-साफ यह दिखा रहा है कि जहां फासिज्म की विजय हो जाती है, वहां आम जनता कैसी जिंदगी की अपेक्षा कर सकती है। मदांध फासिस्ट सरकार मजदूर वर्ग के सत्व—उसके नेताओं और संगठनकर्ताओं—का जेलों और यातना शिविरों में संहार कर रही है। उसने मजदूरों की ट्रेड यूनियनों, सहकारी समितियों, सभी वैध संगठनों तथा अन्य सारे गैर-फासिस्ट राजनीतिक और सांस्कृतिक संगठनों को नष्ट कर दिया है। उसने मजदूरों के अपने हितों की रक्षा करने के प्रारंभिक अधिकार से भी उन्हें वंचित कर दिया है। उसने एक सुसंस्कृत देश को अधोमुखता, बर्बरता और युद्ध के अड्डे में बदल दिया है। जर्मन फासिज्म नये साम्राज्यवादी युद्ध का मुख्य उकसावा पैदा करने वाला है तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रान्ति की धावा-टुकड़ी के रूप में आगे आता है।

३. समस्त पूंजीवादी देशों में फासिज्म के खतरे की वृद्धि पर जोर देते हुए कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस फासिस्ट खतरे को किसी भी किस्म से घटा कर आंकने के खिलाफ आगाह करती है। कांग्रेस फासिज्म की विजय को अपरिहार्यता के बारे में भाग्यवादी विचारों को भी अस्वीकार करती है। ये विचार मूलतः गलत हैं और केवल निष्क्रियता को ही जन्म दे सकते हैं तथा फासिज्म के खिलाफ जन संघर्ष को कमजोर बना सकते हैं। अगर मजदूर वर्ग अपने संघर्ष में एकता कायम करने में सफल होता है और फौरन स्वयं अपनी जुझारू कारवाई विकसित करके फासिज्म को शक्ति नहीं संचित

करने देता है; अगर वह सही क्रान्तिकारी नेतृत्व द्वारा शहरों और गांवों में मेहनतकशों के व्यापक तबकों को स्वयं अपने गिर्द गोलबंद करने में सफल होता है, तो वह फासिज्म की विजय को रोक सकता है।

४. फासिज्म की विजय असुरक्षित है। फासिस्ट तानाशाही मजदूर वर्ग आन्दोलन के लिए जो भीषण कठिनाइयां पैदा करती है उनके बावजूद फासिस्टों के शासन में पूंजीवादी प्रभुत्व की नीवें और भी कमजोर हो रही हैं। पूंजीपति वर्ग के खेमे में आन्तरिक टकराव खास तौर पर उग्र होते जा रहे हैं। जनता की वैधतावादी भ्रांतियां चकनाचूर हो रही हैं। मजदूरों की क्रान्तिकारी नफरत संचित हो रही है। फासिज्म की सामाजिक लफ्फाजी की क्षुद्रता और झूठापन खुद को अधिकाधिक बेनकाब कर रहे हैं। फासिज्म न सिर्फ जन-साधारण की भौतिक परिस्थितियों में वह सुधार नहीं ला सका जिसका उनसे वायदा किया था, बल्कि मेहनतकशों के रहन-सहन में गिरावट लाकर पूंजी-पतियों के मुनाफों में और भी वृद्धि की है, मुट्ठी भर वित्तीय धन्नासेठों द्वारा उनका शोषण तेज कर दिया है, तथा पूजी के लाभार्थ उनकी और भी लूट-खसोट की है। फासिस्टों द्वारा ठगे गये शहरी निम्न-पूंजीवादी तबकों और मेहनतकश किसानों का मोहभंग बढ़ता जा रहा है। फासिज्म का जन-आधार छिन्न-भिन्न और संकुचित होता जा रहा है। लेकिन कांग्रेस इस तरह की खतरनाक भ्रान्तियों के प्रति आगाह करती है कि फासिस्ट तानाशाही अपने-आप ढह जायगी, और यह लक्षित करती है कि सारे मेहनतकशों का नेतृत्व करते हुए मजदूर वर्ग का संयुक्त क्रान्तिकारी संघर्ष ही फासिस्ट तानाशाही को समाप्त करेगा।

५. जर्मनी में फासिज्म की विजय और अन्य देशों में फासिस्ट खतरे में वृद्धि के संदर्भ में सर्वहारा का वर्ग संघर्ष, जो कि फासिस्ट पूंजीपति वर्ग के प्रति अधिकाधिक दृढ़ प्रतिरोध का रास्ता अपना रहा है, प्रखर हुआ है और प्रखर होता जा रहा है। समस्त पूंजीवादी देशों में पूंजी और फासिज्म के हमले के खिलाफ संयुक्त मोर्चा आन्दोलन विकसित हो रहा है। जर्मनी में व्याप्त राष्ट्रीय-समाजवादी आतंक ने सर्वहारा के अन्तर्राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चे को जबर्दस्त बढ़ावा दिया है (लाइपजिग मुकदमे, दिमित्रोव और उनके साथ जेलों में कैद किये गये साथियों की मुक्ति के लिए अभियान, थेलमान की रक्षार्थ अभियान, आदि)।

हालांकि संयुक्त मोर्चा आन्दोलन अभी अपने विकास के आरम्भिक चरण में ही है, फिर भी फ्रांस में कम्युनिस्ट और सामाजिक-जनवादी मजदूरों ने कंधे से कंधा मिला कर लड़ते हुए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संयुक्त मोर्चा आन्दो-लन पर लामबंदी पैदा करने वाला प्रभाव डाल कर फासिज्म के पहले हमलों

को पछाड़ देने में सफलता पायी है। ऑस्ट्रिया और स्पेन में सामाजिक-जनवादी और कम्युनिस्ट मजदूरों के संयुक्त सशस्त्र संघर्ष ने न सिर्फ दूसरे देशों के मेहनतकशों के लिए एक वीरतापूर्ण मिसाल पेश की है, बल्कि यह भी सिद्ध कर दिया है कि अगर दक्षिणपंथी सामाजिक-जनवादी नेताओं ने तोड़फोड़ न की होती और "वामपंथी" सामाजिक-जनवादी नेता ढुलमुल न हुए होते (स्पेन के अधिकांश अराजक-संधाधिपत्यवादी नेताओं की खुली गद्दारी भी इसमें जोड़ दी जानी चाहिए)—जनता पर जिनके प्रभाव के चलते सर्वहारा वर्ग दृढ़-संकल्प क्रान्तिकारी नेतृत्व से तथा संघर्ष के लक्ष्यों की स्पष्टता से वंचित रह गया—तो फासिज्म के खिलाफ सफल संघर्ष सर्वथा सम्भव हो गया होता।

६. द्वितीय इन्टरनेशनल की अग्रणी पार्टी के, जर्मन सामाजिक-जनवाद के, दिवालियेपन ने, जिसने अपनी संपूर्ण नीति से फासिज्म की विजय को सुगम बनाया, तथा ऑस्ट्रिया में "वामपंथी" सुधारवादी सामाजिक-जनवाद की असफलता ने, जिसने ऐसे समय में भी व्यापक आम जनता को संघर्ष से अलग कर दिया जब फासिज्म से अवश्यम्भावी सशस्त्र टक्कर समीप आ रही थी, सामाजिक-जनवादी पार्टियों की नीति से सामाजिक-जनवादी मजदूरों के मोहभंग को बेहद बढ़ा दिया है। द्वितीय इन्टरनेशनल गहन संकट से गुजर रहा है। सामाजिक-जनवादी पार्टियों और संपूर्ण द्वितीय इन्टरनेशनल के भीतर मुख्य खेमों में विभेदीकरण की एक प्रक्रिया चल रही है—प्रतिक्रियावादी तत्वों के अगल-बगल ही जो पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की नीति जारी रखने की कोशिश कर रहे हैं, उन तत्वों का एक खेमा बनता जा रहा है जिनमें क्रान्तिकारिता का संचार हो रहा है, ऐसे तत्वों का जो संयुक्त सर्वहारा मोर्चा कायम करने की हिमायत करते हैं और क्रान्तिकारी वर्ग संघर्ष की स्थिति अधिकाधिक अपना रहे हैं।

कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस कम्युनिस्टों के साथ संयुक्त मोर्चा कायम करने की सामाजिक-जनवादी मजदूरों की आकांक्षा का स्वागत करती है और इसे इस बात का लक्षण मानती है कि उनकी वर्ग चेतना बढ़ रही है और फासिज्म के खिलाफ, पूंजीपति वर्ग के खिलाफ सफल संघर्ष के हितों में मजदूर वर्ग की कतारों की फूट दूर करने की दिशा में एक शुरूआत हो गयी है।

(२) फासिज्म के खिलाफ मजदूर वर्ग का संयुक्त मोर्चा

मजदूर वर्ग और उसकी सारी उपलब्धियों के लिए, सारे मेहनतकशों और उनके प्राथमिक अधिकारों के लिए, जनगण की शांति और आजादी के लिए

फासिज्म के भयंकर खतरे को देखते हुए कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस ऐलान करती है कि वर्तमान ऐतिहासिक मंजिल में अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन का मुख्य और तात्कालिक कर्तव्य है—मजदूर वर्ग का संयुक्त जुझारू मोर्चा स्थापित करना। पूंजी के हमले के खिलाफ, पूंजीपति वर्ग के प्रतिक्रियावादी कदमों के खिलाफ, उन सारे मेहनतकशों के, जो राजनीतिक विचारों में भेदभाव के बिना सारे अधिकारों और आजादियों से वंचित कर दिये गये हैं, कट्टरतम शत्रु—फासिज्म—के खिलाफ सफल संघर्ष के लिए यह अनिवार्य है कि इससे भी पहले कि बहुसंख्यक मजदूर वर्ग पूंजीवाद के उन्मूलन और सर्वहारा क्रान्ति की विजय के लिए एक जंगजू मंच पर ऐक्यबद्ध हो, मजदूर वर्ग के सारे तबकों के बीच कारंवाई की एकता कायम की जाय, चाहे वे जिस संगठन से भी संबद्ध हों। किन्तु ठीक इसी कारण से इस दायित्व के चलते कम्युनिस्ट पार्टियों का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे बदली हुई परिस्थितियों को ध्यान में रखें तथा कारखाना, स्थानीय, जिला, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर संयुक्त कारंवाई के लिए विविध-राजनीतिक धाराओं के मेहनतकशों के संगठनों के साथ समझौते की कोशिश करके संयुक्त मोर्चे की कार्यनीतियों को एक नये ढंग से लागू करें।

इसे अपना प्रस्थान-बिंदु मान कर कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टियों को आदेश देती है कि संयुक्त मोर्चा कार्यनीति को अमल में लाते समय वे निम्नलिखित हिदायतों से निर्देशित हों :

१. मजदूर वर्ग के फौरी आर्थिक और राजनीतिक हितों की रक्षा, फासिज्म से मजदूर वर्ग की रक्षा ही समस्त पूंजीवादी देश में मजदूरों के संयुक्त मोर्चे का प्रस्थान-बिंदु और मुख्य अंतर्वस्तु होनी चाहिए। व्यापक जन समुदाय को गतिशील बनाने के लिए जनता की मूल आवश्यकताओं से तथा विकास के चरण विशेष में उनकी जुझारू क्षमता के स्तर से उत्पन्न होने वाले नारों और संघर्ष के रूपों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए। कम्युनिस्टों को स्वयं को मात्र सर्वहारा अधिनायकत्व के लिए संघर्ष की अपीलें जारी करने तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि जनता को यह दिखाना चाहिए कि पूंजीवादी लूट और फासिस्ट बर्बरता से अपनी रक्षा करने के लिए उन्हें आज क्या करना है। उन्हें मजदूर संगठनों की संयुक्त कारंवाई के जरिये जनता को ऐसी मांगों के कार्यक्रम के गिर्द लामबंद करने की कोशिश करनी चाहिए जिनका उद्देश्य वस्तुतः संकट के परिणामों का भार शासक वर्गों के कंधों पर डाल देना हो, ऐसी मांगें जिनकी पूर्ति के लिए लड़ाई से फासिज्म अस्तव्यस्त होता हो, साम्राज्यवादी युद्ध की तैयारियों में विघ्न पहुंचते हों, पूंजीपति वर्ग कमजोर पड़ता हो तथा सर्वहारा की स्थिति सुदृढ़ होती हो।

परिस्थितियों के बदलने के साथ-साथ संघर्ष के रूपों और तरीकों में तेजी से परिवर्तन लाने के लिए मजदूर वर्ग को तैयार करते हुए यह जरूरी है कि जैसे-जैसे आन्दोलन बढ़ता जाय, वैसे-वैसे उसी के अनुपात में पूंजी से बचाव करने की जगह उस पर हमला करने की दिशा में कदम बढ़ाया जाय, तथा ऐसी सामूहिक राजनीतिक हड़ताल की ओर बढ़ा जाय जिसमें यह अपरिहार्य हो कि देश की प्रधान ट्रेड यूनियनों की शिरकत हासिल की जाय।

२. आम जनता की कम्युनिस्ट शिक्षा, संगठन और लामबंदी के क्षेत्र में अपने स्वतंत्र कार्य को पल भर के लिए भी छोड़े बगैर कम्युनिस्टों को मजदूरों के लिए कारंवाई की एकता का पथ सुगमतर बनाने के हेतु अल्प और दीर्घकालीन समझौतों के आधार पर सर्वहारा के वर्ग शत्रुओं के खिलाफ सामाजिक-जनवादी पार्टियों, सुधारवादी ट्रेड यूनियनों तथा मेहनतकशों के अन्य संगठनों के साथ संयुक्त कारंवाई के लिए प्रयास करना चाहिए। साथ ही विभिन्न इलाकों में स्थानीय समझौतों के आधार पर निचले संगठनों द्वारा संचालित जन कारंवाई के विकास की ओर मुख्य रूप से ध्यान दिया जाना चाहिए।

समझौतों की शर्तों को वफादारी के साथ निभाते हुए कम्युनिस्टों को संयुक्त मोर्चे में शरीक व्यक्तियों या संगठनों द्वारा संयुक्त कारंवाई की किसी भी तोड़फोड़ का फौरन पर्दाफाश करना चाहिए, तथा, अगर समझौता तोड़ा जाता है तो, भंग की गयी कारंवाई की एकता की बहाली के लिए अपना अथक संघर्ष जारी रखते हुए अविलंब आम जनता से अपील करनी चाहिए।

३. जिन रूपों में संयुक्त सर्वहारा मोर्चा मूर्तिमान होता है, वे मजदूर संगठनों की परिस्थिति और चरित्र पर तथा ठोस स्थिति पर निर्भर होते हैं और उन्हें चरित्र की दृष्टि से विविध होना चाहिए। मसलन, ऐसे रूपों में ये चीजें सम्मिलित हो सकती हैं : मजदूरों द्वारा अलग-अलग मांगों को हासिल करने के लिए विशेष मौकों पर अलग-अलग मामलों के बारे में स्वीकृत अथवा समान मांगों के आधार पर संयुक्त कारंवाई; अलग-अलग उद्योगों या उद्योग की शाखाओं में सहमत कारंवाई; स्थानीय, जिला, राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर सहमत कारंवाई; मजदूरों के आर्थिक संघर्ष के संगठन के लिए, बेरोजगारों के हितों की रक्षा के लिए, जन राजनीतिक कारंवाई के लिए, फासिस्ट हमले के खिलाफ संयुक्त आत्मरक्षा के संगठन के लिए, कारंवाई; राजनीतिक बंदियों और उनके परिवारों की सहायता के लिए, सामाजिक प्रतिक्रियावाद के खिलाफ संघर्ष के क्षेत्र में कारंवाई; नौजवानों और महिलाओं के हितों की रक्षा के लिए, सहकारी आन्दोलन, सांस्कृतिक कार्यकलाप और खेलकूद के क्षेत्र में संयुक्त कारंवाई; मेहनतकश किसानों आदि की मांगों के

समर्थन, मजदूरों और किसानों के गठबंधनों के निर्माण (स्पेन), "लेबर पार्टियों" या "मजदूर और किसान पार्टियों" के रूप में स्थायी साझे के निर्माण (अमरीका) के उद्देश्य से संयुक्त कारंवाई।

स्वयं जन-समुदाय के ध्येय के रूप में संयुक्त मोर्चा आन्दोलन को विकसित करने के लिए कम्युनिस्टों को कारखानों में, बेरोजगारों के बीच, मजदूर-वर्ग जिलों में, छोटे शहरी लोगों के बीच, और गांवों में संयुक्त मोर्चे के निर्वाचित गैर-पार्टी वर्ग निकायों की स्थापना का (अथवा, जो देश फासिस्ट तानाशाही के अन्तर्गत हों उनमें आन्दोलन में भाग लेने वाले सबसे अधिकृत लोगों के बीच से चयन किये गये लोगों के गैर-पार्टी वर्ग निकायों की स्थापना का) प्रयास करना चाहिए। इन निकायों को संयुक्त मोर्चे में शरीक होने वाले संगठनों का स्थान निस्संदेह नहीं हथिया लेना चाहिए, पर ये निकाय ही मेहनतकशों के विशाल असंगठित समुदाय को भी संयुक्त मोर्चे में ला सकेंगे, पूंजी के हमले के खिलाफ और फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में जनता की पहल को विकसित करने में सहायक हो सकेंगे, तथा इस आधार पर मजदूर वर्ग के संयुक्त मोर्चे की अनेकानेक कार्रवाइयां चलाने में सहायक हो सकेंगे।

४. जहां कहीं सामाजिक-जनवादी नेता मजदूरों को अपने दैनंदिन हितों की रक्षा के लिए संघर्ष से विमुख करने और संयुक्त मोर्चे को विफल करने की कोशिश में बहु-विज्ञापित "समाजवादी" योजनाएं (दे मान योजना, आदि) प्रस्तुत करें, ऐसी योजनाओं के लफ्फाजी से भरे स्वरूप का पर्दाफाश किया जाना चाहिए तथा मेहनतकशों को यह दिखाया जाना चाहिए कि जब तक पूंजीपति वर्ग के हाथों में सत्ता बरकरार है तब तक समाजवाद ला सकना असंभव है। मगर साथ-साथ इन योजनाओं में प्रस्तुत कुछ ऐसे कदमों को, जिन्हें मेहनतकशों के मूलभूत हितों से जोड़ा जा सकता है, सामाजिक-जनवादी मजदूरों के साथ संयुक्त रूप में जन संयुक्त मोर्चा संघर्ष विकसित करने के लिए आरम्भ-बिंदु के रूप में इस्तेमाल किया जाना चाहिए।

ऐसे देशों में, जहां सामाजिक-जनवादी सरकारें सत्ता में हैं (या जहां ऐसी साझा सरकारें हैं जिनमें समाजवादी शरीक हैं), वहां कम्युनिस्टों को ऐसी सरकारों की नीतियों का पर्दाफाश करने के प्रचार तक ही स्वयं को सीमित नहीं रखना चाहिए, बल्कि उनको उन व्यावहारिक मूलभूत वर्ग मांगों की पूर्ति के लिए संघर्ष में व्यापक जन समुदाय को लामबंद करना चाहिए जिन्हें पूरा करने के लिए सामाजिक-जनवादियों ने खास तौर पर उस समय अपने घोषणा-पत्रों में ऐलान किया हो जब वे सत्ता में नहीं आ पाये थे या जब वे अपनी-अपनी सरकारों के सदस्य नहीं बने थे।

५. सामाजिक-जनवादी पार्टियों और संगठनों के साथ संयुक्त कार्रवाई

सुधारवाद की, पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की विचारधारा और व्यवहार के रूप में सामाजिक-जनवाद की, गंभीर और तर्कपूर्ण आलोचना को, तथा धैर्य के साथ सामाजिक-जनवादी मजदूरों के बीच कम्युनिज्म के सिद्धान्तों और कार्यक्रम की व्याख्या को, न सिर्फ वर्जित नहीं करती, बल्कि उल्टे और अधिक आवश्यक बनाती है।

दक्षिणपंथी सामाजिक-जनवादी नेताओं द्वारा संयुक्त मोर्चे के खिलाफ प्रस्तुत की जाने वाली लफ्फाजी से भरी दलीलों के अभिप्राय का जनता के सामने पर्दाफाश करते हुए, सामाजिक-जनवाद के प्रतिक्रियावादी तबकों के खिलाफ संघर्ष को तेज करते हुए, कम्युनिस्टों को उन वामपंथी समाजिक-जनवादी मजदूरों, कार्यकर्ताओं और संगठनों के साथ घनिष्ठतम सहयोग कायम करना चाहिए, जो सुधारवादी नीति से लड़ते हैं और कम्युनिस्ट पार्टी के साथ संयुक्त मोर्चे की हिमायत करते हैं। पूंजीपति वर्ग के साथ गुट में शामिल होने वाले सामाजिक-जनवाद के प्रतिक्रियावादी खेमे के खिलाफ अपनी लड़ाई को हम जितना ही तेज करेंगे, सामाजिक-जनवाद के उस हिस्से को दी जाने वाली हमारी सहायता उतनी ही कारगर होगी जिसमें क्रान्तिकारिता का संचार होता जा रहा है, तथा सामाजिक-जनवादी पार्टियों के साथ संयुक्त मोर्चे के लिए कम्युनिस्ट जितनी दृढ़ता के साथ लड़ेंगे, उतनी ही जल्दी वामपंथी खेमे में विभिन्न तत्व आत्म-निर्णय की स्थिति में पहुंचेंगे।

सामाजिक-जनवादियों के बीच के विभिन्न समूहों की सच्ची स्थिति का मुख्य द्योतक संयुक्त मोर्चे को व्यावहारिक रूप में साकार करने के प्रति उनका दृष्टिकोण होगा। संयुक्त मोर्चे को व्यावहारिक रूप में साकार करने के लिए लड़ाई में जो सामाजिक-जनवादी नेता वचन में वामपंथियों के रूप में आगे आयेंगे, वे अपने कार्य से भी यह दिखाने को मजबूर हो जायेंगे कि क्या वे दर-असल पूंजीपति वर्ग और दक्षिणपंथी सामाजिक-जनवादियों से लोहा लेने को तैयार हैं, अथवा वे पूंजीपति वर्ग के पक्ष में, अर्थात मजदूर वर्ग के ध्येय के खिलाफ हैं।

६: चुनाव अभियानों को सर्वहारा के संयुक्त लड़ाकू मोर्चे को और आगे विकसित तथा सुदृढ़ करने के लिए उपयोग में लाया जाना चाहिए। चुनावों में स्वतंत्र रूप से आगे आते हुए और आम जनता के सामने कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम पेश करते हुए, कम्युनिस्टों को सामाजिक-जनवादी पार्टियों और ट्रेड यूनियनों के साथ (साथ ही मेहनतकश किसानों, दस्तकारों आदि के साथ) संयुक्त मोर्चा कायम करने का प्रयास करना चाहिए तथा प्रतिक्रियावादी और फासिस्ट उम्मीदवारों को चुने जाने से रोकने के लिए हर प्रयास करना चाहिए। फासिस्ट खतरे को देखते हुए कम्युनिस्ट अपने लिए राजनीतिक आन्दोलन और

आलोचना की स्वतंत्रता सुरक्षित रख कर, संयुक्त मोर्चा आन्दोलन की प्रगति और सफलता पर निर्भर करते हुए तथा चालू चुनाव पद्धति पर भी निर्भर करते हुए, फासिस्ट-विरोधी मोर्चे के आम मंच पर तथा आम टिकट के साथ चुनाव अभियानों में भाग ले सकते हैं।

७. सर्वहारा के नेतृत्व में मेहनतकश किसानों, शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग तथा उत्पीड़ित कौमों के मेहनतकश जन समुदाय के संघर्ष को संयुक्त करने की कोशिश करते समय कम्युनिस्टों को सर्वहारा संयुक्त मोर्चे के आधार पर एक व्यापक फासिस्ट-विरोधी जन-मोर्चे की स्थापना का प्रयास करना चाहिए और इसमें उन्हें मेहनतकशों के तबकों की उन सभी विशिष्ट मांगों का समर्थन करना चाहिए, जो सर्वहारा के आधारभूत हितों से मेल खाती हों। यह खास तौर पर महत्वपूर्ण है कि मेहनतकश किसानों को किसानों के बुनियादी समुदायों को लूटने की फासिस्ट नीति के खिलाफ, इजारेदार पूंजी और पूंजीवादी सरकारों की दस्युतापूर्ण मूल्य नीति के खिलाफ, करों, भाड़ों और कर्जों के असह्य बोझ के खिलाफ, किसानों की सम्पत्ति की जबरी बिक्री के खिलाफ तथा तबाह किसानों के लिए सरकारी सहायता के पक्ष में लामबंद किया जाय।

शहरी निम्न-पूंजीपति वर्ग और बुद्धिजीवियों, साथ ही दफ्तर कर्मचारियों के बीच हर जगह काम करते हुए कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे इन तबकों को बढ़ते हुए करों और जीवन निर्वाह के उच्च व्यय के खिलाफ, इजारेदार पूंजी द्वारा, ट्रस्टों द्वारा उनकी लूट-खसोट के खिलाफ, सूद भुगतानों की गुलामी के खिलाफ, तथा सरकारी और नगरपालिका कर्मचारियों की बर्खास्तगियों और वेतन में कटौतियों के खिलाफ जागृत करें। प्रगतिशील बुद्धिजीवियों के हितों और अधिकारों की रक्षा करते हुए यह जरूरी है कि सांस्कृतिक प्रतिक्रियावाद के खिलाफ उनके आन्दोलन को हर समर्थन दिया जाय तथा फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में मजदूर वर्ग के पक्ष में उनके लाये जाने की प्रक्रिया को सुगम बनाया जाय।

८. राजनीतिक संकट की परिस्थितियों में, जब शासक वर्ग जन आन्दोलन के प्रचंड वेग का सामना करने की स्थिति में न रह गये हों, कम्युनिस्टों को ऐसे आधारभूत क्रान्तिकारी नारे (जैसे, मसलन, उत्पादन और बैंकों पर नियंत्रण, पुलिस दल का भंग किया जाना और उसके स्थान पर सशस्त्र मजदूर मिलिशिया की स्थापना, आदि) देने चाहिए जो पूंजीपति वर्ग की आर्थिक और राजनीतिक सत्ता को और भी हिला देने और मजदूर वर्ग की शक्ति बढ़ाने के लिए, समझौतापरस्त पार्टियों को अकेला करने के लिए, लक्षित हों तथा जो मेहनतकश जनता को सीधे सत्ता को क्रान्तिकारी ढंग से छीन लेने के बिंदु तक पहुंचा दें। अगर जन आन्दोलन के ऐसे उभार के साथ सर्वहारा के हित में यह

सम्भव और आवश्यक हो कि एक ऐसी **सर्वहारा संयुक्त मोर्चा सरकार अथवा फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चा सरकार** बनायी जाय, जो सर्वहारा अधिनायकत्व की सरकार तो न हो मगर जो फासिज्म और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ निर्णायक कदम उठाने को तैयार हो, तो कम्युनिस्ट पार्टी को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ऐसी सरकार का गठन किया जाय। संयुक्त मोर्चा सरकार के गठन के लिए निम्नलिखित स्थिति एक अत्यावश्यक पूर्वापेक्षा है: (क) जब पूंजीपति वर्ग का राज्य-तंत्र गंभीर रूप में पंगु पड़ गया हो और पूंजीपति वर्ग ऐसी सरकार के गठन को रोकने की स्थिति में न रह गया हो; (ख) जब मेहनतकशों के व्यापक समुदाय फासिज्म और प्रतिक्रियावाद के खिलाफ जबर्दस्त कार्रवाई कर रहे हों मगर अभी सोवियत सत्ता के लिए उठ खड़े होने और लड़ने के लिए तत्पर न हों; (ग) जब संयुक्त मोर्चे में भाग लेने वाली सामाजिक-जनवादी और अन्य पार्टियों के संगठनों का एक खासा बड़ा हिस्सा अभी ही फासिस्टों और अन्य प्रतिक्रियावादियो के खिलाफ निर्मम कदम उठाये जाने की मांग करने लगा हो तथा इन कदमों के लागू किये जाने के लिए कम्युनिस्टों के साथ मिल कर लड़ने को तैयार हो।

अगर संयुक्त मोर्चा सरकार प्रतिक्रान्तिकारी वित्तीय धन्नासेठों और उनके फासिस्ट दलालों के खिलाफ सचमुच निर्णायक कदम उठायेगी तथा कम्युनिस्ट पार्टी की गतिविधि और मजदूर वर्ग के संघर्ष पर किसी तरह की पाबंदी नहीं लगायेगी तो कम्युनिस्ट पार्टी ऐसी सरकार का हर तरह समर्थन करेगी। किसी संयुक्त मोर्चा सरकार में कम्युनिस्टों के शामिल होने या न शामिल होने का फैसला ठोस परिस्थिति को देखते हुए हर खास मामले में अलग-अलग किया जायगा।

(३) ट्रेड यूनियन आन्दोलन की एकता

मजदूरों के आर्थिक संघर्ष के क्षेत्र में संयुक्त मोर्चे के निर्माण और सर्वहारा के संयुक्त मोर्चे के सुदृढ़ीकरण की दिशा में ट्रेड यूनियन आन्दोलन की एकता की स्थापना के विशेष महत्व पर जोर देते हुए, यह कांग्रेस कम्युनिस्टों का यह कर्तव्य घोषित करती है कि वे उद्योगों में तथा राष्ट्रीय पैमाने पर ट्रेड यूनियनों की एकता हासिल करने के लिए हर व्यावहारिक कदम उठायें।

कम्युनिस्ट निश्चय ही हर देश में तथा अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर फिर से ट्रेड यूनियन एकता कायम करने के हक में हैं, वे पूंजी के हमले और फासिज्म के खिलाफ मजदूर वर्ग के एक मुख्य प्राचीर के रूप में संयुक्त वर्ग ट्रेड यूनियनों के हक में हैं; वे हर उद्योग में एक ट्रेड यूनियन के हक में हैं, वे हर देश में ट्रेड यूनियनों के एक फेडरेशन के हक में हैं; वे उद्योगों के आधार पर संगठित ट्रेड यूनियनो के एक अन्तर्राष्ट्रीय फेडरेशन के हक में हैं; वे वर्ग संघर्ष पर आधारित ट्रेड यूनियनों के एक इन्टरनेशनल के हक में हैं।

उन देशों में जहां छोटी-छोटी लाल ट्रेड यूनियनें हैं, इन ट्रेड यूनियनों को अपने विचारों की हिफ़ाजत करने के अधिकार और निष्कासित सदस्यों की बहाली की मांगों को सामने रखते हुए, बड़ी सुधारवादी ट्रेड यूनियनों में प्रवेश पाने की कोशिश करनी चाहिए। ऐसे देशों में जहां बड़ी-बड़ी लाल ट्रेड यूनियनें और सुधारवादी ट्रेड यूनियनें साथ-साथ मौजूद हों, वहां बराबरी के दर्जे पर, पूंजी के हमले के खिलाफ संघर्ष तथा ट्रेड यूनियन जनवाद की गारंटी के मंच के आधार पर, उनका विलयन कराने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए।

कम्युनिस्टों का यह कर्तव्य है कि वे सुधारवादी और संयुक्त ट्रेड यूनियनों में सक्रिय रूप में काम करें, उन्हें सुदृढ़ बनायें तथा असंगठित मजदूरों को उनमें भर्ती करें, और साथ ही इस बात का प्रयास करें कि ये दरअसल मजदूरों के हितों की रक्षा करें और सच्ची वर्ग संगठग बन जायें। इस लक्ष्य के लिए कम्युनिस्टों को पूरे सदस्यों का, अधिकारियों का तथा पूरे के पूरे संगठनों का समर्थन प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए।

कम्युनिस्टों का यह कर्तव्य है कि वे ट्रेड यूनियनों के अधिकारों को सीमित करने या उन्हें नष्ट करने के पूंजीपति वर्ग और फासिस्टों के सारे प्रयासों से ट्रेड यूनियनों की रक्षा करें।

अगर सुधारवादी नेता क्रान्तिकारी मजदूरों या पूरी की पूरी शाखाओं को ट्रेड यूनियनों से निष्कासित करने की नीति का सहारा लें या उत्पीड़न के अन्य रूपों को अपनायें, तो कम्युनिस्टों को यूनियन के सारे सदस्यों को नेतृत्व की फूटपरस्त हरकत के खिलाफ गोलबंद करना चाहिए, साथ ही, निष्कासित सदस्यों तथा ट्रेड यूनियनों के अधिकांश सदस्यों के बीच संपर्क स्थापित करना चाहिए तथा उनकी बहाली के लिए, ध्वस्त ट्रेड यूनियन एकता की पुनः-स्थापना के लिए संयुक्त संघर्ष चलाना चाहिए।

लाल ट्रेड यूनियनों तथा मजदूर यूनियनों के लाल इन्टरनेशनल को सभी रुझानों की ट्रेड यूनियनों का संयुक्त संघर्ष शुरू करने तथा वर्ग संघर्ष और ट्रेड यूनियन जनवाद के आधार पर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर ट्रेड यूनियन आन्दोलन में एकता कायम करने के प्रयास में कम्युनिस्ट पार्टियों का पूरा-पूरा समर्थन मिलना चाहिए।

(४) फासिस्ट-विरोधी आन्दोलन के अलग-अलग क्षेत्रों में कम्युनिस्टों के कर्तव्य

१. कांग्रेस फासिज्म के खिलाफ लगातार विचारधारात्मक संघर्ष चलाने की आवश्यकता की ओर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट करती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि फासिस्ट विचारधारा का प्रमुख, सबसे खतरनाक रूप

अंधराष्ट्रवाद है, आम जनता के सामने यह बात स्पष्ट की जानी चाहिए कि पूंजीपति वर्ग स्वयं अपनी जनता को उत्पीड़ित और शोषित करने तथा अन्य जनगण को लूटने और गुलाम बनाने की अपनी कुत्सित वर्ग-नीति को अमल में लाने के लिए राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने का बहाना करता है। उसे यह बात दिखायी जानी चाहिए कि मजदूर वर्ग ही, जो हर प्रकार की दासता और राष्ट्रीय उत्पीड़न के खिलाफ लड़ता है, जनता की राष्ट्रीय स्वतंत्रता और आर्थिक स्वाधीनता का एकमात्र सच्चा हामी है। कम्युनिस्टों को जनता के इतिहास के फासिस्टों द्वारा मिथ्याकरण के खिलाफ हर तरह लड़ना चाहिए तथा मेहनतकश जन समुदाय को स्वयं अपने जनगण के अतीत की ऐतिहासिक दृष्टि से सही ढंग से, लेनिन और स्तालिन की सच्ची मूल भावना के अनुरूप, जानकारी देने की हर तरह कोशिश करनी चाहिए जिससे उनके वर्तमान संघर्ष को अतीत की क्रान्तिकारी परंपराओं से संबद्ध किया जा सके। कांग्रेस राष्ट्रीय स्वाधीनता और जनता के व्यापक समुदाय की राष्ट्रीय भावनाओं के सवाल पर तिरस्कार का रुख अपनाने के खिलाफ आगाह करती है, ऐसा रुख जो फासिज्म के लिए अपने अंधराष्ट्रवादी अभियान को विकसित करना (सार, चेकोस्लोवाकिया के जर्मन इलाके, आदि) ज्यादा आसान बना देता है, तथा इस बात पर जोर देती है कि लेनिनवादी-स्तालिनवादी नीति को सही और ठोस रूप से लागू किया जाय।

कम्युनिस्ट सिद्धान्ततः हर प्रकार के पूंजीवादी राष्ट्रवाद के कट्टर दुश्मन हैं, मगर वे राष्ट्रीय निषेधवाद के प्रति, स्वयं अपने जनगण की नियति के प्रति, गैरसरोकार के रुख के समर्थक कतई नहीं हैं।

२. कम्युनिस्टों को उन सभी फासिस्ट जन संगठनों में अवश्य घुसना चाहिए जिन्हें किसी देश विशेष में कानूनी अस्तित्व का एकाधिकार प्राप्त हो, तथा उनमें काम करने के छोटे से छोटे कानूनी या अर्ध-कानूनी अवसर का उपयोग करना चाहिए ताकि इन संगठनों में जन साधारण के हितों को फासिज्म की नीति के बरखिलाफ पेश किया जा सके तथा फासिज्म के जन-आधार पर कुठाराघात किया जा सके। मेहनतकशों की फौरी आवश्यकताओं के गिर्द नाराजगी व्यक्त करने के अत्यन्त प्रारंभिक आन्दोलनों से शुरू करके कम्युनिस्टों को उत्तरोत्तर व्यापक जन समुदाय को, खास तौर पर उन मजदूरों को आन्दोलन में लाने के लिए लचीली कार्यनीतियां अपनानी चाहिए जो वर्ग चेतना के अभाववश अभी भी फासिस्टों का अनुसरण करते हों। जैसे-जैसे आन्दोलन का विस्तार और गहराई बढ़ती जाय, वैसे-वैसे संघर्ष के नारों को बदलते जाना चाहिए और साथ-साथ उसी जन समुदाय की मदद से फासिस्ट

पूंजीवादी तानाशाही को चकनाचूर कर देने की तैयारी करनी चाहिए जो फासिस्ट संगठनों में मौजूद है।

३. बेरोजगारों के हितों और मांगों की पुरजोर ढंग से और अनवरत हिमायत करते हुए, उन्हें रोजगार के लिए, उचित राहत, बीमे आदि के लिए लड़ने को संगठित करते और उनका नेतृत्व करते हुए कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे बेरोजगारों को संयुक्त मोर्चा आन्दोलन में लायें तथा उनके बीच से फासिज्म का प्रभाव समाप्त करने के लिए हर साधन इस्तेमाल करें। साथ ही यह आवश्यक है कि बेरोजगारों की विभिन्न कोटियों (कुशल और अकुशल मजदूरों, संगठित और असंगठित, पुरुषों और स्त्रियों, नौजवानों, आदि) के विशिष्ट हितों पर पूरी मुस्तैदी से ध्यान रखा जाय।

४. कांग्रेस पूंजीवादी देशों की समस्त कम्युनिस्ट पार्टियों का ध्यान फासिज्म के खिलाफ संघर्ष में नौजवानों की असाधारण भूमिका की ओर जोर देकर आकृष्ट करती है। फासिज्म मुख्यतः नौजवानों के बीच से ही अपने प्रहारक दस्तों की भर्ती करता है। मेहनतकश नौजवानों के बीच सामूहिक कार्य के महत्व को किसी भी किस्म से घटा कर आंकने की प्रवृत्ति के खिलाफ लड़ते हुए तथा युवा कम्युनिस्ट लीग संगठनों के अलग-थलगपन को दूर करने के लिए कारगर कदम उठाते हुए कम्युनिस्ट पार्टियों को चाहिए कि वे व्यापकतम संयुक्त मोर्चे के आधार पर, ट्रेड यूनियनों, सहकारी समितियों आदि के नौजवान संगठनों समेत, सभी गैर-फासिस्ट नौजवान संगठनों को एकजुट करने में मदद करें। इस काम में फासिज्म के खिलाफ संघर्ष के, नौजवानों को जिस अभूतपूर्व तरीके से हर अधिकार से वंचित किया जा रहा है उसके खिलाफ संघर्ष के, नौजवानों के सैन्यीकरण के खिलाफ संघर्ष के तथा युवा पीढ़ी के आर्थिक और सांस्कृतिक हितों के लिए संघर्ष के विविध प्रकार के समान संगठनों का निर्माण भी शामिल है। वर्ग संघर्ष के मंच पर कम्युनिस्ट और समाजवादी युवा लीगों का फासिस्ट-विरोधी संगठन निर्मित करने के कर्तव्य को सामने लाया जाना चाहिए।

युवा कम्युनिस्ट लीग के विकास और सुदृढ़ीकरण में कम्युनिस्ट पार्टियों को हर सहायता देनी चाहिए।

५. लाखों मेहनतकश महिलाओं को, प्रथमतः महिला मजदूरों और मेहनतकश किसान महिलाओं को, चाहे उनके राजनीतिक और धार्मिक विचार जो भी हों, संयुक्त जन मोर्चे में लाने की आत्यन्तिक आवश्यकता का तकाजा यह है कि मेहनतकश महिलाओं की मांगों और हितों के लिए संघर्ष के गिर्द—खास तौर पर ऊंचे जीवन-निर्वाह-व्यय के खिलाफ, महिलाओं की स्थिति में असमानता और उनकी फासिस्ट गुलामी के विरुद्ध, सामूहिक बर्खास्तगियों के खिलाफ,

"समान कार्य के लिए समान वेतन" के सिद्धान्त के आधार पर उच्चतर वेतन के लिए, तथा युद्ध के खतरे के खिलाफ—संघर्ष के गिर्द उनके जन आन्दोलन को विकसित करने के उद्देश्य से कम्युनिस्टों को अपना कार्यकलाप तेज करना चाहिए। क्रान्तिकारी सामाजिक-जनवादी और प्रगतिशील महिला संगठनों के बीच संपर्क कायम करने और उनकी संयुक्त कारंवाई शुरू करने के लिए हर देश में और अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर विविधतम संगठनात्मक रूपों का लचीला उपयोग किया जाना चाहिए, तथा राय और आलोचना की आजादी की गारंटी करते हुए जहां कहीं जरूरी हो जाय वहां महिलाओं के अलग संगठन बनाने में नहीं हिचकना चाहिए।

६. सहकारी संगठनों को सर्वहारा के संयुक्त मोर्चे और फासिस्ट-विरोधी जन मोर्चे की कतारों में लाने के लिए कम्युनिस्टों को संघर्ष चलाना चाहिए।

अपने सदस्यों के फौरी हितों के लिए सहकारी समितियों के संघर्ष में, खास तौर पर ऊंची कीमतों के खिलाफ, ऋणों के लिए, दस्युतापूर्ण शुल्कों और नये करों के लागू किये जाने के खिलाफ, सहकारी समितियों के कार्यकलाप पर थोपी गयी पाबंदियों और फासिस्टों द्वारा उनके विध्वंस आदि के खिलाफ लड़ाई में कम्युनिस्टों को अधिक से अधिक सक्रियता से सहायता प्रदान करनी चाहिए।

७. कम्युनिस्टों को फासिस्ट टोलियों के हमलों के खिलाफ फासिस्ट-विरोधी जन रक्षा दल स्थापित करने में पहल करनी चाहिए तथा इन दलों की भर्ती संयुक्त मोर्चा आन्दोलन के विश्वसनीय, जांचे-परखे तत्वों से की जानी चाहिए।

(५) औपनिवेशिक देशों में साम्राज्यवाद-विरोधी जन मोर्चा

औपनिवेशिक और अर्ध-औपनिवेशिक देशों में कम्युनिस्टों के सामने सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य है एक साम्राज्यवाद-विरोधी जन मोर्चे की स्थापना के लिए कार्य करना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह जरूरी है कि बढ़ते हुए साम्राज्यवादी शोषण के खिलाफ, क्रूरतापूर्ण गुलामी के खिलाफ, साम्राज्यवादियों को खदेड़ भगाने के लिए, देश को आजाद करने के लिए, राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन में व्यापकतम जन समुदाय को लाया जाय; राष्ट्रीय-सुधारवादियों के नेतृत्व में चलने वाले जन साम्राज्यवाद-विरोधी आन्दोलनों में सक्रिय रूप में भाग लिया जाय तथा एक निश्चित साम्राज्यवाद-विरोधी मंच के आधार पर राष्ट्रीय क्रान्तिकारी और राष्ट्रीय सुधारवादी संगठनों के साथ संयुक्त कारंवाई चलाने का प्रयत्न किया जाय।

चीन में सोवियत आन्दोलन का विस्तार करने और लाल सेना की जुझारू शक्ति को सुदृढ़ करने के कार्य को संपूर्ण देश में जन साम्राज्यवाद-विरोधी

आन्दोलन का विकास करने के कार्य के साथ समन्वित किया जाना चाहिए। यह आन्दोलन गुलाम बनाने वाले साम्राज्यवादियों के खिलाफ, सर्वप्रथम जापानी साम्राज्यवादियों और उनके चीनी खिदमतगारों के खिलाफ, सशस्त्र जनता के राष्ट्रीय-क्रान्तिकारी संघर्ष के नारे के अन्तर्गत चलाया जाना चाहिए। अपनी मुक्ति के संघर्ष में समस्त चीनी जनता के लिए इन सोवियतों को एकजुटता-केन्द्र बन जाना चाहिए।

साम्राज्यवादी देशों के सर्वहारा को, स्वयं अपनी मुक्ति के संघर्ष के हित में, साम्राज्यवादी लुटेरों के खिलाफ औपनिवेशिक और अर्ध-औपनिवेशिक जन-गण के मुक्ति संघर्ष को भरपूर सहायता देनी चाहिए।

(६) कम्युनिस्ट पार्टियों का सुदृढ़ीकरण तथा मजदूर वर्ग की राजनीतिक एकता के लिए संघर्ष

कांग्रेस विशेष आग्रह के साथ इस बात पर जोर देती है कि **स्वयं कम्युनिस्ट पार्टियों का और अधिक सर्वतोमुखी सुदृढ़ीकरण** करके, उनकी पहल को विकसित करके, मार्क्सवादी-लेनिनवादी सिद्धान्तों पर आधारित नीति को अमल में लाकर, तथा ऐसी सही लचीली कार्यनीतियों का प्रयोग करके ही जो ठोस स्थिति तथा वर्ग शक्तियों की कतारबंदी को ध्यान में रखती हों, फासिज्म के खिलाफ, पूंजीवाद के खिलाफ संयुक्त संघर्ष में मेहनतकशों के व्यापकतम समुदाय की लामबंदी सुनिश्चित की जा सकती है।

संयुक्त मोर्चे को सचमुच अस्तित्व में लाने के लिए कम्युनिस्टों को स्वयं अपनी पांतों से उस आत्मतुष्ट संकीर्णतावाद को दूर करना होगा जो हमारे जमाने में कई मामलों में कम्युनिस्ट आन्दोलन का "बचकाना मर्ज" नहीं रह गया है, बल्कि एक भीतर पैठी व्याधि बन गया है। जनता में क्रान्तिकारिता के संचार की मात्रा को अतिरंजित करके, यह भ्रम पैदा करके कि फासिज्म का मार्ग पहले ही अवरुद्ध किया जा चुका है जबकि फासिस्ट आन्दोलन अभी भी बढ़ता जा रहा है, यह संकीर्णतावाद दरअसल फासिज्म के मामले में निष्क्रियता को प्रोत्साहित करता है। व्यवहार में इसने सुधारवादी ट्रेड यूनियनों और फासिस्ट जन संगठनों में काम करने से इनकार करके, तथा हर विशेष देश की ठोस स्थिति के विशेष पहलुओं को ध्यान में रखे बगैर सभी देशों के लिए घिसी-पिटी कार्यनीतियां और नारे अपना करके, जनता को नेतृत्व देने की पद्धति के स्थान पर एक संकुचित पार्टी दल को नेतृत्व देने की पद्धति की स्थापना कर दी, जन नीति का स्थान अमूर्त प्रचार और वामपंथी कठमुल्लापन को दे दिया। इस संकीर्णतावाद ने बहुत बड़ी सीमा तक कम्युनिस्ट पार्टियों के विकास को अवरुद्ध कर दिया, वास्तविक जन नीति को अमल

में लाना दुष्कर बना दिया, तथा इन पार्टियों द्वारा क्रान्तिकारी आन्दोलन को शक्तिशाली बनाने में वर्ग शत्रु की कठिनाइयों के उपयोग में विघ्न खड़े किये और सर्वहारा के व्यापक समुदाय को कम्युनिस्ट पार्टियों के पक्ष में लाने के ध्येय में विघ्न डाला।

संकीर्णतावाद के—जोकि मौजूदा क्षण में कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा वास्तविक जन बोल्शेविक नीति अपनाये जाने में सबसे गंभीर बाधा है—सभी अवशेषों को निर्मूल करने के संघर्ष को पूरे जोर-शोर से चलाते हुए, कम्युनिस्टों को दक्षिणपंथी अवसरवाद के खतरे से सतर्क रहने में अपनी चौकसी बढ़ानी चाहिए तथा इस बात को ध्यान में रखते हुए कि जैसे-जैसे संयुक्त मोर्चा कार्यनीतियों का व्यापक रूप से प्रयोग किया जायेगा, वैसे-वैसे दक्षिणपंथी खतरा बढ़ता जायेगा, इसकी सारी प्रत्यक्ष अभिव्यक्तियों के खिलाफ दृढ़ता के साथ संघर्ष चलाना चाहिए। संयुक्त मोर्चे की, मजदूर वर्ग की कार्रवाई की एकता की, स्थापना के लिए संघर्ष से इस बात की आवश्यकता सामने आती है कि सामाजिक-जनवादी मजदूरों में वस्तुगत सबकों के आधार पर इस बात के प्रति दृढ़ विश्वास पैदा किया जाय कि कम्युनिस्ट नीति सही है और सुधारवादी नीति गलत है, तथा हर कम्युनिस्ट पार्टी पर यह जिम्मेदारी आ जाती है कि वह कम्युनिज्म और सुधारवाद के बीच सिद्धान्तों के अन्तर को नजरअंदाज करने की हर प्रवृत्ति के खिलाफ, पूंजीपति वर्ग के साथ वर्ग सहयोग की विचारधारा और व्यवहार के रूप में सामाजिक-जनवाद की आलोचना में कमजोरी के खिलाफ, इस भ्रम के खिलाफ कि शांतिपूर्ण कानूनी तरीकों से समाजवाद लाना सम्भव है, स्वयंक्रियता या स्वयंस्फूर्तता पर—चाहे वह फासिज्म के समाप्त होने के बारे में हो या संयुक्त मोर्चे को साकार रूप देने के बारे में—निर्भरता के खिलाफ, पार्टी की भूमिका को घटा कर रखने के खिलाफ तथा निर्णायक कार्रवाई के क्षण में लेशमात्र ढुलमुलपन के खिलाफ निर्मम संघर्ष चलाये।

यह मानते हुए कि सर्वहारा के वर्ग संघर्ष और सर्वहारा क्रान्ति की सफलता के हितों को देखते हुए यह अनिवार्य है कि हर देश में मजदूर वर्ग की एक ही जन राजनीतिक पार्टी हो, कांग्रेस कम्युनिस्ट पार्टियों का यह कर्तव्य निर्धारित करती है कि वे मजदूरों की इस बढ़ती हुई आकांक्षा का सहारा लेते हुए कि सामाजिक-जनवादी पार्टियां या अलग-अलग संगठन कम्युनिस्ट पार्टियों के साथ ऐक्यबद्ध हों, इस एकता की स्थापना में पहल करें। साथ ही, बिना चूके मजदूरों को यह बात समझायी जानी चाहिए कि ऐसी एकता कुछ खास परिस्थितियों में ही सम्भव हैं : पूंजीपति वर्ग से पूर्ण स्वतंत्रता तथा सामाजिक-जनवाद और पूंजीपति वर्ग के बीच गठबंधन के पूरी तरह टूट जाने की परिस्थितियों में; ऐसी परिस्थितियों में कि पहले कार्रवाई की एकता कायम की

जाय, पूंजीपति वर्ग के शासन को क्रान्तिकारी ढंग से उखाड़ फेंकने और सोवियतों के रूप में सर्वहारा का आधिनायकत्व स्थापित करने की आवश्यकता को स्वीकार कर लिया जाय, साम्राज्यवादी युद्ध में स्वयं अपने पूंजीपति वर्ग के समर्थन को अस्वीकृत कर दिया जाय, तथा पार्टी का गठन जनवादी केन्द्रीयता के आधार पर किया जाय, जो संकल्प और कार्रवाई की एकता की गारंटी करती है तथा रूसी बोल्शेविकों के अनुभव की कसौटी पर खरी उतरी है।

इसके साथ ही "वामपंथी" सामाजिक-जनवादी लफ्फाज कम्युनिस्ट आन्दोलन के खिलाफ निर्दिष्ट नयी समाजवादी पार्टियों और नये "इन्टर-नेशनल" के निर्माण के लिए सामाजिक-जनवादी मजदूरों के मोहभंग का इस्तेमाल करने और इस प्रकार मजदूर वर्ग में फूट की खाई गहरी करने की जो कोशिश कर रहे हैं, उसके खिलाफ दृढ़ता के साथ कार्रवाई करनी जरूरी है।

इस बात को मद्देनजर रखते हुए कि सर्वहारा की राजनीतिक एकता कायम करने के लिए कार्रवाई की एकता एक फौरी आवश्यकता और सबसे अचूक रास्ता है, कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल के सभी हिस्सों के नाम पर घोषणा करती है कि वे पूंजी के हमले के खिलाफ, फ़ासिज्म के खिलाफ और साम्राज्यवादी खतरे के खिलाफ मजदूर वर्ग की कार्रवाई की एकता की स्थापना के लिए द्वितीय इन्टरनेशनल की तत्संबद्ध पार्टियों के साथ फौरन समझौता वार्ता आरम्भ करने के लिए तैयार हैं, और इसी तरह घोषणा करती है कि कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल इस लक्ष्य के लिए द्वितीय इन्टरनेशनल के साथ समझौता वार्ता आरम्भ करने के लिए तैयार है।

(७) सोवियत सत्ता के लिए

फासिज्म से पूंजीवादी जनवादी आजादियों तथा मेहनतकशों की उप-लब्धियों की रक्षा करने के संघर्ष में, फासिस्ट तानाशाही को उखाड़ फेंकने के संघर्ष में क्रान्तिकारी सर्वहारा अपनी शक्तियों को सन्नद्ध करता है, अपने मित्रों के साथ अपने जुझारू संपर्कों को सुदृढ़ करता है तथा मेहनतकशों के सच्चे जनवाद—सोवियत सत्ता— के लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में संघर्ष को निर्दिष्ट करता है।

सोवियतों का देश और सुदृढ़ हो रहा है, विश्व के सर्वहारा उसके गिर्द गोलबंद हो रहे हैं, सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में जबर्दस्त वृद्धि हो रही है, सामाजिक-जनवादी मजदूरों तथा सुधारवादी

ट्रेड यूनियनों में संगठित मजदूरों में क्रान्तिकारी वर्ग संघर्ष की दिशा में आ रहा है, फासिज्म के खिलाफ जन प्रतिरोध बढ़ रहा है तथा उपनिवे क्रान्तिकारी आन्दोलन में वृद्धि हो रही है, द्वितीय इन्टरनेशनल का पतः रहा है तथा कम्युनिस्ट इन्टरनेशनल बढ़ रहा है, और ये सभी विश्व स वादी क्रान्ति के विकास में तेजी ला रहे हैं और लाते रहेंगे।

पूंजीवाद के आंतरिक और बाह्य अन्तर्विरोधों के उग्र होने के फलर पूंजीवादी जगत जबर्दस्त टकरावों के युग में प्रवेश कर रहा है।

क्रान्तिकारी विकास के इस संदर्भ की दिशा में रास्ता बनाते हुए क निस्ट इन्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस, कम्युनिस्ट पार्टियों का आह्वान क है कि वे अधिक से अधिक राजनीतिक क्रियाशीलता और साहस परिचय दें तथा मजदूर वर्ग की कार्रवाई की एकता कायम करने के अथक संघर्ष चलायें। सर्वहारा क्रान्ति के दूसरे दौर के आगामी महान संग्र के लिए मेहनतकशों की तैयारी में मजदूर वर्ग के संयुक्त मोर्चे की स्थाप एक निर्णायक कड़ी है। सर्वहारा को एक सामूहिक राजनीतिक वाहिनी संयुक्त करने से ही फासिज्म और पूंजी की सत्ता के खिलाफ, सर्वहारा अधिनायकत्व और सोवियतों की सत्ता की स्थापना के लिए, संघर्ष में सर्वहा की विजय सुनिश्चित होगी।

"क्रान्ति में विजय खुद-ब-खुद कभी हासिल नहीं होती। इसके लि तैयारी करनी होती है और उसे जीतना होता है। और, एक शक्तिशा सर्वहारा क्रान्तिकारी पार्टी ही विजय के लिए तैयारी कर सकती है और विज हासिल कर सकती है।" (स्तालिन)